अक्टूबर 2020

मूल्य : बीस रुपए

माहेश्वरी महिला

वर्ष : 20, अंक : 2

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी संगठन का मासिक मुखपत्र

सार्थक सोच संपूर्ण विकास

जन जन तक संदेश पहुंचाएं, स्वदेशी बनाएं स्वदेशी अपनाए,
आत्मनिर्भर भारत बनाएं, विश्वगुरु जग में कहलाएं

जयहिंद

जयभारत

राष्ट्रीय उत्तरांचल उपाध्यक्ष
सौ. किरण लड्ढा, दिल्ली

द्वादश सत्र की अपार सफलता हेतु अनंत मंगलकामनाएं

नवरात्रि पर्व की सभी को
बहुत-बहुत शुभकामनाएं एवं बधाई

राष्ट्रीय उत्तरांचल सहसचिव
सौ. शशि नेवर (वाराणसी)

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रशान्त

जैविक

माहेश्वरी महिला

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी
महिला संगठन का मुखपत्र

* प्रकाशक *

माहेश्वरी महिला समिति

263, जीवाजी नगर, थाटीपुर, ग्वालियर
फोन : 0751-2340068, मो.: 9399409665
फैक्स : 0751-2232402
ईमेल : maheshwarimahilagwl@gmail.com

अध्यक्ष
श्रीमती मनोरमा लड्ढा

उपाध्यक्ष
श्रीमती विमलादेवी साबू

सचिव
श्रीमती लता लाहोटी

संयुक्त सचिव
श्रीमती शोभा सादानी

सदस्य
श्रीमती पद्मा देवी मूंदड़ा
श्रीमती गीतादेवी मूंदड़ा
श्रीमती रत्नीदेवी काबरा
श्रीमती कल्पना गगरानी
डॉ. श्रीमती तारा माहेश्वरी
श्रीमती निर्मला जेठा

संपादक मण्डल
संरक्षक-सौ.लता लाहोटी
संपादक-श्रीमती सुशीला काबरा
सह-संपादक-प्रो. कल्पना गगरानी
अध्यक्ष-सौ. सरला काबरा
उपाध्यक्ष-सौ. कांता गगरानी
सचिव-सौ. उर्मिला झंवर
सदस्य-सौ. विनिता लाहोटी

संपादकीय

प्रिय बहनों,

नवरात्रि पर्व की बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं

या देवी सर्वभूतेषु, मातृरुपेण संस्थिताः।
नमः तस्यैः नमः तस्यै, नमो नमः।।

नवरात्रि पर्व मातृभक्ति की देवी रूप में आराधना कर भक्ति शक्ति, ऊर्जा व उत्साहवर्धन के लिए मनाया जाता है इसलिए नौ दिन में देवी की विभिन्न शक्तियों को विभिन्न रूप में सम्मान दिया जाता है। इन विभिन्न रूपों के माध्यम से देवी हमें नारी शक्ति के विभिन्न गुणों को अपनाकर स्वयं को और सशक्त करने का संदेश देती है। ये 9 रूप किस प्रकार संदेश देते हैं-

■ **शैलपुत्री** – पर्वतराज हिमालय की पुत्री शिला जैसी दृढ़ता का प्रतीक दृढ़संकल्प का संदेश देती है।

■ **ब्रह्मचारिणी**-ब्रह्माजी ज्ञान के भंडार और सृष्टि के निर्माता हैं, उनकी पुत्री परिवार का संचालन व पालन करने वाली क्षमता का रूप।

■ **चंद्रघंटा**-ज्ञान, विनय व शीलता और सौम्यता का प्रतीक है चंद्रमा। अतः क्रोध को शांति करने वाली, संकट से बचाने वाली।

■ **कुष्माण्डा**-ब्रह्माण्ड व शरीर दोनों के त्रिविध ताप का भय दूर करने वाली, संसार की समस्याओं का निवारण करने वाली।

■ **स्कन्दमाता**-ज्ञान की प्राप्ति इनकी आराधना से मूढ़ भी ज्ञानी हो जाता है, कालिदास ने इनकी कृपा से रघुवंश महाकाव्य 'मेघदूत' की रचना की।

■ **कात्यायिनी**-इनकी साधना से शिक्षण व शोध कार्य किए जाते हैं, नवचेतना व शक्ति का रूप है।

■ **कालरात्रि**-काल से रक्षा करने वाली, अंधकारमय स्थितियों का भय का नाश कर ज्ञान का प्रकाश देने वाली, तेज से चमकने वाली।

■ **महागौरी**-तपस्या अर्थात् घोर साधना कर शिव की अर्द्धांगिनी बनी। तपस्यी से गौरवर्ण भी प्राप्ति किया। सतत् प्रयास का संदेश देती है।

■ **सिद्धिदात्री**–सिद्धि प्रदान करने वाली, अर्थात् आपकी साधना से कृपा होते ही कठिनतम कार्य शीघ्रता से सम्पन्न हो जाते हैं।

इस प्रकार नवरात्रि में इन नौ शक्तियों से हम ऊर्जावान हो जाते हैं और वर्तमान समय में नारी का सभी क्षेत्रों में सशक्त होना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि भावी पीढ़ी को हर दृष्टि से सशक्त याने शिक्षित, स्वस्थ व सुसंस्कारी बनाने की जवाबदारी मातृशक्ति पर ही है। महिलाओं ने गृह से लेकर गगन (अंतरिक्ष) तक, शिक्षा से लेकर रक्षा तक (सेना में), आध्यात्मिक से लेकर तकनीकी तंत्र तक, साहित्यिक, राजनीति के साथ प्रशासनिक, व्यवसाय, नौकरी से लेकर उद्योग जगत में, समाजसेवा से लेकर खेलकूद के मैदान तक हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाते हुए परचम फहरा रही है। परिवार का केन्द्र बिंदु तो प्रारंभ से ही बस अपनी ममता क्षमता, समता, दया, करुणा के गुण के साथ हर परिस्थिति में थोड़ा धैर्य, सृजन, सामंजस्य व सहयोग के गुणों का भी पालन करें, तो जरूर एक ही रूप में नौ रूप दिखाई देंगे व पारिवारिक व्यवस्था सुचारू चलेगी। परन्तु इस पूजनीय देवी नारी की सुरक्षा का दायित्व पुरुष समाज पर भी है।

इन्हीं भावनाओं के साथ युवा पीढ़ी को इन गुणों से सुसज्जित करना, मातृशक्ति का दायित्व है और नवरात्रि का महत्व है। कोरोना महामारी ने महिलाओं का हर क्षेत्र में हर परिस्थिति में, हर वातावरण में, परिवार, समाज व राष्ट्र हर स्तर पर, समयानुकूल श्रेष्ठ प्रबंधन भी दर्शा दिया है। ब्रह्मा द्वारा रचित संसार की श्रेष्ठ कृति के रूप में अपनी प्रतिभा, कला, योग्यता का समुचित प्रदर्शन भी कर रही है। बस जरूरत है नारीत्व के गुणों का भी ध्यान रखें एवं भावी पीढ़ी को सुसंस्कारी बनाए, साथ ही समाज में होने वाली गलत दुर्घटनाओं से बचाए।

सुशीला काबरा
संपादक

हर वक्त एक संदेश : कोरोना काल भी गुजर जाएगा

किसी राजा का एक मंत्री था। मंत्री बहुत बुद्धिमान था, इसलिए राजा हर समस्या के समाधान के लिए उसी की ओर देखता था। मंत्री हर बार तो अपनी अक्लमंदी से उसे संतुष्ट कर देता, लेकिन एक बार राजा ने कुछ ऐसी इच्छा जता दी कि मंत्री को पसीने आ गए। राजा ने उसे एक हफ्ते का समय दिया था। दो ही दिन बाकी थे। मंत्री की हताशा बढ़ती ही जा रही थी। राजा की इच्छा पूरी न होने पर वह नाराज भले ही न होता, पर इससे मंत्री की छवि पर बट्टा लग सकता था। लेकिन इच्छा भी ऐसी थी कि शहर भर के तमाम बुद्धिमानों, संत–महात्माओं से मुलाकात के बावजूद उसे कोई उपाय नहीं मिल पाया था। इसी बेचैनी में मंत्री अपने महल में टहल रहा था। पिता के मुख पर चिंता की लकीरें देख खेल रहे उसके पुत्र ने इसका कारण पूछा। वह 12–13 साल का बालक था। पिता ने पहले तो उसे टालना चाहा, लेकिन जब उसने जिद पकड़ ली तो फिर बताना ही पड़ा। मंत्री ने बताया कि राजा ने उसे सोने का कंगन बनवाकर उस पर एक खास संदेश लिखवाने के लिए कहा है। राजा चाहता है कि संदेश ऐसा हो, जिसे पढ़कर अच्छे समय में वह खुशी के मारे पागल ही न हो जाए और आगा–पीछा सोचे बगैर कुछ कर न बैठे। इसी तरह बुरे समय में वह दुःख के कारण इतना हताश न हो जाए कि कुछ करना ही छोड़ दे। मंत्री ने बताया कि कोई भी ऐसी नहीं मिली है, अच्छी और बुरी हर परिस्थिति में सचेत रखे। पुत्र ने कहा–'बस इतनी सी बात। आप उस कंगन पर यह वाक्य खुदवा लीजिए–यह भी गुजर जाएगा। वास्तव में समय को गुजर जाना है। इसलिए न तो खुशी से पागल हो जाएं और न गम आए तो बिल्कुल हताश हो जाएं।

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन

राष्ट्रीय अध्यक्ष
सौ. आशा माहेश्वरी
कोटा
*
महामंत्री
सौ. मंजू बांगड
कानपुर
*
कोषाध्यक्ष
सौ. ज्योति राठी
रायपुर
*
संगठन मंत्री
सौ. शैला कलंत्री
येवला
*
निवर्तमान अध्यक्ष
सौ. कल्पना गगरानी
मुम्बई
*
उपाध्यक्ष
सौ. किरण लड्ढा, दिल्ली
सौ. ममता मोदानी, भीलवाड़ा
सौ. मंजूकोठारी, कोलकाता
सौ. मंगल मर्दा, वापी
सौ. कलावती जाजू, हैदराबाद
*
संयुक्त मंत्री
सौ. शशि नेवर, वाराणसी
सौ. सविता पटवारी, जयपुर
सौ. गिरिजा सारडा, नेपाल
सौ. उषा करवा, अमरावती
सौ. पुष्पा तोषनीवाल, पुणे
*
कार्यालय मंत्री
सौ. मधु बाहेती कोटा

संपादकीय

आध्यात्मिक चिंतन में अग्रणीय है भारतवर्ष की प्रत्येक प्राचीन परंपरा और रीति–रिवाज। हर पर्व पीछे कोई न कोई आध्यात्मिक ओर नीति पूर्ण गूढ़ अर्थ छुपा है। भारतवर्ष अनेक पर्वों का अनूठा बगीचा है ,जहां हर दिन एक पर्व पुष्प की तरह अपनी अनूठी खुशबू फैलाता हुआ वातावरण को सुरभित और सुगंधित करता है ।खुशनुमा वातावरण के मध्य मानव अपनी शारीरिक मानसिक व आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करने में स्वयं को सक्षम बना लेता है साथ ही प्रत्येक पर्व हमारे व्यक्तिगत पारिवारिक सामाजिक राष्ट्रीय सांस्कृतिक आर्थिक पहलुओं को भी प्रभावित करता है। ऐसा ही पर्व है जो नारी शक्ति को परीलक्षित करता है वह है–''नवरात्रि पर्व''।

नव दुर्गा पूजन नारी की सकारात्मक शक्ति व दुर्गा –लक्ष्मी –सरस्वती का सामूहिक स्वरूप है ,जो महिला सशक्तिकरण का प्रतीक है , कन्या कि पूजा का पर्व है ,कन्या पूजन इसका महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि महिला का प्रथम सात्विक स्वरूप ही कन्या होती है। किंतु कैसी विडंबना है एक तरफ उत्सव के माहौल में गाजे–बाजे से गरबा गीत संगीत से देवी की मूर्ति का पूजन करते हैं वहीं दूसरी तरफ हम शक्ति स्वरूपा सजीव साकार रूप कन्या की हत्या करने में तनिक भी संकोच नहीं करते अपनी ही कोख में पलने वाली मूक जीव शक्ति स्वरूपा कन्या की सहजता से स्वेच्छा से हत्या कर देते हैं। ऐसा करते वक्त कहां सो जाती है हमारी भक्ति और भावना ।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता

एक कन्या यदि मां की छत्रछाया में उसकी कोख में सुरक्षित नहीं तो अन्यत्र उसकी सुरक्षा की कामना कहां की जा सकती है ,कौन उसकी रखवाली कर सकता है। पालनहार ही मरणहार बन जाए तो।

भारतवर्ष की संस्कृति में जहां अनजाने में हुई जीव हत्या के लिए प्रायश्चित का विधान है, वहां कन्या हत्या के पाप की जड़ कितनी गहरी होगी। कौन जाने? प्रकृति अपना संतुलन सदैव ही बना कर रखती है किंतु मानवीय हस्तक्षेप प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ रहा है मानव ,विज्ञान का उपयोग प्रकृति के रक्षण के बदले भक्षण में ज्यादा कर रहा है। हमारे समाज में तो जनगणना के जो आंकड़े हैं वे बहुत ही शर्मनाक है, यह एक गंभीर मुद्दा है जिसे हर वर्ग के साथ ही युवा वर्ग को अधिक गंभीरता से चिंतन ,मनन ,व अमल करना है। नव दुर्गा पूजन पर्व पर हम सब संकल्प ले की हम न भ्रूण हत्या करेंगे और ना ही करने देंगे इसी में मानवता का सामाजिक व्यवस्था का वह राष्ट्र का भला है ।

श्रीमती मनोरमा लड्ढा

अपनी बात

दुनियादारी/समझदारी

प्रिय बहनों, मैं कल्पना गगडानी 'दुनियादारी/समझदारी' में आपका साथ पाकर कृतज्ञ हूँ। जिंदगी, जिंदगी की खुशी, जिंदगी की सफलता दो चीजों के समुचित मिश्रण पर निर्भर करती है। एक है दुनियादारी अर्थात् दुनिया में क्या चल रहा है। बदलाव किस गति से और क्या हो रहा है। बदलाव तो प्रकृति का शाश्वत नियम है, उसे आना ही है और वो आयेगा ही। समझदारी इसमें है कि हम इस बदलाव को समझें, परखें। इसमें क्या होना है, क्या छोड़ना है, कैसे लेना है, कैसे छोड़ना है, इसकी तरकीब निकालें। आपकी समझ भारी होगी तो बदलाव आने के पहले आप बदलाव की आहट सुन लेंगे और भारी समझ इसका सहज, सफल, सुंदर हल पहले ही निकाल लेंगी और आपको घबराने, झुंझलाने, तड़पाने से बचा लेंगी। आइये इसका सामूहिक प्रयास करें।

अधिक मास की अधिक समझ

साथियों, अधिक मास चल रहा है। हिंदू पंचांग में ये हर तीसरे साल आता है। सौर गणना में हमारे पंचांग में प्रतिवर्ष दस दिन तिथियों के टूटने-जुड़ने से बढ़ जाते हैं इसलिए तीन साल में एक माह अधिक हो जाता है। जिससे पुरुषोत्तम मास भी कहते हैं। हमारी संस्कृति में हर मास, हर तिथि की अपनी एक विशिष्टता है, कार्य है. अतः यह जो एक अधिक मास बना है इसमें भी कुछ विशेष होना ही चाहिए। अतः शास्त्रों में इसमें विशिष्ट पूजा-पाठ, दान-धर्म, उपवास-व्रत का प्रयोजन बताया गया। ये तत्कालीन दुनिया की दुनियादारी थी और उस वर्ण व्यवस्था की समझदारी थी कि ज्ञान लेने और देने

का कार्य ब्राह्मण वर्ग पूरी निष्ठा, तत्परता और ईमानदारी से करे। इसलिए उसके और उसके परिवार के भरण-पोषण की जवाबदारी समाज के अन्य वर्ग को उठा लेनी चाहिये। कितनी सुंदर व्यवस्था थी, इसीलिए तो भविष्य की चिंता न होने के कारण ब्राह्मणों ने शिक्षा को सहज शिष्यों को प्रदान किया। वह नहीं हुआ जो जिसके अभाव में शिक्षा का गंदा व्यापार चल रहा है।

परन्तु अब परम्पराएं बदल गई हैं। ब्राह्मण वर्ग ने अपनी जीविकोपार्जन के सक्षम साधन ढूंढ लिये हैं। समाज का कुछ वर्ग अब बेरोजगार है, लाचार है। किसी की उम्र अब काम करने लायक नहीं रही तो किसी के पास साधनों का अभाव है। सामाजिकता का अर्थ है समाजजन अन्य समाजजनों की सुख-सुविधाओं, आवश्यकताों का ध्यान रखे और आवश्यकता पड़ने पर उसे पूरा करें।

अधिक मास में हर दिन दान का प्रयोजन है। अधिक मास में ब्राह्मण जिमाने का प्रयोजन है। प्रयोजन अवश्य पूरा करें, परन्तु प्राप्य बदलें। हर दिन दान दे, अनाज दान, कोविड काल में बेरोजगार हुए मजदूरों को दें। दान दक्षिणा से इन लोगों को कोई नया रोजगार खोलने में मदद करें।

दुनियादारी समझें और अपनी भारी समझ से उसकी नई राह बने।

-प्रा. कल्पना गगडानी, डोंबीवली

जो स्त्री का अपमान करता है, वो माँ का अपमान करता है, जो माँ का अपमान करता है, वो भगवान का अपमान करता है, और जो भगवान का अपमान करता है, उसका पतन निश्चित है।

*

जहां नारियों का आदर होता है, वहां देवता निवास करते हैं।

पत्रिका का इतिहास

बात उन दिनों की है , जब मेरी जननी संस्था अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन का प्रादुर्भाव 1976 में नागपुर महासभा की बैठक में किया गया। पर असल में इस संस्था में गति आई सन 1982 से । संस्था चल तो रही थी पर प्रचार के अभाव के चलते

संगठन का प्रसार नही हो पारहा था ।ओर यह संगठन के लिए सोचनीय प्रश्न था ।

इसीलिए जब 1994 में मेरी होने वाली संपादीकाजी श्री मती मनोरामजी लढ़ा अ. भा .माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष बनी तब उनकी कार्यकारिणी की बैठक में एक अहम निर्णय लिया गया कि अगर संस्था की पूरे देश में साख ओर पहचान बनानी है तो, कुछ ऐसा करना होगा कि हमारी गतिविधियां से समाज में जागृति आए ओर संगठन के कार्यो के प्रचार से कस्बो ओर गाँव तक महिला मंडल का निर्माण हो सके ओर जागृति आ सके। तब इस बैठक में मुझे प्रकाशित करने की योजना बनाई गई, योजना तो बनी ,पर प्रश्न खड़ा हुआ कि मैं कहां प्रकाशित होंगी और कौन मुझे संपादित करेगा, क्योंकि मुझे पालना पोसना ओर सुसज्जित करना कोई आसान काम नहीं था, इसीलिए सब सम्मानीय बहनो ने किसी न किसी कारण से मुझे संपादित करने मैं अपनी असमर्थता जताई, तब दृढ़ निश्चयी ,मेहनती तत्कालीन अध्यक्ष महोदया श्रीमती मनोरमा जी लढ़ा ने दृढ़ निश्चय के साथ मुझे प्रकाशित व संपादित करने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली। स्व. श्रीमती शकुंतला जी चांडक ने प्रकाशक बनने की स्वीकृति दी , ओर इन दोनों महिलाओं की कर्मठता ओर मेहनत के परिणामस्वरूप ही मेरा जन्म हुआ, मेरा पहला अंक नारी जागृति के रूप में सबके सम्मुख आया। मैं बाल्य काल मे बहुत ही दुबली पतली, काली सफेद ओर त्रैमासिक पत्रिका थी, क्योकि शुरुआती दौर में अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्ष और मेरी संपादक व प्रकाशिका के सामने मुझे प्रकाशित करने के नए अनुभव के साथ ही आर्थिक समस्या भी खड़ी थी। पर उस समय समाज के भामाशाह श्रीमती रुकमणी देवी टावरी , श्री मान पुरुषोत्तम जी माहेश्वरी , ओर महासभा के सम्मानीय सदस्यों द्वारा आर्थिक सहयोग और आश्वासन पाकर मेरे पंख निकलने लगे। पर अभी तो मेरी बाल्यावस्था ही थी इसलिए मुझे पालने ओर पोषित करने के लिए कुछ और भी समस्यायें खड़ी होरही थी।

जैसे नारी जागृति के नाम से मेरा रजिस्ट्रेशन नहीं हो पा रहा था इसलिए पोस्टल खर्चे बहुत ज्यादा हो रहे थे, अतः मेरी मितव्ययी प्रकाशक श्रीमती शकुंतला जी चांडक हर अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की मीटिंग में मुझे प्यार से अपने साथ ले जाती थी और सदस्य बहनों को हेंड टू हेंड देती थी । जब मेरा रजिस्ट्रेशन माहेश्वरी महिला के नाम से हुआ और मेरी पहुंच प्रदेश जिला और स्थानीय माहेश्वरी महिला संगठनों की सदस्य बहनों तक मेरी पहुँच सरलता से बन तो गई , पर पोस्ट ऑफिस की गड़बड़ी के कारण बहनो की शिकायतें तो निरंतर ही बनी रही। इन शिकायतों को दूर करने की निरंतर कोशिश जारी है।

मुझे समय पर प्रकाशित करना, ओर फिक्स डेट पर पोस्ट ऑफिक में पहुचाना जैसी छोटी छोटी दिखने वाली बाते हैं जो बड़ी ही अहम बाते है जिससे मेरी संपादिका जी मेरे हर अंक के प्रकाशन के समय रु ब रु होती रहती है। खेर....

अब तो धीरे धीरे मेरे आर्थिक स्त्रोत भी बढ़ गए हैं। मुझे आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए प्रत्येक अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की सदस्य बहनों से कुछ राशि मेरे लिए विज्ञापन के रूप में ली जाने लगी । इस कारण मेरा रूप भी निखरने लगा , पहले मेरे कवर पेज रंगीन हुए फिर धीरे धीरे अंदर से भी मुझे रंगीन बनाया गया। मेरा रूपरंग मेरी जननी के नेतृत्व में निखरता जारहा था।

निर्वतमान सर्वोच्च न्यायाधीश श्रीमान रमेशजी लाहोटी ने मेरी जननी को सलाह दी कि मुझमे प्रकाशित

होने वाले टिप्स ,संस्कार, स्वास्थ ,नेतिक शिक्षा , नुस्खे आदि

संग्रहणीय विषयवस्तु को मध्य में अलग रंग से संग्रहणीय के नाम से प्रकाशित करने से मेरी उपयोगिता बढ़ जाएगी । मैं दिल की गहराइयों से न्यायाधीश मोहदय को धन्यवाद प्रेषित करती हूं कि उनकी सलाह के कारण मेरे लाल पृष्ठ संग्रहणीय हो गये ।

मेरी विश्वसनीयता बढ़ती जा रही थी मैं, त्रैमासिक से द्वे मासिक पत्रिका बन गई हूँ। मैं 25 साल की होने वाली हूं मेरा रूप निखर गया है, मेरा सुंदर रूप कई दिलो पर अपनी छाप छोड़ने लगा है ।

पर मैं बड़ी दुखी हूं, क्योकि मेरा यौवन मेरा दुश्मन बन रहा है मेरी रोम रोम को पोषित करने वाली, मेरी रग रग को संचालित करने वाली मेरी जननी, मेरी संपादीका जी ने मुझे पराए घर जाने के लिए मजबूर कर दिया है , अब तो मुझे मेरा घर आंगन छोड़कर नई जगह जाकर अपनी जगह बनानी होगी ।

सुना है मेरी नई संपादीका जी अपने नाम के अनुसार ही बड़ी सुशील है,प्यार करने वाली है । मैं अपने स्वभावनुसार एडजस्ट तो हो जाऊंगी पर अपनी जननी मनोरमा की मनोरम छवि को तो शायद ही भूल पाऊंगी । मैं हमेशा उनके प्यार व स्नेह की आकांक्षी रहूंगी।

आपकी अपनी

महिला पत्रिका

(विनीता लाहोटी)

कोरोना काल में सेवाभाव की मिसाल हैं प्रोफेसर डॉक्टर रचना चौधरी (माहेश्वरी)

मेरठ मेडिकल कॉलेज की गायनी विभाग की प्रोफेसर डॉक्टर रचना चौधरी ने कोरोना काल में सेवाभाव को नई ताकत दी हैं । मार्च से लेकर अब तक वे लगातार सक्रीय हैं।कोविड वार्ड में होने वाले प्रसव से लेकर कोरोना योद्धाओं की ड्यूटी लगाने और फ्लू ओपीडी तक की रूपरेखा डॉक्टर रचना तय करती हैं। 1992 बैच की झांसी की एमबीबीएस (गोल्ड मेडलिस्ट) 2002 में ग्वालियर मेडिकल कॉलेज से एमएस (गायनी) और डीएनबी एम्स (नई दिल्ली) करने वाली डॉ. रचना ने 2006 में मेरठ मेडिकल कॉलेज जॉइन किया। एक साल पहले उन्हें सीएमएस (चीफ मेडिकल सुपरिटेंडेंट) बनाया गया। कोरोना संक्रमण गर्भवतियो के सुरक्षित प्रसव में उन्होने बड़ी भूमिका निभाई । डॉक्टरों का मनोबल बनाकर रखा । खुद भी डॉक्टर की भूमिका में रही । उनकी निगरानी में कोविड वार्ड में पहली सिजेरियन डिलीवरी हुई , जिसमें जुड़वा बच्चे पैदा हुए। कोरोना के मरीजों पे नज़र रखने के साथ ही डॉ. रचना छात्रो का ऑनलाइन एग्जाम ले रही हैं । साथ ही डीएनबी कोर्स का प्रश्न–पत्र भी बनाकर भेजती हैं । उनकी सक्रियता और योग्यता को देखते हुए कोविड की कोर कमेटी में अहम ओहदा दिया गया हैं । डॉ . रचना चौधरी सरवाड़ ज़िला अजमेर निवासी श्री विजय करण चौधरी (काबरा)और श्रीमती सुशीला चौधरी की सुपुत्री हैं और डॉ. अमित माहेश्वरी की पत्नी हैं जो एमडी (मेडिसिन) के डॉक्टर हैं और मेरठ में ही प्राइवेट प्रैक्टिस करते हैं । इनके दो बच्चे 16 / 12 वर्ष के हैं । सास डॉ. शशि माहेश्वरी एमएस (गायनी) एवम ससुर डॉ. एन . के . माहेश्वरी एम एस (एनेस्थेसिया) निवासी डिबाई वर्तमान में मेरठ में रहते हैं ।

अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन की द्वितीय कार्यसमिति बैठक ध्यान योग का उद्घाटन सत्र भव्यता पूर्वक संपन्न किया गया राम मंदिर निर्माण आंदोलन में सम्मिलित बहनों का शौर्य स्मृति सम्मान

3 दिवसीय द्वितीय राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक ध्यान योग का उद्घाटन 12 सितंबर को समाज के सम्मानीय अतिथियों की उपस्थिति में जूम सभागार में किया गया। सभा का शुभारंभ राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती मंजू बांगड़ द्वारा किया गया स्वागत उद्बोधन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती आशा जी माहेश्वरी द्वारा दिया गया तत्पश्चात महामंत्री श्रीमती मंजू बांगड़ ने संगठन द्वारा अब तक किए गए सामाजिक कार्यों का, सेवा गतिविधियों का लेखा–जोखा अपनी विशेष काव्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया जिसकी सराहना सभी उपस्थित श्रेष्ठ एवं विशिष्ट अतिथियों ने की। आपने बताया कि द्वादश सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा' कर्मण्ए वाधिकारस्ते' आह्वान को साकार करते हुए 10 समितियों के माध्यम से कार्य किए जा रहे हैं और मात्र 6 माह में संगठन ने दो स्वर्णिम कीर्तिमान बनाकर इतिहास रच दिया। संरक्षिका मां रतनी देवी काबरा ने राष्ट्रीय संगठन के द्वादश सत्र के मंजुल आशा के कुशल नेतृत्व के प्रति हर्ष जताते हुए और भविष्य की सुखद कल्पना के साथ आशीर्वचन कहे। विशिष्ट अतिथि पश्चिमांचल उपाध्यक्ष श्री राजेश कृष्ण बिरला ने महिला संगठन द्वारा इस को रोना पेंडेमिक के दौरान भी महिला संगठन द्वारा संपन्न कई गुणात्मक रचनात्मक कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम के विशेष भाग में श्री राम मंदिर निर्माण आंदोलन में सम्मिलित 8 माहेश्वरी बहनों का शौर्य स्मृति सम्मान भेंट कर अभिनंदन किया एवं उनके योगदान को स्मरण कर नमन किया जो निम्नलिखित हैः–श्रीमती अंजना माहे१वरी तथा श्रीमती रेखा माहे१वरी (सिकंदराराऊ), श्रीमती सोमवती जा खेटिया, श्रीमती सुधा जाजू, श्रीमती कुसुम देवी, श्रीमती गणेश काकानी (कासगंज), श्रीमती बीना माहेश्वरी (हाथरस) एवं श्रीमती रेखा महेश्वरी (मीरापुर) जो पश्चिमी उत्तर प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन की वर्तमान में उपाध्यक्ष है।

कार्यक्रम के प्रमुख वक्ता श्री रमाकांत जी बालवी चेयरमैनहिमाचल प्रदेश ने संगठन के कार्यों की सराहना करते हुए प्रशासनिक सेवाओं में कैरियर बनाने के लिए मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महासभा के सभापति जी श्री श्याम जी सोनी ने राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा जी तथा महामंत्री मंजू बांगड़ को तथा समस्त पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि लॉकडाउन के पीरियड में भी बहनों ने समय का उपयोग करते हुए टेक्नोलॉजी के माध्यम से निरंतर अपनी सामाजिक कार्यक्रमों को जारी रखा तथा सामूहिक प्रयासों से समाज के सभी वर्गों को सहायता पहुंचाई। कोरोना के संक्रमण काल में माहेश्वरी परिवारों में आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है इसकी विस्तृत जानकारी दी तथा महिला संगठन द्वारा दिए गए पीएम केयर्स फंड में 1100000 रुपए की राशि तथा 500000 से आपदा फंड बनाया जो कोरोना से प्रभावित परिवारों की सहायता के उद्देश्य से बनाया गया है की विशेष रूप से सराहना की। 9 महीने के अल्पकाल में ही दसों समितियों के माध्यम से महिला संगठन द्वारा किए गए कार्य एवं दो गोल्डन रिकॉर्ड बनाने की विशेष रुप से बधाई दी। महिला संगठन की समितियों बाल विकास एवं किशोरी विकास साहित्य समिति पर्व एवं सांस्कृतिक समिति महिला अधिकार समिति तथा पारिवारिक समरसता एवं स्वास्थ्य समिति द्वारा संयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार भी ए सर्टिफिकेट के रूप में वितरित किए गएश्र अध्यक्ष आशा जी माहेश्वरी ने संपूर्ण कार्यक्रम की विवेचना की एवं महामंत्री श्रीमती मंजू बांगड़ ने संपूर्ण कार्यक्रम का सुंदर संचालन करते हुए आभार ज्ञापित कियाश्र इस बैठक में सभी पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सभी आंचलिक तथा राष्ट्रीय पदाधिकारी गण राष्ट्रीय समिति प्रभारी सह प्रभारी सभी कार्यसमिति सदस्य 27 प्रदेशों के अध्यक्ष व सचिव तथा गणमान्य बहनों ने अपनी सहभागिता से सफल बनाया।

राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की त्रिदिवसीय वर्चुअल ध्यान योग द्वितीय राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक की द्वितीय एवं तृतीय दिवस 13– 14 सितंबर 20 20 का कार्य वृत्तांत

12 सितंबर को आयोजित भव्य उद्घाटन सत्र के बाद 13 सितंबर को राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती मंजू बांगड़ ने सफलतापूर्वक संचालन करते हुए जूम सभागार में उपस्थित सभी सदस्यों का अभिवादन कर मीटिंग का शुभारंभ किया। भगवान महेश की पूजा वंदना के बाद दिवंगत स्वजनों को श्रद्धांजलि दी गई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती आशा महेश्वरी ने सभागार मे उपस्थित बहनों को संबोधित किया एवं महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की। उन्होंने बताया पीएम केयर्स फंड में बहनों के द्वारा मुक्त हस्त से दी गई सहायता राशि से राष्ट्रीय संगठन ने 1100000 रुपए पीएम केयर्स फंड में जमा करवाने के बाद 500000 का एक आपदा कोष बनाया जिसके माध्यम से हमारे समाज की बहने जिनको कोरोना पैन्डेमिक के कारण कोई आय का स्त्रोत नहीं रहा और जिन्होंने संगठन से आर्थिक सहायता की मांग की उनके लिए प्रदेश या जिला अध्यक्ष द्वारा जानकारी लेकर सहायता राशि देने के बारे में बताया जिसके अंतर्गत अब तक लगभग 10 बहनों को यह राशि दी जा चुकी है। कुछ बहनों को महिला सेवा ट्रस्ट के माध्यम से भी सहायता दिलवाई गई है। सबकी सहमति के अनुरूप लिए गए निर्णयानुसार भावी कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा ... इन विपरीत परिस्थितियों में

सभी कार्यक्रम डिजिटल प्लेटफॉर्म पर पर हो रहे हैं जो अत्यंत सुविधाजनक है। दिवाली के त्योहार को देखते हुए ,20 अक्टूबर से 20 नवंबर तक कोई भी कार्यक्रम आयोजित ना किए जाएं। 20 नवंबर से 20 दिसंबर तक सभी प्रदेश मीटिंगो का समय निर्धारित करें। 20 दिसंबर से 28 दिसंबर तक राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक का आयोजन होगा जिसमें सभी प्रदेश और सभी समितियां पीपीटी प्रेजेंटेशन करेंगे। आत्मनिर्भर योजना के अंतर्गत समाज की उद्यमी बहनों को प्लेटफार्म प्रदान करने हेतु जनवरी माह में राष्ट्रीय स्तर से ऑनलाइन उद्योग मेला लगाया जाएगा। सभी से निवेदन किया गया कि जिन बहनों के घर में कोई भी शुभ प्रसंग हो तो वह कृपया अपनी स्वेच्छा से आपदा कोष हेतु सहयोग राशि प्रदान करें ताकि वह कोष बढ़ता रहे और ज्यादा से ज्यादा जरूरतमंद बहनों की आर्थिक सहायता की जा सके। इस संदर्भ में जिन बहनों द्वारा सहायता दी गई उनको साधुवाद दिया ।विशेष रुप से राष्ट्रीय पूर्व अध्यक्ष आदरणीय विमला जी साबू द्वारा 51 हजार तथा पश्चिमांचल उपाध्यक्ष ममता जी मोदानी द्वारा 21000 रुपए ,किरण जी लड्ढा, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष लता जी

लाहोटी एवं शोभा जी सादानी द्वारा दिए गए सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती मंजू बांगड़ द्वारा भी विगत समय में किए गए कार्यक्रमों की जानकारी सचिव प्रतिवेदन के रूप में प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि कोविड-19 की आपात कालीन स्थितियों में भी हम सब मिलकर संगठन को गति प्रदान कर रहे हैं और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से एक नया इतिहास रच रहे हैं। जिन प्रदेशों द्वारा पीएम केयर्स फंड में राशि दी गई उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया तथा मध्य उत्तर प्रदेश के आतिथ्य में चित्रकूट में होने वाली कार्यसमिति बैठक जो परिस्थितियोंवश आयोजित ना की जा सकी, का रजिस्ट्रेशन राशि का ब्यौरा प्रदान किया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमती ज्योति जी राठी द्वारा भी इस सत्र के प्रारंभ से अब तक के आय-व्यय का संपूर्ण विवरण प्रस्तुत किया गया । बधाई कोष में दी जाने वाली राशि के प्रति बहनों का सहयोग व्यक्त करते हुए उसकी जानकारी दी तथा इस मीटिंग के दौरान सभी बहनों द्वारा खुशियों के अवसर पर दी गई बधाई राशि से कोष में 1,45,000 रुपए की वृद्धि हुई है के प्रति हर्ष व्यक्त किया।

राष्ट्रीय संगठन मंत्री शैलाजी कलंत्री ने भी संगठन विषयक जानकारी देते हुए कहा कि अब तक के 7 माह के कार्यकाल में सभी अंचलों में नए संगठन बने हैं जिसके लिए सभी प्रदेश अध्यक्ष बधाई के पात्र हैं विशेष रुप से उत्तरांचल तथा पश्चिमांचल में 7-7 नए संगठन बने हैं श्रइसकी सराहना करते हुए उन्होंने सभी नवीन संगठन के नवनियुक्त अध्यक्ष व सचिव के नामों की जानकारी दी।

राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्रीमती मधु जी बाहेती ने जिन प्रदेशों ने अभी तक सदस्यता फॉर्म भरकर नहीं भेजे हैं उसकी जानकारी दी। पूर्व अध्यक्ष लता जी लाहोटी ने सुझाव दिया कि इसकी जिम्मेदारी सभी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष को दी जाए और वे अपने-अपने अंचल के सभी प्रदेशों से फॉर्म शीघ्रता शीघ्र भरवा कर राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री को प्रेषित करें।

राष्ट्रीय स्थाई प्रकल्प के अंतर्गत महिला सेवा ट्रस्ट की अध्यक्ष आदरणीय रतनी मां कार्यवाहक अध्यक्ष गीता जी मूंदड़ा तथा सचिव ललिता जी मालपानी ने मार्च 2019 तक का लेखा जोखा बतायाश्र कुल कार्पस फंड 2,20,47178 है जिससे 66 लाभार्थी को लगभग 10 लाख से ऊपर का डोनेशन दिया गया है। ट्रस्ट की बैठकें नियमित हो रही हैं तथा प्रत्येक प्रदेश में एक ट्रस्टी बहन को ट्रस्ट प्रतिनिधि नियुक्त किया है ताकि वह अपने प्रदेश में संपूर्ण जानकारी से अवगत कराएं और ज्यादा से ज्यादा बहने ट्रस्ट के सदस्य बने इसका आह्वान किया गया।

महेश्वरी महिला पत्रिका की सदस्य संख्या बढ़ाने के बारे में पत्रिका संपादक श्रीमती सुशीला काबरा जी ने जानकारी दी। अध्यक्ष सरला जी काबरा के व्यक्तिगत प्रयासों से 400 के ऊपर नये सदस्य बने है जिसकी सभी ने सराहना की। प्रदेश अध्यक्ष तथा समिति प्रभारियों को पत्रिका हेतु रिपोर्ट भेजने का आग्रह किया।

कुछ समितियों द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जो इस प्रकार हैः-

बाल विकास एवं किशोरी विकास समिति की प्रभारी श्रीमती निर्मला जी मारू ने सृजन कार्यशाला ,ई संस्कार वाटिका तथा तेजोहम कार्यक्रम की सफलता की विवेचना करते हुए विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। गीता पाठ पठन पर गीता ज्ञान पर भी कार्यक्रम किए जा रहे हैं जिसमें सभी संगठन की बहने तथा किशोरिया बढ़-चढ़कर भाग ले रही हैं।

साहित्य समिति की सह प्रभारी डॉ अनुराधा जाजू ने साहित्य की विभिन्न विधाओं पर ली जाने वाली कार्यशाला एवं प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। केबीसी की तर्ज पर हर सीट हॉट सीट फन गेम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ जो हर 4 माह के अंतराल पर कराया जाएगा। समिति द्वारा महेश्वरी महिला लेखनी नाम से ब्लॉग का विमोचन किया गया ताकि समाज की रचनाकार बहने अपनी स्वरचित रचनाएं प्रकाशित करवा सकें।

कंप्यूटर नेटवर्किंग एंड एडवांस तकनीकी शिक्षा समिति की राष्ट्रीय प्रभारी श्रीमती उर्मिला कलंत्री ने बताया ऑनलाइन कार्यक्रमों का जूम ऐप पर प्रशिक्षित करने हेतु शुभारंभ हुआ तथा बहनों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु डिजिटल ज्ञान की तीन दिवसीय कार्यशाला बी स्मार्ट विद स्मार्टफोन संपूर्ण भारत वर्ष में प्रदेश स्तर पर आयोजित की जिससे लगभग 3000 से ऊपर बहने लाभान्वित हुई।

विवाह संबंध सहयोग समिति गठबंधन की राष्ट्रीय प्रभारी श्रीमती शर्मिला राठी ने कहा कि समिति द्वारा डवलप की गई गठबंधन ऐप का प्रशिक्षण सभी प्रदेशों में दिया गया। ग्रामीण क्षेत्र में वैवाहिक संबंध मैं होने वाली दिक्कतों को देखते हुए श्रीमती निर्मला जी बाहेती को ग्रामीण क्षेत्र का का प्रभारी बनाया। सभी प्रदेशों में ऑनलाइन परिचय सम्मेलन संपन्न हुए जिसमें विवाह योग्य युवक–युवतियों के वीडियो प्रसारित हुए तथा 31 संबंध भी तय करने में सफलता पाई।

व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति की राष्ट्रीय प्रभारी श्रीमती नम्रता बियानी ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि लॉकडाउन के दौरान 25 मई को आयोजित ऑनलाइन कर्म योग हमारा प्रयास प्रशिक्षण कार्यशाला में 27 प्रदेशों की 1000 महिलाओं को एक साथ प्रशिक्षण देकर स्वर्णिम कीर्तिमान बनाया। राष्ट्रीय व आंचलिक स्तर पर व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए गए जो प्रदेश स्तर पर भी आयोजित किए जा रहे हैं। समिति द्वारा कर्म पथ पुस्तिका का भी विमोचन किया गया है। इस अवसर पर उत्तरांचल की सह प्रभारी श्रीमती उर्वशी साबू ने इंटरनेट पर शिष्टाचार विषय पर बहुत ही ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक उद्बोधन दिया।

समापन सत्र की मुख्य अतिथि निवर्तमान अध्यक्ष श्रीमती कल्पना गगरानी ने वर्तमान में चल रहे सभी कार्यक्रमों की प्रशंसा करते हुए द्वादश सत्र के राष्ट्रीय नेतृत्व को बधाई दी। उन्होंने कहा समापन का अर्थ कार्य समाप्ति नहीं बल्कि अब और आगे बढ़ना है.. ध्यान योग की बहुत उत्कृष्ट विवेचना करते हुए उन्होंने कहा ध्यान के साथ कर्म जुड़ा हो ,ज्ञान हो ,दिशा हो, निरंतरता से प्रवृत्त हो, बहुआयामी हो, एकाग्रता हो तो सफलता व प्रगति निश्चित है जिसके लिए सभी बहनों को सदैव साधना करनी चाहिए।

अंत में राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा सभी का आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया गया तथा राष्ट्रगान के साथ सभा समाप्त हुई।

मंजू बागंड़

राष्ट्रीय महामंत्री

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन

कानपुर की श्रीमती मंजू बांगड़ 7 स्टार असिस्टेंट गवर्नर अवार्ड से सम्मानित

रोटेरियन श्रीमती मंजू बांगड़ को रोटरी डिस्ट्रिक्ट वर्चुअल अवार्ड फंक्शन में असिस्टेंट गवर्नर का दायित्व सफलतापूर्वक निभाने के लिए रोटरी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रोटेरियन किशोर कटरु द्वारा रोटरी सत्र 2019–20 हेतु 7 स्टार असिस्टेंट गवर्नर अवार्ड से सम्मानित किया गया। रोटेरियन मंजू बांगड़ रोटरी क्लब कानपुर विनायकश्री की चार्टर अध्यक्ष हैं। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़कर महिला व बाल कल्याणार्थ विशेष रूप से बच्चों की शिक्षा के लिए सेवा कार्यों को फलीभूत करती हैं। वर्तमान में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की राष्ट्रीय महामंत्री तथा इनरव्हील की पास्ट डिस्ट्रिक्ट चेयरमैन हैं एवं ऑल इंडिया वुमन्स कान्फ्रेंस कानपुर ब्राचं की सीनियर पेटर्न भी हैं।

नौ शक्ति का प्रतीक नवरात्रि–प्रेरणादायी पर्व

शक्ति का कोई निश्चित स्वरूप नहीं होता वह तो काल परिस्थितियों के अनुसार विविध रूपों में प्रकट होती है। विविध स्वरूपों को धारण करने वाली भगवती दुर्गा के अवतरण का मुख्य उद्देश्य समाज व राष्ट्र को अव्यवस्थित करने वाली आसुरी शक्तियों का दमन कर प्रजा के हृदय में शम, दम, दया, शुचिता, धैर्य, विद्या, क्षमा और अक्रोध रूप धर्म को धारण करना है।

एक संकल्प की याद दुर्गा पूजा–दुर्गा पुजाओं की कथा में हमारे जातीय इतिहास का वह सामूहिक मन बोलता है जो अंधकार के खिलाफ प्रकाश की, अन्याय के खिलाफ न्याय की, असुर राक्षस के खिलाफ देवता की लड़ाई सृष्टि के आरम्भ से ही लड़ता रहा है। यदि कहीं अन्याय है तो उसके खिलाफ युद्ध हो, यह युद्ध सभी मिलकर तब तक चलाएंगे जब तक अन्याय परास्त नहीं हो जाता, जल नहीं जाता, दुर्गा पूजा उसी संकल्प की याद है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और नवदुर्गा पूजा संयोग–दैत्यों से दुखी होकर चैत्र में भी 9 दिनों तक देवी की उपासना की थी, यह भी संयोग है कि दोनों का समापन श्रीराम के प्रसंगों से जुड़ा है। चैत्र के नवरात्रों की समाप्ति पर श्रीराम के जन्म के रूप में रामनवमी होती है जब शारदीय नवरात्र समाप्त होते हैं तो विजयोत्सव के रूप में विजय दशमी मनाई जाती है।

श्री दुर्गा परमात्मा की मायाशक्ति क्रियाशील रहती है तब सगुण कहलाती है और जब यह मायाशक्ति अपनी महाशक्ति में मिलती रहती है तब निर्गुण कहलाती है। महाशक्ति की शक्तियां, दया, क्षमा, निद्रा, स्तुति, क्षुधा, तृष्णा, तृप्ति, श्रद्धा, भक्ति, घृति, मति, पुष्टि, शांति, कांति आदि शक्तियां ही गोलोक में श्री राधा और साकेत में श्री सीता, क्षीरसागर में श्री लक्ष्मी, दक्ष कन्या सती, दुर्गति नाशिनी दुर्गा है। वे ही वाणी विद्या, सरस्वती, सावित्री, गायत्री है, दुर्गा दुर्गति नाशिनी है।

दस महाविद्याएं–देवी पुराम में वर्णित 10 महाविद्याओं का संबंध सती, शिवा, पार्वती से है। इन्हें ही नवदुर्गा, शक्ति, चामुंडा, विष्णुप्रया नमो से पुकारा जाता है। सती जिद करके अपने पिता के यहां हो रहे यज्ञ में शिव से अनुमति मांग रही थी। शिव ने रोका कि वहां उनका अपमान होगा, सती ने कहा या तो मैं आपका यज्ञ भाग लूंगी या यज्ञ नष्ट कर दूंगी और वे उग्र हो गईं। प्रचण्ड रूप देखकर शिव वहाँ से भागे, भागते हुए शिव को रोकने के लिए देवी ने दासों दिशाओं में अपना रूप प्रकट किया। काली, तारा, छिन्नमस्ता, षोडशी, भुवनेश्वरी, त्रिपुरवैभवी, घुमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमला यही 10 महाविद्याएं हैं और महाकाली इनमें से मुख्य है उन्हीं उग्र और सौम्य रूप को अन्य देवियां धारण करती हैं।

शक्तिपीठ – सती ने जब अपन पति का अपमान होते देखा तो वे यज्ञवेदी में कूद गईं। शिव ने नाराज होकर तांडव सुरू कर दिया। उन्हें शांत करने और साधकों की रक्षा के लिए ब्रह्मा, विष्णु ने सती के शरीर के टुकड़े करके विभिन्न दिशाओं में फेंक दिए। जहां सती के शरीर के भाग गिरे वही स्थान शक्तिपीठ या मंदिर के रूप में स्थापित हुए और 51 शक्तिपीठों की स्थापना हुई।

वैदिक ऋचा भी यही कहती है–मैं सभी देवी–देवताओं से संयुक्त महाशक्ति शालिनी हूं। देवी में निहित है आदर्श मां...

देवी का रूप प्रकृति की तरह सरल और रहस्यपूर्ण है, स्नेह से परिपूर्ण–जीवन, प्रसन्नता और खुशियां देने वाला (साथ ही विनाश तथा मृत्यु का सबक पढ़ने वाला भी) माँ ऐसा वटवृक्ष है जिसमें जीवन की हर बेला अपने हर रूप में फलती है। देवी को प्रकृति के रूप में भी जाना जाता है। धरती मां के रूप में वे भूमि है वे हिमालय पुत्री गंगा है। इन रूपों में वे धरती पर आकर मानव मेयर को दुःखों से मुक्त करती हैं, वे मनुष्य को पाप–दोष से निजात दिला कर ज्ञान देती हैं। हर रूप में दुर्गा मानव को जीवन के रहस्य समझाती है, वे मानव को अपनी पीड़ा से

सीखने की भी प्रेरणा देती है, वे आनंद के क्षण भंगुरता का पाठ भी सिखाती है।

शक्ति रूपेण संस्थिता–मां को भले ही हम कितने ह रूपं में लें, लेकिन सबका मर्म एक ही है, माँ है तो सृष्टि है, मां के बिना कुछ नहीं। मां दिव्य ज्योति है, दिव्यात्मा है, जीवन का आदार है, जीवन का मोल है। ब्रह्मा के मानस पुत्रों से जब सृष्टि का विस्तार नहीं हुआ तो मां ने गर्भ धारण कर सृष्टि को दिव्य और अलौकिक रत्न दिया।

पुरुष अपने आप में कुछ नहीं, नारी अपने आप में सब कुछ है यही शक्ति शास्त्र है. जो शक्ति देवताओं के पास नहीं वह नारी को प्राप्त है। नारी के पास अपना कुछ नहीं है, जो कुछ है वो विधाता और प्रकृति प्रदत्त है। देवताओं की शक्ति मिलकर ही दुर्गा का रूप लेती है यही दुर्गा सारी शक्तियों को समेट कर कुछ असुरों की संहारक बन जाती है।

यही शक्ति नारी में भी है, अपने पिता, पति, भाई का भी वह पालन करती है, लेकिन अपनी शक्ति से तीनों को अलौकित भी करती है। समाज कितना भी आधुनिक हो जाए, लाज और लज्जा के अर्थ बदल जाए, लेकिन शक्ति तो अनन्तः शक्ति है, नारी सुलभ गुणों का कोई कैसे त्याग कर सकता है? नवरात्रों की शक्ति इसा का नाम है।

आठ सिद्धियों (शक्तियां) 1. अणिमा, 2. गरिमा, 3. लघिमा, 4. महिमा, 5. प्राप्ति, 6. प्राकाम्य 7. ईशित्व 8. वशित्व। ये सब अनादि, अनंत व अखंड स्वरूपा माता दुर्गा के ही रूप (प्रति रूप) हैं।

दुर्गा देवी के 9 स्वरूप और उनके मर्म और उनसे मिलने वाली सीख

1. शैलपुत्री – देवी भगवती पार्वती का मंगल चरित्र शैल यानी पर्वत राज की पुत्री अर्थात् प्रकृति, पर्यावरण और हरियाली की शक्ति, देवी का यह चरित्र पर्यावरण का पथ पढ़ता है। शंकरजी की पत्नी ने अपने इस स्वरूप को पार्वती, उमा, कल्याणी, अपर्णा, अन्नपूर्णा, शाकम्भरी आदि रूपों में अभिव्यक्त किया है, इनका वाहन बैल है। शैलपुत्री से सीखे दृढ़ता, एक महिला को शैलपुत्री की तरह दृढ़ बनना होगा। अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए आगे आना होगा तब कोई आपके साथ अन्याय नहीं कर पाएगा।

2. ब्रह्माचारिणी – यह ब्रह्माजी की अधिष्ठात्री देवी है। देवी का यह स्वरूप ब्रह्म को सत्य और सनातन मानने का प्रतीक है। ब्रह्माजी ने सृष्टि के विस्तार के लिए इनका ध्यान किया। ब्रह्माजी की शक्ति होने के कारण इनको प्रसूत शक्ति प्राप्त है। इसी प्रसूता शक्ति ने देवताओं के अहम को चकनाचूर किया था।

ब्रह्मचारिणी–तपस्या का आचरण करने वाली ज्योतिर्मय स्वरूप, दाहिने हाथ में जप की माला, बाएं हाथ में कमंडल रहता है। इनकी उपासना से मनुष्य में तप, वैराग्य, सदाचार की वृद्धि होती है। अपर्णा भी इनका एक नाम है। ब्रह्मचारिणी से सीखें संघर्ष – तपस्या कैसी भी हो जीवन के लिए उपयोगी होती है। अगर आपको खुद पर विश्वास है तो संघर्ष में जीत आपकी ही होगी। संघर्ष मं जितने के बाद मिली खुशी का कोई सानी नहीं। अगर आप मिसाल बनना चाहती हैं तो संघर्ष करना होगा।

3. चंद्रघंटा – चंद्र और घंटा के प्रतीकों के साथ सुसज्जित रहने वाली माँ शंकरजी के साथ पूजी जाती है इनके घंटे की ध्वनि से दानव–दैत्य सब कांपते हैं। चंद्रमा शीतलता का प्रतीक है, घंटा नाद का प्रतीक है। जहां शीतलता है वहां शांति का नाद है। शंकरजी रुद्र अवतार हैं तो उनके साथ देवी शांति और शीतलता का प्रतीक है। कल्याण और कल्याणी एक साथ। इन हाथों में धनुष बाण, त्रिशूल, खड़ग हैं सवारी सिंह है। इनकी आराधना से मन में वीरता के साथ–साथ सौम्यता व विनम्रता का विकास होता है। चंद्रघंटा से

सीखें–वीरता का प्रतीक है देवी चंद्रघंटा। आज के दौर में महिलाओं के मन में अज्ञात भय समय रहता है. महिलाएं बिना भय के अपने हर काम पूरे करे, तभी वह जीवन में आगे बढ़ सकत हैं। उसे निर्भय बनकर मुश्किलों का खात्मा करना होगा।

4. कुष्मांडा–देवी कुष्मांडा को आदि शक्ति भी कहा गया है। कुष्मांडा अग्नि के समान है। जब सृष्टि नहीं थी, चारों ओर अंधेरा था तब कुष्मांडा ने ब्रह्माण्ड की रचना की। ब्रह्माण्ड की सभी वस्तुओं और प्राणियों में इन्हीं का तेज व्याप्त है. यह एक प्रकार से पेट की ज्वाला है यह ज्वाला हरेक जीव के पास है उसकी शांति के लिए वह नाना जतन करता है, पाप भी करता है तो पेट के लिए पुण्य भी करता है तो पेट के लिए। यहां देवी अपने दिव्य मंगलिके स्वरूप को तुष्टि, तृष्णा और तृप्ति के रूप में अभिव्यक्त करती है–देवी का यह रूप कमल और श्री लक्ष्मी का हो जाता है, वह विष्णु के साथ नारायणी हो जाती है।

कुष्मांडा से सीखे रचनात्मकता–जीवन में सफलता के लिए रचनात्मकता जरूरी है। रचनात्मकता से जीवन की मुश्किलों को कम किया जा सकता है और कार्यों को आसान बनाया जा सकता है।

5. स्कंदमाता – देवी का यह रूप विशुद्ध रूप से नारी शक्ति का प्रतीक है। नारी को प्रसूता शक्ति स्कंदमाता ने ही दी है। स्कन्द माता की पहली वह नारी शक्ति है जिन्होंने स्कन्दकुमार कार्तिकेय को जन्म देकर पूरी सृष्टि को संतान का अनमोल रत्न दिया। गणेशजी देवी भगवती के मानस पुत्र एवं गण थे। संतजन वह जो माता–पिता की सेवा करे और माता–पिता की सेवा करके ही गणेशजी अग्रणी देव हो गए। इनकी कृपा से ूढ़ भी ज्ञानी भी ज्ञानी हो जाता है। कहते हैं कि कवि कालिदास रघुवंशम महाकाव्य और मेघदूत इन्हीं की कृपा से रच सके। इन्हें चेतना का निर्माण करने वाली देवी कहा जाता है।

स्कंदमाता से सीखें–महिलाएं अपनी बुद्धि, ज्ञान और विवेक के बल पर तेजी से तरक्की कर रही है। चाहे पढ़ाई, लिखाई की बात हो या अच्छे केरियर की। महिलाओं ने हर क्षेत्र में खुद को बेहतर साबित कर दिखाया है. स्कन्द माता की कृपा हासिल कर जीवन को बेहतर बना सकती हैं। जरूरी नहीं कि किताबी ज्ञान पर ही निर्भर रहा जाए। आप अपनी मां या सास से अच्छी चीजें सीख सकती हैं और उन्हे अपने जीवन में लागू कर सकती हैं। इससे आपकी स्किल्स में इजाफा होगा और जीवन के हर क्षेत्र में फायदा मिलेगा।

6. कात्यायनी – कात्यायन ऋषि की काठी तपस्या की और कामना की देवी तुम मेरी पुत्र बन कर आओ। प्रसन्न होकर मां भगवती ने उनके घर पुत्री के रूप में जन्म लिया. इसलिए यह कात्यायनी कहा जाने लगा। बेटी का गोत्र पति के साथ चलता है। बचपन में भले ही उसकी पहचान पिता से होती हो, लेकिन स्थाई भाव पति का वोटर और कुल ही है। देवी के कात्यायनी चरित्र ने इस भ्रम को तोरा है। कात्यायनी का विशेष गुण शोध कार्य रहा है।

कात्यायनी से सीखें–किसी भी काम में महारथ हासिल करने के लिए जरूरी है कि उस काम या विषय में पूरा शोध किया जाए। अगर महिलाएं अपने जीवन में कुछ बड़ा कारण चाहती है तो उन्हें सोद को महत्व देना चाहिए। रिसर्च के बाद आत्मविश्वास पैदा होता है।

7. काल रात्रि – कालरात्रि अंधकारमय परिस्थितियों का विनाश करने वाली शक्ति है, यह काल से भी रक्षा करती है यह दुर्गा का बेहद शक्तिशाली रूप है। हर नारी पार्वती, लक्ष्मी और मां काली है। नारी में तीनों ही रूप हैं और गुण देखने को मिलते हैं. काली संहार

की प्रतीक है। अपार सक्ति की थाह है, वह अपने स्वभाव से घर बना भी देती है और घर उजाड़ भी देती है। घर का हरेक प्राणी थक जाए पर नारी कहां थकती है, उसको कोई ईश्वर ने सहनशीलता का अमोघ मंत्र दिया है।

कालरात्रि से सीखे अंधकार को खत्म करना– महिलाओं को अपनी अंधकार मय स्थितियों का नाश करने के लिए खुद ही पहल करनी होगी। यह याद रखना होगा कि जो खुद की मदद करता है, ईश्वर भी उनकी मदद करते हैं। कई बार महिलाएं परिवार के दूसरे सदस्यों पर जरूरत से ज्यादा निर्भर हो जाती हैं और परेशान होना पड़ता है यह स्थिति सुखदाई नहीं है। इसे बदलने की कोशिश करनी होगी, खुद को मजबूत बनाना होगा और अपने पैरों पर खड़ा होना होगा।

8. महागौरी – महागौरी ने भगवान शिव को प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या की थी। इसलिए उनका शरीर काला पड़ गया था। बाद में शिव ने गंगा जल से धोकर उन्हें गौर वर्ण कर दिया था और महागौरी इनका नाम पड़ा। दिव्य स्वरूप और अलौकिक गुणों से ओतप्रोत लज्जा, क्षमाशीलता, सम्मान, सेवा, शांत, मृदुला आदि धर्म के दस लक्षण जिनमें हो वह महागौरी है। इनकी पूरी मुद्रा बहुत शांत है।

महागौरी से सीखें–महिलाएं जीवन में खुश रहना चाहती हैं तो उन्हें जीवन में चल रहे उतार–चढ़ावों के दौरान शांत रहना होगा। महागौर की तरह शांत मुद्रा में रहकर काम करेंगी तो कोई तनाव नहीं होगा और परिवार में खुशियां आएंगी। शान्त राह कर खुद के बारे में विचार करे। अपने सपनों और खुश्शियों के बारे में विचार करे. जीवन में सब कुछ पाने की लालसा रखने की बजाए संतोष को प्राथमिकता दे। संतोष रहेगा तो जीवन में शांति रहेगी।

9. सिद्धिदात्री–सिद्धिदात्री की कृपा से ही शिव का आधा शरीर देवी का हुआ था, इसी कारण शिव को अर्द्धनारीश्वर कहा जाता है। इन्हं की कृपा से भगवान शिव ने तमाम सिद्धियां प्राप्त की थीं। सिद्धिदात्री सबकी इच्छाएं पूरी करती हैं। यह लक्ष्मीजी का चरित है, धन एवं धान्य की प्रतीक वह अलक्ष्मी भी है और लक्ष्मी भी। वह जिस हाथ आती है उसी हाथ चली भी जाती है, इसलिए नारायण के साथ पूजी जाने का विधान है। देवी का यह स्वरूप संदेश देता है कि प्रकृति और पुरुष, नर व नारी जीवन की गाड़ी के दो पहिये हैं।

सिद्धिदात्री से सीखे – महिलाओं को सिद्धिदात्री से सबको खुश रखने की कला सीखनी चाहिए। महिला होने के नाते उसकी भी दात्री की भूमिका होनी चाहिए, सबकी इच्छाएं पूरी करके खुद प्रसन्न रहना चाहिए. घर, परिवार, ऑफिस में हर महिला इस काम को आसानी से कर सकती है सबकी इच्छाएं पूरी करने व ख्याल रखने के साथ खुद का भी ख्याल रखें।

–मधु ललित बाहेती (राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री)

जहाँ एक और एक सफल व्यक्ति की पीछे एक महिला का हाथ होता है वहीं दूसरी और महिलाओं ने खुद को साबित करना न सिर्फ शुरू कर दिया है बल्कि देश विदेश में सफलता का परचम लहराना शुरू कर दिया है। एक स्त्री सारे रिश्तों को कितने अच्छे से संभालती हैं, चाहें वो एक माँ हों, बेटी हो, बहन हो या फिर पत्नी हों। महिलाओं ने हर रूप में अपनी शक्ति, काबिलियत और इच्छाशक्ति को साबित किया है, आज की महिलायें न सिर्फ पुरुषों से कंधें से कंधा मिलकर चल रहीं हैं बल्कि कुछ मायनों में आगे भी हैं।

जब है नारी में शक्ति सारी, तो फिर क्यों नारी को कहें बेचारी।

समितियों की रिपोर्ट

विवाह संबंध सहयोग समिति गठबंधन

विवाह संबंध सहयोग समिति गठबंधन ने ऑनलाइन प्रादेशिक परिचय सम्मेलन श्रृंखला का आयोजन किया, जिसका उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती आशा माहेश्वरी के कर कमलों से हुआ। उसके बाद लगातार 27 प्रदेशों में परिचय सम्मेलन हुआ। परिचय सम्मेलन में विवाह समिति की सह प्रभारी, संयोजिका व सहसंयोजिका बहनों के अथक प्रयास से प्रत्याशियों के 1150 वीडियो चले और कुल 4500 सदस्यों की उपस्थिति रही।

ऐप के प्रशिक्षण की 6 कार्यशाला के बाद अब समिति की बहनें ऐप का च्छे से प्रयोग कर अभिभावकों को ऐप के द्वारा मैचिंग बायोडाटा लगातार भेज रही है। अब तक ऐप से 4000 बायोडाटा अभिभावकों को भेजे जा चुके हैं। इस समिति के द्वारा अब तक 31 संबंध तय हो चुके हैं। परिचय सम्मेलन श्रृंखला में श्रीमती माहेश्वरी, श्रीमती मंजू बांगड़, श्रीमती कल्पना गगडानी, श्रीमती रतनी काबरा (मां), श्रीमती ज्योति राठी, श्रीमती शैला कलंत्री, श्रीमती लता लाहोटी, श्रीमती बिमला साबू, श्रीमती शोभा सादानी, श्रीमती सुशीला काबरा, श्रीमती मधु बाहेती, श्रीमती मंगल मर्दा, श्रीमती कलावती जाजू, श्रीमती ममता मोदानी, श्रीमती किरण लड्ढा, श्रीमती मंजू कोठारी, श्रीमती पुष्पा तोषनीवाल, श्रीमती सविता पटवारी, श्रीमती गिरिजा सारड़ा, ठीमती उषा करवा व श्रीमती सरला काबरा मुख्य अतिथि रहे। समिति के अन्तर्गत प्रादेशिक स्तर पर टॉक शो भी रखे गए जिसमें श्री रमेश मर्दा और श्री रमेश मर्दा और श्री रमेश परतानी एवं श्रीमती कौशल्या रमेश चंद्र लाहोटी ने विवाह में आ रही समस्या और उसके समाधानों पर प्रकाश डाला। इस समिति में गठबंधन ग्रामीण उप समिति भी बनाई गई, जिनका कार्य भार निर्मला बाहेती को दिया गया।

शशि नेवर, शर्मिला राठी

ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति

कोरोना महामारी में सभी प्रदेशों द्वारा गरीबों में भोजन, दवाई, सेनेटाइजर, मास्क आदि का वितरण, अस्पतालों में भी दवाइयां, पीपीई कीट, आइसोलेशन बेड आदि दिये गये।

कोरोना महामारी से बचने हेतु सावधानियां और सुरक्षा के उपाय के लिए बराबर सरकुलर एवं वीडियो द्वारा जन जागरण में जागरुकता लाने का प्रयास किया।

गीता, गाय, गंगा, गोविंद के महत्व पर प्रकाश डालते हुए पत्रक निकाले गये।

जल संरक्षण और जल बचाओ पर वीडियो द्वारा आह्वान किया गया।

समिति द्वारा जल संरक्षण और रेन वाटर हार्वेस्टिंग एवं रसोई बगिया कार्यशाला का आयोजन 17 प्रदेशों में किया गया।

पर्यावरण की सुरक्षा हेतु 15 अगस्त को सभी अंचलों के सदस्यों से आह्वान किया। पौधे लगाओ पर्यावरण बचाओ।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने हेतु राष्ट्रीय पदाधिकारी एवं पूर्व अध्यक्ष के साथ वीडियो द्वारा संदेश दिया गया।

कार्यसमिति बैठक में 5 जी के अन्तर्गत गाय, जल, गीता, ग्राम में सरकारी योजना, महिला को माहवारी के समय सुरक्षा हेतु नृत्य नाटिका द्वारा जन जागरण में जागरुकता लाने का प्रयास किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती आशा द्वारा ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति के अन्तर्गत जल संरक्षण पर शपथ दिलाई गई।

9 सितम्बर को ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति के अंतर्गत हुई मीटिंग में राह्वष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ ने ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति के अंतर्गत हुए कार्यक्रम के बारे में बताया। राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी ने 5 जी कार्यक्रम पर प्रकाश डाला और जल संरक्षण और जल बचाने के लिए सभी सदस्याओं को शपथ दिलवाई। मुख्य अतिथि गीता मूंदड़ा ने कहा कि सिर्फ कार्यक्रम लेने का कोई फायदा नहीं उद्देश्य होना अनिवार्य है। जहां सुविधाओं का अभाव है वहां ग्राम विकास होना चाहिए। मुख्य वक्ता कान्ता राठी ने विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी जो विकास के उद्देश्य को सफल कर सकती है।

नन्ही अवन्तिका द्वारा आज की समसमयाओं पर उठाए गएप्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश की। सभी अंचल की सहप्रभारी और मध्य उत्तरप्रदेस की सदस्याओं ने नृत्य नाटिका द्वारा समिति प्रमुख किरण लढ़ा द्वारा आत्म निर्भर भारत बनाने के लिए बहुत ही सुन्दर जानकारी दी गई। ग्राम विकास को सरकारी सुविधाओं की जानकारी हेतु प्रश्नोत्तरी कराई गई। आशाजी एवं मंजूजी ने कार्यक्रम की सराहना की सुन्दर प्रेरणा गीत से मीटिंग समाप्त हुई।

प्रेमा झंवर, समिति प्रभारी

महिला अधिकार उत्थान सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति

सखी की नई शाखा 'मेधा' का आज सबके समक्ष प्रस्तुतिकरण हुआ। मेधा ले कर आ रही है आप सबके सामने विभिन्न ऑनलाइन क्लासेस जिनमें से 3 का लांच आज कर रहे हैं।

1. डिजिटल मार्केटिंग हमारी बहनों के लिए महत्वपूर्ण मार्केटिंग की 6 घंटों की वर्कशॉप, जिसे 3 दिन में विभाजित किया गया है। मात्र 199 में हमारी बहनों के लिए रखी गई है। भारत सरकार द्वारा एक नई शिक्षा नीति का लांच किया गया है जिसके अनुसार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और कोडिंग को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। तो उन दोनों के भी कोर्सेस हम अपनी बेटियों के लिए लेकर आपके सामने उपस्थित हैं

1. Learn to Code
2. Python Coding
3. Coding design animation
c. Graphi designing
d. Mobile App devlopment

इनकी कीमत भी बहुत कम यानी 1999 में चारों में से कोई भी कोर्स के रूप में रहेगी।

3. Learn Artificial Intelligence

एक अत्यंत इंपोर्टेंट कोर्स जो 3 स्टेज में किया जा सकता है इसकी कीमत 2999 रहेगी।

महिला अधिकार उत्थान सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति के अंतर्गत 11 सितम्बर को राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेस्वरी एवं महामंत्री मंजू बांगड़ की सादर उपस्थिति में अपनी बात अपनों से कार्यक्रम जूम सभागार में 425 सदस्यों की उपस्थिति में प्रस्तुत किया गया। महामंत्री मंजूजी ने समिति को शुभकामनाएं देते हुए कार्यक्रम का शुबारंभ किया एवं समिति प्रभारी उषा मोहता ने स्वागत उद्बोधन दिया एवं राष्ट्रीय रिपोर्ट पढ़ी। पूर्व अध्यक्षा सुशीला काबरा के आशीर्वचनों के पश्चात समिति प्रमुख गिरिजा व्यास ने सूत्रधार के रूप में कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। एडवोकेट कोमलजी करवा ने सार्थक संवाद पर बहीत हु सुंदर वक्तव्य दिया। सह प्रभारी कंचन राठी, रश्मि बिन्नानी एवं प्रतिभा नथानी ने परिचर्चा अपनी बात अपनों से के तीनों पैनलिस्ट क्रमशः कोमल करवा, डॉ.

आकांक्षा माहेश्वरी एवं निवृत्तमान अध्यक्ष कल्पना गगरानी का परिचय दिया। दक्षिणांचल सह प्रभारी स्वाति काबरा एवं उत्तरांचल सह प्रभारी राजश्री मोहता ने मॉडरेटर के रूप में परिचर्चा को सुंदर रूप दिया। इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी उपलब्धियां थीं कि प्रभारी प्रमुख गिरिजा सारड़ा ने मेधा प्रोजेक्ट एवं प्रभारी उषा मोहता ने दादी नानी का पिटारा (बुजुर्ग महिलाओं के हुनर को समाज में प्रस्तुत करना) कार्यक्रम का अनावरण किया, जिसे राष्ट्रीय अध्यक्ष आशाजी ने कार्यक्रम समीक्षा में सराहा। समिति द्वारा संचालित फेसबुक पेज सखी की सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने सराहना की। समिति प्रभारी उषाजी ने आभार व्यक्त के पश्चात, महामंत्री मंजूजी ने बहुत ही सुंदर शब्दोंसे समिति के सभी सदस्यों के द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की और कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की।

श्रीमती गिरिजा सारड़ा, समिति प्रभारी प्रमुख

आध्यात्मिक एवं स्वाध्याय समिति

आध्यात्मिक एवं स्वाध्याय समिति के अंतर्गत ग्यारह लाख से ज्यादा हनुमान चालीसा और सुंदरकांड के पाठ हुए। 11 जून को कल्पनाजी ने सनातन धर्म की व्याख्या समझाई। मेरे हनुमान प्रतियोगिता, सूर्य नमस्कार, आयुर्वेद और जीवन नेचरोपैथी पर वर्कशाप हुआ। 5 से 9 जुलाई महाशिव पुराण कथा। 14 और 15 जुलाई को स्पीरीचुअल वर्कशाप श्वेता अग्रवाल द्वारा। कविताजी, सुनीता द्वारा सीक्रेट ऑफ हेल्थ एन हेप्पिनेस विषय पर चर्चा।

गणेश उत्सव निमित्त स्वाध्याय माला–गणपति अथर्वशीर्ष, ओंकार साधना, मेरा घर मेरा शिवालय, नवधा भक्ति। समापन अंजलि तापड़िया ने पसायदान निरूपण से किया। 15 सितम्बर को राधाकृष्ण महाराज के सानिध्य में समिति का कार्यक्रम हुआ। मुख्य अतिथि सौ. बिमलाजी साबू ने गीता के साथ जीवन कैसे जीना बताया एवं सौ. अंजलि तापड़िया ने पुरुषोत्तम मास का महत्व दर्शाया।

अरुणा लढ़ा, समिति प्रभारी

बाल संस्कार एवं किशोरी विकास समिति

तेजोहम् – अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के अन्तर्गत बाल एवं किशोरी विकास समिति एवं गीता परिवार के तत्वावधान में 2 सितंबर से 8 सितंबर 2020 ऑनलाइन कार्यकर्ता स्वाध्याय शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 2500 बहनों का पंजीयन हुआ। यह शिविर दो सत्र में चला। सुबह का सत्र एवं शाम का सत्र। इस सत्र में समिति की बहनों के अलावा संगठन की बहनें, राष्ट्रीय पदाधिकारी भी उपस्थित थीं। इस शिविर में बाल संस्कार के विविध कार्यों का परिचय दिया एवं नित्य स्पर्धा रखी गई।

विविध उपक्रम इस प्रकार रहे सुबह के सत्र में – ज्ञानेन्द्रियां विकसन, योग के 15 आसन, संस्कृत भाषा का परिचय, श्लोक, प्रेरणा, देशभक्ति गीत, सूर्य नमस्कार प्रज्ञा संवर्धन, हास्य योग से ऊर्जा संवर्धन।

शाम के दो विषय सत्र–पाथेय के पांच सूत्र बताए कि यह संस्कारों का कार्य के ये पांच स्तंभ हैं, पहला ईश्वर भक्ति का है, दूसरा भगवत गीता, तीसरा भारत माता, चौथा विज्ञान निष्ठा, पांचवां स्वामी विवेकानंदजी एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक विचारक के रूप में इस पर उद्बोधन।

कहानी के तंत्र मंत्र के द्वारा संस्कारों का बीजारोपण, संगठन का महत्व, नाट्य संस्कार, हस्तकला से नवसृजन का अनुभव, विद्यालयों में कार्य का विस्तार कैसे करें, प्रत्यक्षिक प्रबोधन, जिज्ञासां का समाधान, खेल खेल से संस्कार।

ऑनलाइन प्रतियोगिता भी इस प्रकार रही पाथेय–इस विषय में प्रस्तुत मुद्दों पर आधारित एक पाथेय प्रश्न–मंजूषा का आयोजन किया जाएगा। 2. योग सोपान–सत्र

में सिखाए गए या बताए गए किसी तीन योगासनों की पूर्ण स्थिति के फोटोग्राफ्स ग्रुप में भेजें। 3. नाट्य संस्कार– एक से डेढ़ मिनट का एकल अभिनय का वीडियो बनाएं अथवा संस्कार कार्य का महत्व इस विषय पर डेढ़ मिनट के भाषण का वीडियो अपने ग्रुप में भेजें।

कथाकथन–कहो कहानी स्पर्धा के अंतर्गत दो मिनट में एक कहानी कहें और उसका वीडियो ग्रुप पर भेजें।

5. प्रत्यक्षिकों द्वारा प्रबोधन–ऐसे नए प्रात्यक्षिक की कल्पना करें जिसके माध्यम से संस्कारप्रद विषय बच्चों के सामने रखे जा सकते हैं। दो मिनट में नए प्रात्यक्षिक की प्रस्तुति का वीडियो बनाकर ग्रुप पर भेजें। प्रात्यक्षिक का विषय पुराना हो सकता है, किंतु प्रत्यक्षिक नया होना चाहिए। गीता परिवार साहित्य में प्रकाशित प्रात्यक्षिक न हो।

6. संस्कृत संथा–स्तोत्र पठन स्पर्धा में बच्चों को सिखाये जा सकें ऐसे स्तोत्र (कम से कम 7 श्लोक) का एक से डेढ़ मिनट का वीडियो बनाकर ग्रुप में भेजें।

ये स्पर्धाएं विषय को अच्छे से समझने तथा संघ भावना को बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित की गई है।

हमारे संस्कार केन्द्रों के लिए अनेक नए विषय इन स्पर्धाओं से हमें मिल सकते हैं। अतः उस दृष्टि से भी लाभ उठाएं।

सबसे विशेष बात यह रही कि इस शिविर में परम पूज्य गोविंददेव गिरि महाराज, राम मंदिर अयोध्या न्यास के कोषाध्यक्ष है एवं गीता परिवार के प्रणेता, मार्गदर्शक एवं अध्यक्ष भी हैं। आप पधारे कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन हेतु आपके आशीर्वचन से।

श्रीमती निर्मला मारु, समिति प्रभारी

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति

सावन एवं भादो मास पर्व एवं त्योहार के मास माने जाते हैं। विषम परिस्थितियों में भी सभी प्रदेशों की बहनों द्वारा अपने–अपने प्रदेश में पर्व एवं सांस्कृतिक समिति के तहत सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। जिसके अन्तर्गत राह्रष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं समिति प्रमुख, राष्ट्रीय प्रभारी व उस अंचल की सह प्रभारी को भी आमंत्रित किया गया।

कार्यक्रमों के दौरान हर प्रदेश का अपनी अलग सोच के साथ सुंदर कार्यक्रमों की प्रस्तुति देखने को मिली पता चला कि बहनों में कितना टैलेंट है इसमें जहां मनोरंजन था वहां कार्यक्रमों के तहत सीख ली ती। अलग–अलग प्रदेशों में हमारे पर्व एवं त्योहार को कुछ–कुछ भिन्नता के साथ मनाया जाता है यह भी देखने का अवसर मिला।

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति के तहत सावन व भादो मास में आने वाले पर्व गुरु पूर्णिमा से लेकर अनंत चतुर्दशी तक आने वाले सभी पर्व–हरियाली अमावस्या, तीज, रक्षा बंधन, नाग पंचमी, जन्माष्टमी, बछ बारस, स्वतंत्रता दिवस, राधा अष्टमी, गणेश चतुर्थी आदि सबी पर्वों के पत्रक वे वीडियो द्वारा राष्ट्रीय स्तर से लेकर स्थानीय स्तर पर सभी ग्रुप में व्हाट्सएप के माध्यम

से शुभकामनाएं एवं उस पर्व की विशेष जानकारी दी गई।

सातुड़ी तीज के अवसर पर तीज वाले ही दिन झाला गायन व्हाट्सएप के थ्रू जो भी माहेश्वरी बहनें गायक भेजना चाहे 1 मिनट की प्रस्तुति के साथ अपना ऑडियो के माध्यम से झाला भेजे। ऐसा मैसेज समिति के माध्यम से दिया तो करीबन 500 झाले हमारे पास आए यह पहली बार था जबकि सभी बहनों ने झालों के माध्यम से हमारी संस्कृति के माध्यम से अपना रुझान दिखाया। पूर्व अध्यक्ष, वर्तमान एवं निवृत्तमान अध्यक्ष, मंत्री सहित सभी पदाधिकारियों ने अपनी आडियो भेजकर हमें अनुग्रहित किया। सभी बहनों का कहना था कि इससे व्रत का पता ही नहीं चला, न प्यास लगी न भूख। झाले बनाए, गाए, फिर भेजें इस तरह सभी ने उत्साहपूर्वक झाला गायन कर अपने आनंद एवं उत्साह का परिचय दिया।

पुष्पा सोमानी, कोटा (समिति प्रभारी)

स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति

कोरोना महामारी में लॉकडाउन के समय मेरा परिवार अनमोल मोती, 2 मिनट में पारिवारिक समरसता का महत्व बताते हुए वीडियो बनाओ प्रतियोगिता का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन। 10 सितम्बर को राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक में पुरस्कारों की घोषणा की गई।

समिति के 9जून के कार्यक्रम में राष्ट्रीय प्रभारी श्रीमती शिखा भदादा ने समिति के त्रिवर्षीय एजेंडा व कार्यप्रणाली बताई। प्रथम बार जिला के संयोजिका भी जुड़ी। परम पूज्य पं. विजयशंकरजी मेहता का पारिवारिक समरसता पर उद्‌बोधन, 900 बहनें लाभान्वित।

21 जून योग दिवस पर सभी ने परिवार संग योग किया। सभी 27 प्रदेसों में योग शिविर, परिचर्चाओं का आयोजन। स्वस्थ रहो, पर्यावरण बचाओ अभियान के तहत प्राकृतिक औषधीय पौधे परिवार संल लगाए गए।

संयुक्त परिवार का महत्व, इत्ती सी हंसी, इत्ती सी खुशी, मेरा परिवार, मेरा संबल, बदलते परिवेश में संस्कारों की पुनर्स्थापना जैसे विषयों पर परिचर्चा।

नैसर्गिक आपदा कोरोना महामारी को देखते हुए मास्क, राशन सामग्री, सैनेटाइजर व काढ़े का वृहद वितरण।

विशेष–दक्षिणी राज. प्रदेश के भीलवाड़ा जिले की 90 वर्षीय महिला ने स्वनिर्मित 2500 मास्क वितरित किये।

गुजरात प्रदेश ने 2 महीने के लिए मंदबुद्धि आश्रम में 70 बालिकाओं हेतु सैनिटरी नैपकिन का वितरण किया।

घर की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी, बदलते परिवेश में संस्कारों की पुनर्स्थापना पर निबंध प्रतियोगिता।

डॉ. दिवस पर माहेश्वरी डॉक्टर महिलाओं का सम्मान

गर्भ संस्कार की शिक्षा कितनी आवश्यक पर परिचर्चा व नाटक आयोजित।

मासिक धर्म को नियमित करें, सर्वाइकल वैक्सीन, रूबेला वैक्सीन कितनी आवश्यक, सौंदर्य के प्राकृतिक उपाय, रसोई व बगिया पर परिचर्चा।

सभी प्रदेशों द्वारा आयुर्वेद, होम्योपैथी, नेचुरोपैथी, डेंटल, स्किन केअर, मानसिक स्वास्थ्य, हृदय को संभाले, डायबिटीज को कैसे मैनेज किया जाए पर शिविर व परिचर्चा आयोजित।

–शिखा भदादा, राष्ट्रीय प्रभारी

स्त्रियों की स्थिति में सुधार न होने तक विश्व के कल्माण की कोई कल्पना नहीं हो सकती. किसी पक्षी का एक पंख के सहारे उड़ना बिलकुल असम्भव हैं।

व्यक्तित्व विकास समिति

व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति द्वारा लगातार सभी प्रदेशों में भी कार्यक्रम लिए जा रहे हैं। 20 अक्टूबर तक सभी प्रदेशों में कार्यकर्ता प्रशिक्षण का कार्यक्रम कम्पलिट कर जिला एवं स्थानीय लेवल तक ले जाया जाएगा। व्यक्तित्व विकास का कार्यक्रम 2021 में प्रारंभ कर राष्ट्रीय से प्रदेश एवं फिर जिले एवं स्थानीय लेवल तक ले जाया जाएगा।

इस समिति के अन्तर्गत टॉप टू बॉटम संयोजिका, सहसंयोजिका की मीटिंग 5 मई को 108 बहनों के साथ आयोजित की गई, जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष आशाजी माहेश्वरी, महामंत्री मंजूजी बांगड़ एवं अन्य राष्ट्रीय पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

27 जुलाई को पुनः टॉप टू बॉटम संयोजिका, सहसंयोजिका एवं सदस्यों के लिए आयोजित की गई। यह एक प्रशिक्षण कार्यक्रम था जिसे सभी बहनों ने बहुत सराहा। इसमें लगभग 210 बहनें उपस्थित थीं, जिसमें महेश वंदना के बाद समिति द्वारा मंगला मर्दा द्वारा मार्गदर्शन दिया गया। समिति प्रभारी नम्रता बियाणी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की आवश्यकता बताते हुए कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. उर्वशी साबू द्वारा इंटरनेट स्टीकेट, शोभा भूतड़ा ने स्वप्रबंधन, मधु राठी ने सकारात्मक सोच, वर्षा डागा द्वारा वाणी का संयम एवं मनीषा मूंदड़ा द्वारा समय प्रबंध पर उद्‌बोधन दिया गया। सह संयोजिका नीता मूंदड़ा द्वारा मैनेजमेंट गेम करवाया गया। आभार एवं राष्ट्रगान के साथ मीटिंग का समापन हुआ। गत 12 सितम्बर को आयोजित कार्यसमिति बैठक में महासभा अध्यक्ष श्याम सोनी की उपस्थिति में पुस्तिका 'कर्मपथ' की पीडीएफ का विमोचन किया गया।

3 अक्टूबर को समिति की टॉप टू बॉटम मीटिंग आयोजित की गई, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ उपस्थित थीं। उन्होंने बताया कि सत्र 2021 में हम मोटीवेशनल एवं व्यक्तित्व विकास के सभी टापिक विस्तृत रूप से लेंगे। समिति प्रमुख मंगल मर्दा ने बताया कि कैसे हम इसे ग्लास रूट तक ले जाएंगे. सभी प्रदेश संयोजिकाओं ने 2-2 मिनट में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। समिति प्रभारी नम्रता बियाणी ने अंत में समीक्षा कर बताया कि प्रदेश स्तर पर सिर्फ वही कार्यक्रम ले जो कि बताए गए हैं एवं जिला एवं स्थानीय स्तर पर भी ध्यान दें कि कार्यक्रम किस समिति के अन्तर्गत लें। सभी समिति प्रभारियों वर्षा डागा, शोभा भूतड़ा, उर्वशी साबू, मधु राठी एवं मनीषा मूंदड़ा ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

समाजसेवी श्री रमाशंकरजी झंवर का वैकुंठवास

अ.भा. महिला सेवा ट्रस्ट की उपाध्यक्ष श्रीमती राजजी झंवर के पति कारपोरेट जगत के नामचीन व्यक्तित्व, समाजसेवी श्री रमाशंकरजी झंवर का वैकुंठवास कलकत्ता में हो गया है। झंवरजी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे तथा सीएम में पूरे भारत में प्रथम स्थान लाये थे। आपने कानून में स्नातक, कास्ट मैनेजमेंट, एकाउंटेंट लंदन की पढ़ाई की। आपने 60 वर्षों तक बी.एम. खेतान ग्रुप में उच्च पदाधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं दीं। आप टी बोर्ड के चेयरमैन, शिक्षायतन तथा कलकता बिजनेस स्कूल के सलाहकार, एग्री हार्टिकल्चरल सोसाइटी के अध्यक्ष भी रहे। राष्ट्रीय महिला संगठन की ओर से भावभीनी विनम्र श्रद्धांजलि.. हम सब प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें तथा राज जी एवं समस्त परिवार जनों को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करे।

साहित्य समिति में सम्पन्न गतिविधियां

समिति की पहचान हर चार माह के अंतराल से होने वाले लेखन प्रतियोगिता है। प्रथम प्रतियोगिता ''परिवार के स्तंभ'' अत्यधिक सफल रही। ब्लाग पेज जुलाई में शुरू हुआ 30 सदस्यों के साथ समाज का पसंदीदा मंच बन गया है। ''हर सीट हाट सीट'' 2500 महिलाओं द्वारा एक समय पर एक साथ खेला जाने वाला अनूठा फन गेम जुलाई में था। नवीन प्रतियोगिता ''और जब लोग हंस पड़े''हास्य लेखन धीरे-धीरे गति पकड़ रही है।

प्रदेशों में साहित्यिक गतिविधियां-पश्चिम उत्तरप्रदेश में अमोलिका के अन्तर्गत ''नव पल्लव'' में विभिन्न विषयों पर कविता। मध्य उत्तरप्रदेश में 'लेखन शैली में सुधार' पर अनुराधा जाजू का वक्तव्य 85 बहनों ने सुना। दिल्ली में राधा अष्टमी पर भक्ति कालीन कवियों के दोहे और पदावली पर प्रतियोगिता। तेलंगाना आंध्रप्रदेश में बच्चों के लिए सामाजिक वाकपटुता कार्यशाला, भाषा से जोड़ने के लिए मनोरंजक खेल व प्रश्न, चित्र लेखन, पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र वितरण और साहित्य का इंद्रधनुष, बहुरंगी, वक्तव्य, साहित्य, रंगोली, आओ रचें कविता से सजा आंध्र और मुंबई का सफल कार्यक्रम 475 बहनों के साथ सम्पन्न। तमिलनाडु, केरल, पांडुचेरी ने जुलाई में कवि सममेलन और अगस्त में काव्य कौशल कार्यशाला में 170 बहनों ने काव्य की बारीकियों को जाना। कर्नाटक, गोवा प्रान्तीय में साहित्य पर कार्यशाला, नारी की मंगल गाथा कार्यक्रम। महाराष्ट्र में हास्य तरंग काव्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

असम में 'कृषि का जीवन में महत्व' प्रतियोगिता, सरोज मालपानी, पुष्पा धूत द्वारा हिंदी की बारीकियों पर कार्यशाला। कोलकाता में नवरस प्रतियोगिता, भाषा-संस्कृति बचाइए, साहित्य कार्यशाला एवं कविता पाठ और हंसी के गुब्बारे कवि सम्मेलन आयोजित किया। नेपाल में व्याकरण कार्यशाला आओ फिर से पढ़ें साथ-साथ। दक्षिण राजस्थान में बढ़ती उम्र में वैवाहिक संबंध पर पक्ष-विपक्ष में प्रतियोगिता, पूर्वोत्तर राजस्थान में गीत कविता, प्रेरणा दायक शब्द रूप में खुला मंच हुआ। विदर्भ में साहित्य पर कार्यशाला में लेखन की विधि वर्णित की गई। गुजरात में स्वरचित कविता प्रतियोगिता और पश्चिम मध्यप्रदेस में वर्ष पर्यंत के त्योहारों पर अनूठी सारगर्भित परिचर्चा हुई।

-मंजू मानधन्या, रा.सा.स. प्रभारी

मंथन के मोती : निबंध प्रतियोगिता

परिवार के स्तम्भ

अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत राष्ट्रीय साहित्य समिति की प्रथम प्रतियोगिता परिवार के स्तम्भ अप्रैल 2020 में प्रारम्भ होकर जून 2020 में समाप्त हुई। 27 प्रदेशों की 81 रचनाओं के साथ भागीदारी रही। समय की प्रतिबद्धता साहित्य समिति की पहचान है। महिला संगठन होने के कारण हमने महिलाओं की सोच और उनकी समस्याओं के निवारण की ओर ध्यान दिया है। महिलाओं के मर्म को स्पर्श करने वाला विषय प्रस्तुत किया है जो कि सामाजिक सौहार्द और पारिवारिक सामंजस्य को दर्शाता है। निबंध साहित्य की सशक्त विधा है जो विचारपूर्वक क्रमबद्ध तरीके से लिखी जाती है। सशक्त भूमिका, सुनियोजित विषय विस्तार और निष्कर्ष लिए उपसंहार ये निबंध के महत्वपूर्ण तथ्य है।

परिवार के स्तम्भ विषय ने महिलाओंके अंतस में रिश्तों के प्रति नवीन भाव जाग्रत किए। पिता, दादा, चाचा, ताऊ, मामा आदि जिन रिश्तों में हम बचपन से ही मान कर चलते हैं कि ये केवल देने और बांटने के लिए ही बने हैं, उन रिश्तों की अहमियत समझ आई। प्रतिदान

स्वरूप बच्चों कोभी कुछ करना है, यह भाव भी आया। भाई बहन के रिश्ते का अटूट बंधन केवल राखी ही नहीं है, कई महिलाओं ने उसे पढ़ाई, नौकरी, विवाह आदि मामलों में भाई द्वारा बहन को भावनात्मक एवं वैचारिक सम्बल प्रदान करने का जरिया भी बताया। हम उम्र के किस प्रकार तारतम्य बैठता है ये भी लिखा। पति, साथी, प्रेमी, दोस्त इन सभी पर खूब लिखा गया। पति की गंभीरता, उसका प्यार, मनुहार सब पर चर्चा की गई। कई महिलाओं ने ससुर, जेठ आदि को भी परिवार के स्तम्भ के रूप में दर्शाया। जीवन के संध्या काल में पुत्र, जवाई अन्य युवा (बच्चों के दोस्त, पड़ोस का बेटा) आदि सभी पर कलम की कलाकारी दिखाई। कुछ लेखों की भाषा सही मायने में उत्कृष्ट कोटि की थी, विचारों का प्रवाह भी अच्छे स्तर का था। कुल मिलाकर प्रतियोगिता का विषय बहुत सी महिलाओं ने सोच-समझ कर अपनी लेखनी से सिलसिले वार रूप में लिखा।

इस प्रतियोगिता के दूसरे पहले परभी गौर करते हैं। महिलाओं का एक बड़ा प्रतिशत ऐसा भी रहा जिन्होंने विषय को समझा ही नहीं। बहुत सी महिलाओं ने तो विधा का स्वरूप ही बदल दिया। निबंध को आत्मकथा बनाकर लिखा। शुरुआत निबंध से की पर मध्य और अंत कहानी, आत्मकथा से किया। गद्य निबंध में 50 प्रतिशत के लगभग पद्य डालना भी रचनाओं के निष्कासन का कारण बना। भाषा पर कमजोर पकड़ भी कई लेखों को वरीयता क्रम में आने से रोकती रही। इसी कारण कई लेख अच्छे व सशक्त विचार होने के बावजूद वरीयता क्रम में पिछड़ गए। शब्द सीमा का ध्यान भी बहुत कम लोगों ने रखा। बहनों, विगत सत्र से अनवरत प्रतियोगिताओं का सिलसिला चला है, वह अब ऊंचे स्तर पर जाने को तत्पर है। हम चाहते हैं कि आपके विचारों में परिवक्वता और लेखन में धार आये। विषय पर अच्छी पकड़ और भाषा में उत्कृष्टता आए। इसीलिए हम बार-बार आग्रह करते हैं कि लिखने से पहले थोड़ा पठन-पाठन, चिंतन-मनन का क्रम भी शुरू कीजिए जिससे व्याकरण, मात्राओं, शब्द संरचना और वर्तनी अशुद्धियों की जानकारी हो सके। ये प्रतियोगिताएं लेखन मात्र ही नहीं है। हमारे व्यक्तित्व विकास का दर्पण भी हैं।

प्रतियोगिता को जन-जन तक पहुंचाने में प्रदेश पदाधिकारियों का भी सहयोग सराहनीय है। लेखिका मंडल का विशेष धन्यवाद जिनकी लेखनी शिखर छूने को तत्पर है। अंत में हमारे निर्णायक मंडल का भी आभार जिनकी तत्परता और सहयोग के कारण निर्णय यथासमय आप सबके समक्ष आए।

मंजू मानधना (समिति प्रभारी)

प्रथम

पुरुष हमारे परिवार के स्तम्भ

'यत्र नार्यस्तु पूजन्यते रमन्ते तत्र देवता' या 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' ऐसी बातें हम हमेशा से सुनते और मानते आए हैं। सुंदर समाज के निर्माण में नारी के योगदान को नकारा नहीं जा सकता, किंतु नारी के महिमा मंडन में लीन हम उपेक्षा कर देते हैं उस पुरुष वर्ग की, जिसका मूक योगदान न कभी प्रशंसा का पात्र बना और ना ही स्वयं उसने उसकी अपेक्षा की। सफल पुरुष के पीछे नारी के योगदान को देखा जाता है तो सफल नारी के पीछे खड़े पुरुष को अनदेखा करना भी तो उचित नहीं है।

किसी भी सफल महिला की जीवन कथा में उसके पिता, पति, गुरु या अन्य किसी पुरुष का अथक प्रयास अवश्य नजर आएगा। मुक्केबाज मेरी कॉम के पति श्री के. आन्लर कॉम, बैडमिंटन खिलाड़ी पी.वी. सिद्धू के गुरु गोपीचंद और कुश्ती क्षेत्र में ख्याति प्राप्त बबीगा फोगट के पिता महावीर सिंह फोकट ऐसे ही कुछ उदाहरण हैं।

नारी के सर्वांगीण विकास और उसकी सफलता में उसके जीवन में आए पुरुष पात्रों की बहुत बड़ी भूमिका होती है। उसके जीवनकाल में ये पुरुष अलग-अलग रिश्तों के रूप में आते हैं। हर रिश्ते की अपनी एक खूबसूरती होती है और वह उस नारी के जीवन को

प्रभावित करती है।

बचपन से शुरू करें तो इस वक्त व्यक्तित्व निर्माण की नींव पड़ती है, संस्कारों की जड़ें जमती हैं। इस समय जीवन के प्रथम पुरुष पात्र दादा, नाना या पिता होते हैं। दादा नाना अपने अवकाश वाले जीवन में पूरे धैर्य से खेल और कहानियों के जरिए उसे संस्कारों के साथ अपने अनुभवों का निचोड़ प्रदान करते हैं। कभी स्वयं घोड़ा बनकर या कभी उसे कंधे पर बैठाकर राजकुमारी की तरह प्रभावशाली और महत्वपूर्ण होने का एहसास दिलाते हैं। आत्म गौरव का यह बोध हमेशा के लिये मीठी याद बनकर उसके जीवन को आनंदित करता है।

महानायक पिता के जीवन की सार्थकता तो बेटी की हर फरमाइश पूरी करना और हर तरह की विपत्तियों से उसे सुरक्षित रखना ही है। किसी कंपनी का एक सुप्रसिद्ध विज्ञापन था, जिसमें फिसल पट्टी के ऊपर छोर से नीचे की तरफ आने से पहले एक छोटी बच्ची अपने पिता से पूछती है कि नीचे आते वक्त अगर वह गिरने लगे तो पिता उसे बचा लेंगे ना। पिता से आश्वासन मिलते ही वह बेहिचक नीचे फिसल जाती है। विज्ञापन तो व्यवसायिक था, पर पिता–पुत्री के रिश्ते की अहमियत को बड़ी सुन्दरता से दर्शाया गया। पिता का होना जीवन में उन्मुक्तता और निश्चिंतता लाता है। इसे प्राप्त साहस और आत्मविश्वास उसे हर चुनौती को स्वीकार कर आगे बढ़ने में मदद करते हैं। पर्वत से निकली नदियों को अगर अपने अल्हड़पन के साथ मैदान में कूदने की स्वतंत्रता न मिले तो उनके आगे की यात्रा बहुत ही निष्प्राण हो जोगी।

माता–पिता दोनों ही जानते हैं कि बेटी को एक दिन ससुराल जाना है, पर उनके व्यवहार का नजरिया अलग होता है। माता की पूरी कोशिश उसे संजीदगी, सौम्यता के साथ गृहस्थी–संचालन में समझौता और सामंजस्य के महत्व को समझाने की होती है। परन्तु पिता सिर्फ इस बात पर ध्यान देता है कि जीवन के इन पलों को वह अपनी बिटिया के लिए कितने बेहतरीन बना दे। उसके हर सपनों के लिए मन चाहा रंग जुटाने और हर उड़ान के लिए परों को मजबूती देने का कार्य पिता ही करता है।

बचपन से युवा होते समय नारी के जीवन में भाई रूपी पुरुष आता है। बड़ा अद्‌भुत रिश्ता होता है उसके साथ। माता–पिता का प्यार पाने की बात हो तो प्रतिद्वंद्वी, साथ खेलना हो तो सखा, अपनी गलतियां उस पर मढ़कर डांट से बचना हो तो बलि का बकरा और बाहर किसी से लड़ाई–झगड़ा हो तो सुरक्षा कवच। भाई छोटा हो या बड़ा राखी के वक्त उससे यह प्रतिज्ञा अवश्य करवाती हैं कि वह आजीवन उसकी रक्षा करेगा। इस तरह का बीमा और कौन दे सकता है भला। जीवन में अपने दम पर कितना कुछ भी हासिल कर ले, पर भाई के दिए हुए छोटे से उपहार में ही धरती अंबर की तमाम खुशियां छिपी होती है।

पक्षी के मजबूत परों की सार्थकता तभी है जब उड़ने के लिए खुला आसमान हो और बीच में विश्राम के लिए विशाल वृक्ष। यही बात नारी जीवन में भी लागू होती है। तमाम योग्यताओं और मजबूत इरादों रूपी पंखों और सपनों के लिए जब अपने वैवाहिक जीवन में प्रवेश करती है तो उसके जीवन में प्रमुख पुरुष पात्र ससुर और पति आते हैं। इनका प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग ही उसकी सफलता के मार्ग को प्रशस्त करता है। सफलता की कोई निश्चित परिभाषा नहीं होती, पर इसकी एक अनिवार्य शर्त होती है स्वस्थ पारिवारिक परिवेश। ससुरल भरपूर प्यार और सराहना देकर उसके अंदर ऊर्जा को जीवंत रखते हैं। गृहलक्ष्मी की तरह सम्मान देते हैं और वट वृक्ष की तरह हमेशा अपने आशीर्वाद की छाया देते हैं।

स्त्री के जीवन में पति की भूमिका बहुआयामी होती है। जीवन पथ का यह सहयात्री उसका संरक्षक, गुरु, मार्गदर्शक, आलोचक, प्रशंसक, सहयोगी, सहकर्मी, सहकर्ती आदि कई तरह के किरदार निभाता है। प्रियतम और सखा बनकर जीवन पथ को सुगम और मधुर बनाता है। उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने तथा परिवार और समाज के बीच उसके सम्मान को प्रतिष्ठित करने की चेष्टा में वह उसका संरक्षक होता है। नये

परिवार में आकर उसकी पत्नी घर के सभी सदस्यों के साथ सामंजस्य बैठा सके इसके लिए वह उसका मार्गदर्शक गुरु बनता है। पत्नी द्वारा लिए गए हर शुभ संकल्प पर प्रशंसक बन उसका हौसला बढ़ाता है। कभी आलोचक बन कर उसकी कमियों को दूर करने का प्रयास भी नहीं करता है। पत्नी अपने दायित्व को निभाते हुए अपने सपनों को जीवंत रख सके उसे मूर्त रूप दे सके इसके लिए वह सहकर्मी और सहयोगी बनता है। घर के दायित्व से लेकर बच्चों की परवरिश तक हर कोई में उसका साथ देता है। पति के साथ उसके प्यार और विश्वास की जड़ ऐसी होती है कि घर में सब का ध्यान रखते हुए पति की ही उपेक्षा हो जाती है। झुंझुलाहट के क्षणों में उसकी उलाहना सुनने वाला भरोसेमंद पात्र भी पति ही होता है।

नारी जीवन का अगला महत्वपूर्ण पुरुष मात्र उसका पुत्र होता है। पुत्र माता के जीवन को एक प्रकार की पूर्णता देता है। पिता से अधिक माता के करीब होने के कारण वह माता के अधिकारों और उसके सम्मान का रक्षक भी होता है। पुत्र की सफलता में ही माँ अपनी सफलता और खुशी की अनुभूति करती है। माता की इच्छा का सम्मान करना और उनके सपने को पूरा करना वह अपना सौभाग्य समझता है, यह बात माता के लिए निसंदेह संतुष्टि और गौरव का विषय होती है।

नारी की विकास यात्रा में ये सभी रिश्ते महत्वपूर्ण होते हैं। अपवादों को छोड़ दें तो उसके जीवन में आए इन सभी पुरुषों के भीतर एक मूल भाव रहता है उसकी सुरक्षा और सम्मान का ध्यान रखना। नारी की ईश्वर प्रदत्त विशेषता उसकी सहृदयता, संवेदनशीलता और व्यवहार की मधुरता होती है। जीवन के कठोर यथार्थ की आंच और तपन इस सुधा रस को सोख ना ले, इसके लिए प्रयासरत पुरुष धन्यवाद के पात्र हैं। गुलाब की सुंदरता और कमलता बरकरार रखने के लिए कांटे अपने हिस्से का जल भी फूल तक जाने देते हैं और अनचाहे हाथों से उसे बचाने के लिए स्वयं कठोर और नुकीले बने रहते हैं। इमारत के कंगूरे कितने भी आकर्षक क्यों न हो, मजबूती का आधार उसके स्तंभ होते हैं। उसी तरह हमारे परिवार की सुंदरता और मजबूती के आधार स्तंभ पुरुष ही हैं। महादेव शंकर के विषपान की तरह हर बाहरी समस्या चाहे वह सुरक्षा की हो या आर्थिक संसाधन जुटाने की या फिर कोई अन्य सामाजिक समस्या, सबको अपने ऊपर झेलकर विषम परिस्थिति का कड़ुवा घुंट पीता है और हमारे लिए सहज परिस्थितियों का सुंदर वातावरण सुरक्षित रहता है।

–प्रेमलता सोनी, हावड़ा, कोलकाता प्रदेश

द्वितीय

परिवार के स्तंभ

1. प्रस्तावना–प्रकृति के उद्बोधन से प्रलय तक विभिन्न जीवों की उत्पत्ति व विनाश हुआ। अनंत काल से विभिन्न बुद्धि व मन की विचारधाराओं को एकजुट कर जीव ने समूह अथवा परिवार के रूप में रहना सीखा। हिंदू संस्कृति के मत अनुसार प्रथम पुरुष ऋषि मनु तथा प्रथम स्त्री शतरूपा थी। हम सभी मनु की संतानें हैं अतः मानव कहलाए। ऐसा ही साक्ष्य पाश्चात्य संस्कृति में जहां प्रथम पुरुष व स्त्री आदम तथा ईव को माना है। कुटुंब का आधार स्त्री तथा पुरुष है जो कि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जिस प्रकार रथ को गतिमान करने के लिए दोनों पहियों का एक साथ चलना अनिवार्य है, उसी प्रकार परिवार के संतुलन का आधार पति–पत्नी का आपसी तालमेल होता है। यह एक–दूसरे के विचारों को व्यक्त कर, कर्त्तव्य–अधिकारों को समझकर, उनका सम्मान कर अर्जित किया जा सकता है।

2. भूमिका–पुरुष की सफलता के पीछे नारी होती है। यह कथन सर्वथा सत्य है परंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब हम नारी की सामाजिक, आर्थिक, मानसिक उन्नति व प्रगति को देखते हैं तो यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि –सफल स्त्री के पीछे पुरुष होता है।

नारी जीवन की प्रत्येक कसौटी की सफलता के लिए पुरुष के सहयोग की अपेक्षा रखती है। सभी क्षेत्रों में वह पिता, पति, पुत्र आदि रिश्तों के रूप में पुरुष को साथ खड़ा पाती है। इस कथन को मैं मेरी स्वरचित कविता द्वारा पंक्तिबद्ध कर रही हूं –

रिश्तों में पली, रिश्तों से जुड़ी, स्त्री है इक नाजुक सी कली,
पिता का गौरव, पति का मान, इनसे है स्त्री की पहचान।
हिमगिरी की डगर है दुर्गम मगर, पिता का मार्गदर्शन,
दादा नाना का दुलार, भाई का सुरक्षात्मक प्यार,
पति का विश्वास, ससुर का दुलार,
पुत्र है तारने वाला, कर देगा भवसागर से पार।
यह रिश्ते हैं जो भर देते हैं मन में उत्साह,
हर असंभव को संभव बनाने का,
हर तीर को निशाने पर दागने का,
इन रिश्तों पर नारी की निर्भरता का अपरिहार,
लाते हैं मानसिक स्थिरता,
जो है हर स्त्री की सफलता का आधार।

स्त्री जीवन को मुख्यतः दो भाग यथा विवाह पूर्व व विवाह उपरांत में बांट सभी रिश्तों की भागीदारी को समझा जा सकता है।

3. विवाह पूर्व रिश्तों की सहभागिता – स्त्री जन्म से जिन परिवारजन से भावनात्मक रूप से अधिक जुड़ी होती है वह किस प्रकार स्त्री के कार्यक्षेत्र को प्रभावित करते हैं, आइए देखते हैं।

क. सुदृढ़ नींव का आधार पिता – पिता पुत्री को असीम स्नेह, भय मुक्त निश्चल वातावरण में अपने आंगन में सींचता है। पिता बेटी को वैचारिक स्वच्छंदता प्रदान कर उसे सामाजिक परिप्रेक्ष्य में संयमित व्यवहारकुशलता का ज्ञान देकर उचित मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। पुत्री के गुणों, अवगुणों को समझकर उसके लिए उपयुक्त कार्यक्षेत्र की दिशा निर्दिष्ट कर पुत्री के लिए मार्गदर्शक एक पिता ही होता है। उपयुक्त समय पर अपनी दूरदर्शिता द्वारा पुत्री के जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लने में उसका मार्गदर्शन करता है।

ख. सुरक्षा का कवच भाई – सुरक्षा व प्यार की प्रतिमूर्ति है भाई जो सदैव अपनी बहन पर सर्वस्व न्यौछावर करने को आतुर रहता है। भाई की छत्रछाया में बहन हर इच्छा, आकांक्षा व आवश्यकता को पूर्ण कर अपने ध्येय की ओर निर्बाध रूप से अग्रसर होती है।

ग. मनचाही इच्छाओं को पूर्ण करे दादा, नाना, मामा, चाचा, ताऊ का प्यार – इन रिश्तों के समक्ष बेटियां अपनी इच्छाओं को एक पूर्ण खिले पुष्प की पंखुड़ियों के समान बिखेरती हैं, क्योंकि दादा–नाना के आगे तो पिता व माँ कुछ भी नहीं कह पाते। एक उन्मुक्त मयूर जिस प्रकार पंखों को फैलाकर नाचता है, उसी प्रकार अपनी आकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए चाचाजी व ताऊजी से दृढ़तापूर्वक पुत्री प्रार्थना करती है। अपने मामा को भी इच्छा पूर्ति के लिए खूब नाच नचाती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि विवाह पूर्व इन रिश्तों से मानसिक व भावनात्मक सम्बल प्राप्त कर स्त्री हर्षोल्लासित व सुखद जीवन जीने में सफल होती है।

4. विवाह उपरांत रिश्तों की सहभागिता – विवाह के पश्चात स्त्री जीवन की परिभाषा पूर्णरूपेण परिवर्तित हो जाती है। उसके शेष जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव उसके पति व ससुराल पक्ष का होता है।

क. पति पर दृढ़ विश्वास – नवयौवना जब स्त्री बनती है, अर्थात् विवाह उपरांत अपने पितृ गृह को छोड़कर गृहलक्ष्मी बन अपने पति के घर प्रवेश करती है, तब वह कई नए रिश्ते यथा सास–ससुर, देवर–जेठ, ननद आदि से मिलती है। इन अनजाने व्यक्तित्व के चेहरों के मध्य वह केवल अपने पति पर पूर्ण विश्वास करती हुई जीवन के नए सफल को आरंभ करती है। यह समय अत्यंत दुष्कर होता है जो पति अपनी सूझबूझ द्वारा अपने परिवार जन व पत्नी के मध्य वैचारिक व व्यावहारिक सामंजस्य स्थापित करने में सफल हो जाता है वही सुखद गृहस्थ आश्रम की प्रथम पीढ़ी को पार कर जाता है। पितृ गृह के छोड़ने से व्यथित मन के उद्वेगों को शांत करने के लिए पत्नी, पति से प्राप्त प्रीति व भावनात्मक सम्बल पर आश्रित रहती है।

किसी उद्यमी महिला के लिए विवाह पश्चात सुचारू रूप से कार्य करते रहना पति के सहयोग के बिना संभव नहीं। जब स्त्री विवाह करती है तो उसके कर्त्तव्य बढ़ जाते हैं। वधु से परिवार की अपेक्षाएं, आकांक्षाएं बहुत अधिक हो जाती है। इन परिस्थितियों में घर व कार्यक्षेत्र में संतुलन अत्यावस्यक है। पति द्वारा सामाजिक, पारिवारिक गतिविधियों में सहायक बन स्त्री के मन–मस्तिष्क को अवसाद, ग्लानि, व्यथा व पीड़ा से मुक्त कर उसके कार्य भार को कम किया जाता है। तभी स्त्री को सफलता संभव है।

स्त्री का गर्भ धारण काल तथा प्रौढ़ावस्था यह दोनों ही समय स्त्री के मानसिक–शारीरिक परिवर्तन स्वतः ही होते हैं, जो स्त्री के वशीभूत नहीं होते हैं। इस उथल–पुथल को परिवार जन के प्यार व सहयोग से प्राप्त उच्च मनोबल द्वारा जीतकर जीवन सुगम बन जाता है।

ख. ससुर व देवर का सहयोग – ससुराल में पिता तुल्य ससुर अपनी बहू को अधिकार प्रदान कर उसके मन में यह विश्वास उत्पन्न करते हैं कि यह घर उसका है व वधु को ही इसे संभालना व संवारना है। यह अधिकार स्त्री में कर्त्तव्य बोध की भावना भी जागृत करता है।

देवर द्वारा भाभी संग की गई अठखेलियां उसके मन व मस्तिष्क को प्रफुल्लित करती है। जेठ बड़े भाई के समकक्ष प्रहरी बन उसकी रक्षा कर, हर आवश्यकता को पूर्ण करना अपना कर्त्तव्य मानते हैं।

ग. मातृत्व की सुखद अनुभूति–पुत्र – हमारे पुरुष प्रधान समाज में पुत्र की मां होना सौभाग्य का सूचक होता है। पुत्र के रूप में स्त्री अपने परिवार के अस्तित्व को चिरकाल तक बनाए रखने के लिए एक सुदृढ़ आधार प्रदान करती है, जिससे वह प्रेम और संरक्षण प्राप्त कर अपने अंतिम पड़ाव की ओर निश्चित होकर अग्रसर होती है।

वृद्धावस्था में स्त्री को पुरुष व पुरुष को स्त्री की सर्वाधिक आवश्यकता होती है, जब वह अपने सांसारिक कर्त्तव्यों को पूर्ण कर आध्यात्म वाद की ओर अग्रसर होते हैं। इस अवस्था में स्त्री पोते की दादी, दौहित्र की नानी बन पारलौकिक सुख की अनुभूति करती है। वृद्धावस्था में शारीरिक बल क्षीण हो जाता है परंतु मनोबल को उद्दीप्त कर पुरुष–नारी दोनों एक–दूसरे के प्रति रूप बन जीवन यात्रा को सुगम बना अपने अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति को अर्जित कर जन्म मरण के चक्र से मुक्ति पा श्रेष्ठत्व को प्राप्त करते हैं।

5. माहेश्वरी हैं हम – शिव हमारे आराध्य देव हैं। अर्द्धनारीश्वर के रूप में पूजनीय शिव स्वयं नारी शक्ति को पूजनीय व वंदनीय मानते हैं। आदि शक्ति देवी पार्वती उनकी अर्द्धांगिनी है।

शिव पुराण अनुसार देवी पार्वती को अपनी शक्तियों का बोध व पराकाष्ठा का ज्ञान शिव ने ही कराया। जब मां काली का रूप धारण कर संसार के सर्वनाश को आतुर थी, तब स्वयं शिव धरा पर सम्मुख लेट गए व जैसे ही पार्वती जी के पैर शिवजी पर पड़े तो उनके क्रोध की प्रचंड लहरें यकायक शांत हो गई तथा उन्हें अपने विकार रूप द्वारा की गई हानि का बोध हुआ। हम देखते हैं कि भगवान शिव ने भी पार्वती को भावनात्मक संबल प्रदान किया यही आज के युग में पति द्वारा अपेक्षित व सराहनीय है।

नारी है नारायणी, पर उसमें नारायण का है साथ।
नारी है जगदम्बा, पर उसमें शिव का है आशीर्वाद।।

6. उपसंहार – इस प्रकार हम पाते हैं कि जीवन के प्रत्येक पहलू में स्त्री–पुरुष पर अभिन्न रूप से निर्भर रहती है। उनका निसर्ग ही प्रकृति का समागम है। इस जीवन रूपी रथ को संसार के भवासगर से पार कराने के लिए स्त्री निश्चिंत होकर पुरुष के कंधों का सहारा लेकर जीवन के विभिन्न सोपानों को पार करने में सफल होती है। इसे इस प्रकार मैं मेरी स्वरचित कविता द्वारा संकलित कर रही हूं –

पुरुष नौका है तो स्त्री पतवार, पुरुष ताला है तो स्त्री चाबी,
पुरुष शरीर है तो स्त्री परछाई, पुरुष दिया है तो स्त्री बाती,
एक दूसरे से भिन्न है, पर मूल तो अभिन्नता में है।
साथ हो जब स्त्री पुरुष, कार्य हर संभव हो जाए,
पथ के कांटे स्वतः निकल जाए, हर दुर्गम कार्य सुगम बन जाए।

डॉ. कृतिका अजमेरा लड्ढा, भीलवाड़ा

तृतीय

परिवार के स्तंभ

सृष्टि का अभ्युदय एवं संचालन पुरुष एवं प्रकृति (नारी) के माध्यम से ही होता है। पुरुष और प्रकृति दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। जिस प्रकार एक सफल पुरुष के पीछे एक नारी का हाथ होता है, ठीक वैसे ही एक सफल महिला के पीछे पुरुष का हाथ होता है। जीवन अनेक पड़ावों से गुजरता है–बचपन, जवानी और बुढ़ापा। हर पड़ाव के साथ पुरुष की भूमिका जुड़ी होती है। नारी के क्षेत्र में पिता, पति, पुत्र, भाई, सखा व गुरु ये सब परिवार के स्तम्भ एवं सुरक्षा कवच हैं। इन सभी के सम्बल, समाधान, संदेश, सुझाव व सांतवनाएं मिलती हैं। ये रिश्ते जीवन में संजीवनी की तरह होते हैं, इनसे ऊर्जा मिलती है, जो नारी को सुदृढ़ व सशक्त बनाते हैं।

पिता–पिता संतान के जीवन में फाउण्डेशन स्टोन की तरह है। जीवन विकास में पिता की अहम भूमिका है. वह पालक, पोषक एवं पथ प्रदर्शक है। पिता सम्बल, शक्ति, सुरक्षा एवं संवेदना का संगीत है। वह बच्चों का इन्तजार, आशा, विश्वास एवं उलझनों का समाधान है। पिता दर्पण की तरह बच्चों में अपनी छवि का दर्शन करता है। उस छवि को अपनी संतानों में उतारने की सम्पूर्ण कोशिश करता है। इसलिए तो पैतृक व्यवसाय के गुण बच्चों में अनायास ही उतर जाते हैं। पिता के आशीर्वाद से ही परिपक्व व्यक्तित्व का सम्पूर्ण खाका तैयार होता है। पिता शिक्षक ही नहीं, प्रेम का प्रशासक एवं प्रकाश पुंज है। उनका प्यार पाकर ही बचपन खिलता व निखड़ता है।

पति – पति नारी के जीवन में प्यार का सपना, त्योहारों की ताजगी, उत्सवों का उल्लास व जीवन की उमंग एवं इन्द्रधनुषी रंगों का एहसास है। सहगामी के रूप में पति के सम्बल से पत्नी का आत्मबल व मनोबल मजबूत होता है, वहीं उसके सपनों की ईमारत भी साकार करता है। वह पल–पल के सुख–दुख का साथी है। मध्यकालीन युग में तो सम्पूर्ण वित्तीय भार पति ही सम्भालता था। परन्तु आजकल वित्तीय प्रबन्धन पति–पत्नी दोनों मिलकर कर रहे हैं, तो इस परिस्थिति में पति घरेलू व्यवस्थाओं में अपना योगदान कर रहा है। पति के साथ चुनौतियों के अवसर आसान हो जाते हैं एवं हर समस्या का समाधान चुटकियों में हो जाता है। भौतिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त कोई धार्मिक अनुष्ठान पति–पत्नी के गठबंधन से ही पूर्ण होते हैं। राम–रावण युद्ध से पूर्व रामेश्वरम की स्थापना के दौरान रावण जब पूजा करवाने आया, तब बन्दी सीता को अनुष्ठान पूर्ण करवाने हेतु पुष्पक विमान में साथ लेकर आया था। पति खुशियों का एटीएम है। पति के बिना जीवन यात्रा अधूरी व अपंग लगती है। पति–पत्नी की सहभागिता व सहमति से ही गृहस्थी की गाड़ी सुचारू चलती है।

पुत्र – मां श्रद्धा है तो बेटा विश्वास है। संतान के रूप में मुझे पुत्र के सम्बन्ध में 'एक फूल दो माली' फिल्म का गाना स्मृति में आ रहा है–'मेरा नाम करेगा रोशन, जग में मेरा राज दुलारा।' पुत्र हो या पुत्री सन्तान के रूप में मातृत्व का आनन्द तो देते ही हैं, परन्तु पुत्र का विशेष महत्व हमारी संस्कृति में है, क्योंकि पुत्र वंश विस्तारक है, कुल प्रकाश, कुल तारक व कुल उद्धारक है। परिवार की जिम्मेदारियां, हमारी आशायें, अपेक्षायें व हमारे ख्वाबों को पूरा करने का सामर्थ्य रखता है। हमारे बुढ़ापे व असहाय अवस्था का सहारा है एवं मरणोपरान्त चिता को मुखाग्नि, पिण्डदान, श्राद्ध कर्म कर माता–पिता की आत्मा को शान्ति प्रदान कर उनका उद्धार करता है। पुम नामकात् नरकात् त्रायते यः सः पुत्र। इसी सन्दर्भ में हमारी संस्कृति में पुत्र न होने पर पुत्र को गोद लेने क प्रथा रही है।

भाई – भाई के बिना रक्षाबन्धन व भैया दूज के त्योहार अधूरे व बेजान हैं। रक्षा बंधन को हम संकल्प पर्व के रूप में मनाते हैं। रक्षा सूत्रों के माध्यम से हम भाई से हमारी रक्षा की कामना करते हैं। इतिहास में अनेकों उदाहरण है कि सगा भाई न होने पर भी जिनको भाई मानकर रक्षा सूत्र भेजा, उन भाइयों ने सूत्र का मान रखा है। चित्तौड़ की महारानी कर्णावती ने हूमायूं को, नागौर के राजा दिलीपसिंह की पुत्री पन्ना ने राजा रूद्र को एवं सिकंदर की पत्नी ने राजा पोरस को राखी भेजी थी। इतिहास में ऐसी घटनाएं नारी के जीवन में भाई की महत्ता को उजागर करती है। भाई बहन की हर खुशी व गम का साथी है। जब बहन पहली बार माँ बनने जाती है तो साध पूजन समय भाई के द्वारा ही गोदभराई की रस्म पूरी की जाती है। जब बच्चा पैदा होता है, तब भी भाई द्वारा लाया

गया पीला ओढ़कर ही बहन जलवा पूजती है। बच्चों की शादी के समय भी भाई बहन को चुनड़ी ओढ़ाकर भात भरने की रस्म को पूरा करता है, तब शादी में आगे की रस्में होती है। इतना ही नहीं जीवन की अंतिम विदाई के समय भी भाई द्वारा लाई गई चुनड़ी हो या दुशाला अर्थी पर रखा जाता है। वैसे भी तपस्या का प्रसंग हो या तीर्थाटन, तब भी भाई शगुन के रूप में कपड़े लाता है अथवा भेजता है। बहन के नूतन गृह का मांगलिक प्रवेश हो, तब भी सभी ससुराल पक्ष के परिवारजनों की ओढ़ावनी करता है। इस तरह जिंदगी के राह में फरिस्ते की तरह हर मौके पर भाई का साथ है। भाई पीहर की देहली का श्रृंगार है और बहन का मान है।

सखा – हमारा पौराणिक इतिहास इस रिश्ते का सबसे बड़ा साक्षी है। भगवान श्रीकृष्ण व द्रोपदी के सख्य भाव से सभी चिर–परिचित हैं। उन्होंने हर मुसीबत में द्रोपदी का साथ दिया। फिरोज गाँधी ने भी इन्दिरा गांधी के जीवन में उनकी माँ कमलाजी नेहरू जब बीमार थीं, तब उस समय बड़ा सहयोग किया था। तत्पश्चात् भले ही यह दोस्ती शादी में परिणित हो गई। दोस्ती का दामन बड़ा मजबूत होता है। दोस्त बड़ी से बड़ी मुसीबत से उबार देता है। जीवन में कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो केवल मित्र से शेयर कर सकते हैं। महिला हो या पुरुष, मित्र के बिना जीवन ठहरा–ठहरा सा लगता है।

गुरु – अक्षरारम्भ से लेकर सम्पूर्ण शिक्षा–दीक्षा में गुरु की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है परन्तु स्तम्भ की दृष्टि से हमारी संस्कृति में कुलगुरुओं की परम्परा रही है। हमारा इतिहास इसका साक्षी है। गुरु वशिष्ठ दशरथजी के शतानन्दजी जनकजी, कृपाचार्य कौरवों–पाण्डवों के कुलगुरु रहे हैं। महाभारत युद्ध में पाण्डवों के पारिवारिक स्तम्भ के रूप में श्रीकृष्ण ने गुरु की भूमिका में अर्जुन को जो उपदेश दिये वो आज भी पूरी मानवता के लिए वरदान स्वरूप है।

किसी भी इमारत को खड़ा करने के लिये जैसे पिलर जरूरी होते हैं, ठीक वैसे ही हमारे पारिवारिक ढांचे को सुखी, सुरक्षित व समृद्धशाली बनाने में उपरोक्त सभी स्तम्भों की नारी जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है।

विमला जाजू, पाली मारवाड़

राष्ट्रीय साहित्य समिति परिणाम

अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत साहित्य समिति की राष्ट्रीय स्तर की प्रथम प्रतियोगिता, निबंधन, लेखन 'परिवार के स्तंभ' के परिणाम निम्नलिखित हैं।

प्रथम–श्रीमती प्रेमलता सोनी, वृहत्तर कोलकाता। द्वितीय–श्रीमती कृतिका अजमेरा, भीलवाड़ा, दक्षिणी राजस्थान। तृतीय–श्रीमती विमला जाजू, पाली, पश्चिमी राजस्थान।

प्रथम प्रतियोगिता निबंध लेख 'परिवार के स्तंभ' के सांत्वना पुरस्कार परिणाम–

चतुर्थ–श्रीमती नेहा चांडक, पीली बंगा, उत्तरी राजस्थान। पंचम–श्रीमती स्वाति मानधना, बालोतरा, पश्चिम राजस्थान। षष्ठम–श्रीमती हंसा केला, भोपाल, पूर्वी मध्यप्रदेश। सप्तम–श्रीमती रूबी झंवर, किशनगंज, बिहार झारखंड। अष्टम–श्रीमती दिव्या मल्ल, भायंदर, महाराष्ट्र।

उपरोक्त पुरस्कारों के अतिरिक्त कई प्रतिभागियों ने बहुत अच्छे प्रयास किये और राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचे। पुरस्कार वितरण की नियत संख्या निर्धारित होने के कारण हम प्रथम प्रतियोगिता के चयनित प्रतिभागी सदस्यों के केवल नाम घोषित कर रहे हैं

श्रीमती संजना चांडक, महासमुंद, छत्तीसगढ़। श्रीमती मोनिका भराड़िया, कोटा, पूर्वी राजस्थान। श्रीमती मोनिका भूतड़ा, बल्लारी, कर्नाटक गोवा। श्रीमती छाया लोहिया, महाराष्ट्र। श्रीमती इष्टा राठी, हाथरस, पश्चिमी उत्तरप्रदेश। श्रीमती रंजना बिनानी, गोलाघाट, असम। श्रीमती निशा राठी, कूचबिहार, पश्चिम बंगाल। श्रीमती डॉ. रचना बजाज, इन्दौर, पश्चिम मध्यप्रदेश। श्रीमती शीला चांडक, चेन्नई, तमिलनाडु, पांडिचेरु, केरल। श्रीमती कृष्णा जांवधिया, राठ, हमीरपुर, मध्य उत्तर प्रदेश। श्रीमती कल्याणी लाहोटी, वाशिम, विदर्भ। श्रीमती सुनीता जैथलिया, जयपुर, पूर्वोत्तर राजस्थान।

राष्ट्रीय अध्यक्ष–श्रीमती आशा माहेश्वरी, महामंत्राणी–श्रीमती मंजू बांगड़, सा.स.प्रमुख–श्रीमती पुष्पा तोषनीवाल, समिति प्रभारी–मंजू मानधना, सहप्रभारी, अनुराधा जाजू, अर्चना लाहोटी, अरुणा मोदी, पुष्प धूत, सरोज मालपानी।

मौन व्रत

सालों पहले जब मां-बाबू भाई जी, भाभीजी, केके भाई सभी के साथ जब मैं देशनोक जाती थी (मेरा मायका राठी देशनोक से है) तो मुझे बहुत अच्छा लगता था। सिलसिला शादी के बाद आज भी जारी है। देशनोक में मां करणी जी का भव्य मंदिर है। मां करणी के त्योहारों में चांदनी चतुर्दशी (चौदस) का बड़ा महत्व है। इस दिन व्रत पूजा जोत आदि ली जाती है। मां भगवती के परम भक्तों में से एक मेरे केके भाईजी हर चतुर्दशी या चांदनी चौदस को मौन व्रत रखते हैं। मैं हमेशा सोचती हूं कि यह कितना मुश्किल होता होगा कि पूरा दिन चुप रहो। पेशे से वकील होकर भी एक महीने 1 दिन मौन उपवास में कभी उन्होंने बाधा नहीं आने दी।

कई दिनों से सोच रही हूं, यह मौन क्या है? यह चुप्पी क्या है?

क्या यह अलग-अलग है या एक। इस समुद्री मन में अनवरत हर घड़ी प्रतिक्षण विचारों की छोटी और बड़ी लहरें उठती ही रहती हैं। कभी खुशियों के तो कभी दुखों के अवसादों के ज्वार भाटे आते ही रहते हैं। जीवन रूपी जहाज बड़े-बड़े झंझावातों से, तूफानों से घिरा ही रहता है। यह मनुष्य मात्र के जीवन में अविरल घड़ी की सुई की तरह चला जाता रहता है।

कविवर गुरु टैगोर की कविता यही कहती दिखाई देती है-''सोमोय चोले जाई नित्येई नालिशे।''

सच है आज सोच रही हूँ केके भाई जी सिर्फ देखकर ही बिना कहे भी कितना कुछ बता दे रहे हैं। जब कभी कोई मुझसे यह कहता है कि आजकल भाईजी बहुत चुप रहते हैं, तो मैं सोचती हूं या मेरी समझ है, यह उनका मौन है, क्यंकि मौन एक ध्यान अवस्था है, चुप्पी एक क्रिया है।

मौन से हमें सकारात्मक ऊर्जा मिलती है, परेशानियों का हल स्वतः ही मिलता है। क्योंकि कुच देर शांत बैठ कर ही किसी समस्या का समाधान निकाला जा सकता है। देश के नेतृत्व ने मौन को अपनाकर बड़े-बड़े समाधान चुटकियों में निकालकर देशवासियों को दिखा दिया। हम साधारण व्यक्ति इतना ज्यादा बोलने के आदी हो चुके हैं कि हम मौन रहना ही भूल गए हैं।

हां बोलना अवश्य हमें संसार से जोड़ता है, समाज से जोड़ता है पर हम यह भी तो सोचे कि मौन से हम खुद से अपने आप से अपनी निजता से जुड़ते हैं। आज हम कोई मानसिक या शारीरिक व्याधियों से घिरा हुआ है। क्या हम सच में चाहते हैं हमारे अवसादों से निकलना? क्या हम सच में हमारे मन के मेन स्विच को, कंट्रोलिंग पॉवर को अपने हाथ में लेना चाहते हैं?

अगर हां तो हमें अपने आप से खुद को खुद से जोड़ना पड़ेगा। हमें कम से कम आधा घंटा मौन रहकर अपने विचारों को एक दर्शक बन, क्षेत्रज्ञ बनके विलग होकर देखना होगा। हमारे विचारों को। हमें खुद से प्रेम करना होगा। हमारी अंतरात्मा को टटोलना होगा। हमारे अस्तित्व जो परम पिता की असीम अनुकंपा से प्राप्त हुआ को नमन करना होगा। हमारे विगत कर्मों के फलस्वरूप जिस परिवार ने हमारे माता-पिता ने हमारे अस्तित्व को इस धरती पर उतारा है।

इस शरीर को बनाया है, उन अर्जित कर्मों को, हमारे ओपनिंग बैलेंस को बढ़ाना भी है। इस संसार को, धरती माता को जिसने हमें पाला है, हमें इसे लौटाना भी है। इसके लिए हम खुद को कछुए की तरह समेटे, कुछ पलों के लिए विचारों से मुक्त करें। हम स्वतंत्र हो मन में कुछ क्षण बिताए। शून्य की अवस्था में डुबकी लगाएं। सच है हमारे पुराणं ने शताब्दियों पहले सनातनी धर्म में मौनी अमावस्या की व्यवस्था कर दी थी। हमें इसे समझना होगा। हमारे देश के लिए हमारे समाज के लिए हमारे इस सुंदर मनुष्य योनि के कल्याण के लिए हमें कुछ तो मौन में बिताना पड़ेगा।

मातृत्व

कई दिनों से मन में कई विचार उमड़–घुमड़ रहे थे। मन में ख्याल आया क्यों न मातृत्व पर ही अपनी कलम से शब्दों को पिरोकर विचार मंथन कर लिया जावे। सबसे पहला सवाल मन में यह उठा कि मातृत्व क्या है। मातृत्व को परिभाषित कैसे किया जाये। मातृत्व कोई शब्द नहीं है यह नारी की संपूर्णता प्रदान करता हुआ प्यारा सा आतंरिक आलौकिक एहसास है। जब नारी को इस सम्पूर्णता का एहसास छूता है तो वो पुलकित हो उठती है। मातृत्व यानी माँ बनने का मीठा सा ईश्वरीय नजराना। जो नारी इस सम्पूर्णता को पा लेती है वह माँ रूपी वरदान से निहाल हो उठती है व विधाता के इस वरदान पर अपनी सम्पूर्ण ममता को लुटाने का प्रयास करती है। मातृत्व व ममता दोनों एक–दूसरे के पूरक व पर्याय हैं। आज नारी की सोच बदलती जा रही है। बड़ी उम्र में शादी करना जिससे कई तरह की शारीरिक परेशानियां आ जाती हैं और इसके चलते कई बार वह संतान प्राप्ति के सुख से वंचित हो जाती है या फिर आई वी एफ तकनीक से संतान प्राप्त करती है। इससे वो मां तो बन जाती है पर प्राकृतिक मातृत्व के सुख से वंचित हो जाती है यानी प्राकृतिक नियम के अन्तर्गत जब नारी मातृत्व को प्राप्त करती है तो जो सुख का एहसास स्त्री को प्राप्त होता है वह सुख अप्राकृतिक तरीकों से प्राप्त मातृत्व में नहीं होता है।

इसके अलावा आज की पीढ़ी के बड़ी उम्र में मां बनने के कारण शारीरिक कोमलता खत्म हो जाती है, जिसके चलते कई बार नोर्मल प्रसव के बजाय ऑपरेशन से प्रसव कराना पड़ता है। कई बार नारी प्रसव पीड़ा को सहन नहीं कर पाती तब भी ऑपरेसन से प्रसव कराना पड़ता है और तब दर्द सहकर नार्मल प्रसव के बाद अपनी संतान का मुख देखकर नारी को जो गुदगुदा सा मीठा सा अहसास प्राप्त होता है उससे वो वंचित हो जाती है। मातृत्व यानी मातृभाव यानी माता का बच्चे के प्रति भाव। जब एक स्त्री मां बनती है तो वह अलग ही अंदाज से पुलक उठती है। उसका शरीर इस सम्पूर्णता को प्राप्त कर निखरकर दमकने लगता है।

इसलिए किसी भी स्त्री की यह सोच की मुझे मां नहीं बनना है, अनुचित है, वे ईश्वरीय वरदान का अपमान कर रही हैं। एक बच्चे को जन्म देना यानी खुद का मान बढ़ाना भी है। अपनी इस जिम्मेदारी को समझते हुए स्त्री को सुरक्षित मातृत्व के लिए अच्छी तरह पौष्टिक खुराक लेनी चाहिए अपने चारों और एक स्वस्थ धार्मिक व हास्य मिश्रित वातावरण बनाए रखना चाहिए। हरदम स्वयं को खुश और स्वस्थ रखना चाहिए, क्योंकि अगर स्त्री होगी स्वस्थ तो संतान भी होगी स्वस्थ। यह सोच मन में रहेगी तो सुरक्षित मातृत्व होगा। स्त्री जब पहली बार अपने बच्चे का मुख देखती है और देखते ही एक मीठा भाव मन में उठता है यही मातृभाव है और सि मातृभाव या मातृत्व की कोई कीमत नहीं है यह अनमोल है। इसे सहेजना है।

ममता मोदानी, भीलवाड़ा

खुद को पहचान

हमारी पहचान क्या है? सिर्फ सुंदर और सुडौल दिखना। नहीं बिल्कुल नहीं।

आत्मविश्वास घमंड नहीं। अपने आप पर भरोसा, ध्यान, मन लगाकर कार्य पूर्ण करने का हौसला यही है आत्मविश्वास। वाणी में संयम सिर्फ मीठी बोली नहीं। सोच समझकर बोली गई बात, नाप तोलकर बोले गए शब्द, जहां बोलो, जहां नहीं वहां चुप रहना, समझने की शैली यही है वाणी में संयम।

आत्मनिर्भर किसी को नीचा दिखाना नहीं। अपने हुनर से अपनी पहचान, जरूरत पड़ने पर परिवार के साथ कदम मिलाकर आर्थिक सहयोग, कार्य छोटा हो या बड़ा करने में निपुणता दिखाये।

सहनशील कष्ट सहना नहीं। समय की अनुकूलता तो देखकर कुछ बातों को समय पर छोड़ कर फिर समजाइश दे। सिर्फ अपनी पहचान बनाने के लिए घर परिवार से मतभेद कर काम करना जरूरी नहीं है। प्यार संयम से भी सकते है और करवा भी सकते हैं। आत्मनिर्भरता की मिशाल, होती एक नारी। घर हो या बाहर हर कार्य में सक्षम होती नारी। सिर्फ आता है जोड़ना, घटाना तो जानती नहीं नारी। पर होती सब से न्यारी। होती सब से न्यारी।।

नीरा मल्ल, पुरुलिया

कृष्ण के अधीन नव ग्रह

जो जीव एक बार श्री कृष्ण के शरणागत हो जाता है, उसे फिर किसी ज्योतिषी को अपनी ग्रहदशा और जन्म कुंडली दिखाने की आवश्कता नहीं पड़ती।

फिर भी कई बार हम अपने हाथों में रंग-बिरंगी अंगूठियां पहनकर, जप, दान आदि करके हम अपने ग्रहों को तुष्ट करने में लगे रहते हैं। श्रीकृष्ण हमारे सखा हैं। आइये अब समझें कि किस ग्रह का हमारे सर्व समर्थ श्रीकृष्ण से कैसा संसारी नाता है।

जो मृत्यु के राजा हैं यम, वह यमुनाजी के भाई हैं और यमुनाजी हैं भगवान की पटरानी, तो यम हुए भगवान के साले, तो हमारे सखा के साले हमारा क्या बिगाड़ेंगे? सूर्य हैं भगवान के ससुर (यमुनाजी के पिता) तो हमारे मित्र के ससुर भला हमारा क्या अहित करेंगे? सूर्य के पुत्र हैं शनि, तो वह भी भगवान के साले हु, तो शनिदेव हमारा क्या बिगाड़ लेंगे।? चंद्रमा और लक्ष्मीजी समुद्र से प्रकट हुए थे। लक्ष्मीजी भगवान की पत्नी हैं और लक्ष्मीजी के भाई हैं चंद्रमा, क्योंकि दोनों के पिता हैं समुद्र। तो चन्द्रमा भी भगवान के साले हुए, तो वे भी हमारा क्या बिगाड़ेंगे?

बुध चंद्रमा के पुत्र हैं, तो उनसे भी हमारे प्यारे का ससुराल का नाता है। हमारे सखा श्रीकृष्ण बुध के फूफाजी हुए, तो भला बुध हमारा क्या बिगाड़ेंगे?

बृहस्पति और शुक्र वैसे ही बड़े सौम्य ग्रह हैं, फिर ये दोनों ही परम विद्वान हैं इसलिए श्रीकृष्ण के भक्तों की तरफ इनकी कुदृष्टि कभी हो ही नहीं सकती। राहु, केतु तो बिचारे जिस दिन एक से दो हुए, उस दिन से आज तक भगवान के चक्र के पराक्रम को कभी नहीं भूले।

भला वे कृष्ण के सखा की और टेढ़ी नजर से हिम्मत जुटा पाएंगे? तो अब बचे मंगल ग्रह। ये तो क्रूर ग्रह, लेकिन ये तो अपनी सत्यभामा जी के भाई हैं। चलो, ये भी निकले हमारे प्यारे के ससुर वाले। अतः श्रीकृष्ण के साले होकर मंगल हमारा अनिष्ट कैसे करेंगे? इसलिए श्रीकृष्ण के शरणागत को किसी भी ग्रह से कभी भी डरने की जरूरत नहीं। संसार में कोई चाहकर भी अब हमारा अनिष्ट नहीं कर सकता। इसलिए निर्भय होकर डंके की चोट पर श्रीकृष्ण से अपना नाता जोड़े रखिए। हाँ, जिसने श्रीकृष्ण से अभी तक कोई भी रिश्ता पक्का नहीं किया है, उसे संसार में पग-पग पर खतरा है। उसे तो सब ग्रहों को अलग-अलग मनाना पड़ेगा। इसलिए ठाकुरजी की शरण रहे और उनकी कृपा से ही संभव होगा के अपने प्रभु पे आसक्ति रहे और अन्य जगह नहीं भटके।

वृक्ष लगाओ राष्ट्र बचाओ, जीवन को खुशहाल बनाओ

इसी भावना के परिप्रेक्ष्य में अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन के आह्वान पर ग्रामीण विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति के माध्यम से सभी प्रदेशों में जिलों में तथा स्थानीय संगठनों द्वारा वृहद वृक्षारोपण करके स्वतंत्रता दिवस उल्लास पूर्वक मनाया गया। पेड़ पौधे प्रकृति की अनमोल धरोहर ही नहीं अपितु स्वस्थ जीवन जीने के लिए भी पेड़ लगाना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि पेड़ पौधे हमें शुद्ध वायु प्रदान करते हैं। वातावरण को शुद्ध रखते हैं और आज कोविड-19 की अत्यंत कठिन परिस्थितियों में तो इसका महत्व और बढ़ गया है, क्योंकि एलोवेरा, तुलसी, आंवला, गिलोय जैसे पौधों के औषधीय गुण मनुष्य की इम्युनिटी बढ़ाने में भी पूर्णतया सहायक हैं अतः इसी उद्देश्य से संगठन के सभी बहनों द्वारा इस कार्य को सफलतापूर्वक फलीभूत किया गया और यह संकल्प भी लिया गया कि भविष्य में भी वर्षा ऋतु के इस अनुकूल मौसम में सामूहिक प्रयत्नों के माध्यम से इस अभियान को चरितार्थ किया जाएगा। 15 अगस्त राष्ट्रीय पर्व के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती आशा माहेश्वरी तथा राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती मंजू बांगड़ ने देश के वीर सपूतों तथा शहीदों को नमन करते हुए समाज के सभी वर्गों से स्वदेशी अपनाओ तथा देश को आत्मनिर्भर बनाओ की भी अपील की।

पूर्वी उत्तरप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

रेन वॉटर हार्वेस्टिंग एवं जैविक खाद बनाने की कार्यशाला आयोजित

व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति (गुरुकुल)–प्रदेश में 'राखी बनाने की विधि' विषय पर कार्यशाला सम्पन्न हुई। लाईव कुकिंग क्लासेस मिस निकिता सुधानी ने ली तरह–तरह के व्यंजन बनाने की विधि बताई।

ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति–डॉ. अविनाश गुप्ता ने रेन वाटर हार्वेस्टिंग के बारे में एवं रसोई बगिया में श्रीमती साधना मेलानी ने जैविक खाद बनाने की विधि बताई। 15 अगस्त को देश के नाम एक संदेश देश भक्ति गीतों पर कार्यक्रम रखा।

स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति– स्थानीय संगठनों ने रामायण पर आधारित हाउजी गेम खिलाया एवं कोरोना के बढ़ते प्रभाव को ध्यान में रखते हुए परिवारों में बुजुर्गों को स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने के लिये योग एवं प्राणायाम की सलाह दी।

महिला अधिकार सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति – 'सखी' से जुड़कर महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ा उत्कर्ष का आयोजन हुआ। नजर नजरिया, नजराना में प्रतियोगिता में प्रदेश को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। प्रीति भट्टर ने बहुत ही सुन्दर एवं सरल तरीके से महिलाओं को अधिकार व सुरक्षा के बारे में जानकारी दी।

बाल एवं किशोरी विकास समिति – गुड टच, बेड टच विषय पर मोटिवेशनल सेमिनार हुआ, जिसमें मुख्य वक्ता मधु खेमानी रहीं इसमें 5 से 14 वर्ष की किशोरियों ने भाग लिया। ''जानो गीता बनो विजेता'' कार्यक्रम हुआ। 23 अगस्त को आनलाइन परिचय सम्मेलन हुआ। मुख्य अतिथि मंजू बांगड़ व विशिष्ट अतिथि भूतपूर्व अध्यक्ष शोभा सादानी रही।

साहित्य समिति–सामाजिक चिन्तन मनन – राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता हर सीट हाट सीट में वाराणसी की ऋतु धुत को सांत्वना में द्वितीय एवं लखीमपुर की ऋचा राठी तृतीय रही। ''जब लोग हंस पड़े'' द्वितीय प्रतियोगिता की तैयारी चल रही है।

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति – अपने अपने राम, पूजा थाल सजाओ, मेहंदी रचे हाथ एवं नृत्य आदि की प्रतियोगिता आयोजित हुई। आभूषित का रंगारंग कार्यक्रम हुआ। जन्माष्टमी, बछबारस, गणेश चतुर्थी, ऋषि पंचमी एवं राधा अष्टमी त्योहार लोगों ने अपने–अपने घरों में मनाया। श्रावण माह में रुद्राभिषेक एवं सोमवती अमावस्या पर सुंदर कांड एंव हनुमान चालीसा का पाठ किया। राम मंदिर निर्माण हेतु भूमिपूजन के अवसर पर सभी ने घरों में दीपक जलाकर उत्सव मनाया।

उषा झंवर–अध्यक्ष ❊ रंजना मूंदड़ा–सचिव

पश्चिमी उत्तरप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

व्यक्तित्व विकास समिति–12 शहरों द्वारा सावन–संबंधित नृत्य गायन, रंगोली व विभिन्न कलात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन। 21 शहरों द्वारा जूम मीटिंग की गई। प्रादेशिक प्रतियोगिताओं, अचार सज्जा व बेस्ट आउट ऑफवेस्ट का आयोजन।

ग्राम विकास समिति 3 शहरों द्वारा अपना आश्रम में गोविंद के भोजन की व्यवस्था, शहीद पुलिसकर्मियों को श्रद्धांजलि। श्रीमती रेखाजी माहेश्वरी कोरोना वारियर्स सम्मान से सम्मानित। 7 शहरों द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर वृक्षारोपण, देशभक्ति गीत, पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन।

स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति कोरोना

बचाव हेतु प्रदेश स्तर पर विज्ञापन प्रतियोगिता आयोजित, एवं डॉ. काबरा द्वारा बचाव के उपाय।

बाल एवं किशोरी विकास समिति प्रोग्राम के अंतर्गत मेहंदी प्रतियोगिता आयोजित। 32 किशोरियों की सहभागिता। प्रादेशिक पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित।

विवाह संबंध सहयोग समिति प्रादेशिक परिचय सम्मेलन 'स्वस्तिका' का आयोजन 91 युवक-युवती प्रत्याशियों ने परिचय दिया। मुख्य अतिथि विमला साबू का वक्तव्य 315 बहनें उपस्थित थीं। तीन दिवसीय कार्यशाला बी स्मिार्ट विद स्मार्ट फोन आयोजित। 24 बिंदुओं पर चर्चा 750 बहनों की सहभागिता।

साहित्य एवं सामाजिक चिंतन समिति-प्रादेशिक बैठक 'अमोलिका' आयोजित। कवित्री सम्मेलन 'नव पल्लव' आयोजित। मुख्य अतिथि पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती शोभा सादानी का वक्तव्य 14 प्रविष्टियां प्राप्त 110 बहनें उपस्थित। हर सीट हॉट सीट राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता में सुमन मेनानी को उत्तरांचल में प्रथम व अलका शिकची को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त। राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता में श्रीमती इष्ठा राठी राष्ट्रीय स्तर तक पहुंची।

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति-प्रादेशिक तीज उत्सव 'अभिरुपा' का आयोजन। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी, मंजू बांगड़, किरण लड्ढा, शशि नेवर ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। 207 बहनें उपस्थित। प्रादेशिक कार्यक्रम 'प्रनायिता' आयोजित। कान्हा श्रृंगार प्रतियोगिता। 44 प्रविष्टियां प्राप्त निवृत्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगरानी द्वारा बहनों का मार्गदर्शन। 210 बहनें उपस्थित। 28 शहरों द्वारा तीज में जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में रंगारंग कार्यक्रम किए गए। बछ बारस पर 6 शहरों ने 7100 की धनराशि प्रदान की।

महिला अधिकार सुरक्षा एवं सशक्तिकण समिति-प्रादेशिक अव्युक्ता नाटिका का मंचन स्वावलंबी योजना के अंतर्गत 3 महिलाओं को रोजगार प्रदान किए गए।

विशेष-गाजियाबाद, हापुड़, सहारनपुर महिला संगठनों द्वारा श्रीमती कांता गगरानी, विनिता राठी, मंजू हुरकट, मोनिका माहेश्वरी का आतिथ्य एवं स्वागत किया गया।

मंजू हुरकट प्रदेश अध्यक्ष ❊ मोनिका माहेश्वरी सचिव

हरियाणा पंजाब प्रदेश महिला संगठन

विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन, पुरुषोत्तम मास में भागवत कथा

बाल विकास एवं किशोरी विकास समिति के अन्तर्गत मोली से राखी बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया व 10 अगस्त को अरविंद साबू द्वारा गीता ज्ञान तरंग में गीता के ज्ञान की गंगा प्रवाहित हुई।

विवाह सम्बन्ध सहयोग समिति के अन्तर्गत हरियाणा पंजाब प्रदेश में गठबंधन से 1 रिश्ता करवाया गया और 30 अगस्त को प्रदेश में परिचय सम्मेलन का सफल आयोजन। सामाजिक चिंतन एवं मनन समिति के अन्तर्गत सत्तू सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन एवं प्रदेश में हिमाचल के बद्दी में नया संगठन बनाया गया।

स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति के अन्तर्गत मास्क वितरण किए गए। व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति के अंतर्गत श्रृंगार प्रतियोगिता में महिलाओं को अपनी सुन्दरता उभारने के लिए प्रेरित किया गया। पर्व एवं सांस्कृतिक समिति के अन्तर्गत राखी कार्यशाला के साथ

तीज का सिंजारा मनाया गया।

ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति के अन्तर्गत राखी कार्यशाला 15 अगस्त पर विभिन्न राज्यों की वेशभूषा से सुसज्जित बहनों ने भक्ति रस, वीर रस, प्रेम रस, हास्य रस की स्किट प्रतियोगिता में भाग लिया। महिला सशक्तिकरण सुरक्षा समिति के अंतर्गत सीखो सिखाओ कार्यशाला में महिलाओं को हेयर स्टाइल सिखाई गई और उत्कर्ष में प्रीति भट्टड़ द्वारा महिलाओं को सशक्तिकरण की जानकारी, नजर, नजराना, नजरिया प्रतियोगिता में प्रदेश का प्रथम स्थान।

कम्प्यूटर नेटवर्किंग एवं एडवांस तकनीक शिक्षा समिति–माइक्रोसॉफ्ट टीम्स पर शिवपुराण कथा का संचालन, कार्ड, वीडियो और जूम का टीम द्वारा बखूबी संचालन।

सौ. सुमन जाजू, प्र.अ. ❊ सौ. सीमा मूंदड़ा, प्र.स.

मध्य उत्तरप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

अपने लिए जिए तो क्या जिए जूम पर

व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति– 17 एवं 18 अगस्त को दो दिवसीय सुनियोजन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि श्रीमती मंजू बांगड़ ने सकारात्मक कैसे बनें पर प्रेरणादायक उद्बोधन दिया। वक्ता श्रीमती ज्योति राठी ने निर्माण से निखार विषय पर वक्तव्य दिया। श्रीमती उर्वशी साबू ने इंटरनेट के शिष्टाचार पर अत्यंत ज्ञानवर्धक मार्गदर्शन किया।

विशिष्ट वक्ता श्रीमती नम्रता बियाणी ने प्रशिक्षण की गुणवत्ता तथा नेतृत्व के गुणों पर विचार व्यक्त किए। मुख्य वक्ता एवं पूर्व अध्यक्ष श्रीमती गीता मूंदड़ा ने ''अपने लिए जिए तो क्या जिए'' इस पर संगीत के सात सुरों के द्वारा बहुत ही बहुमूल्य विचार देकर मार्गदर्शन किया। विशिष्ट वक्ता श्रीमती शैला कलंत्री ने श्रृंखलाबद्ध संगठन के बारे में बहुत ही सहज ढंग से अवगत कराया। उरई माहेश्वरी महिला मंडल में 12 अगस्त को सकारात्मक सोच कैसे रकें पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम कर बहनों को पुरस्कृत किया।

ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति– 15 अगस्त को प्रदेश के सभी जिलों की बहनों ने अपने घरों में वृक्षारोपण किया और प्रकृति का महत्व समझाया। जलोन महिला मंडल ने सेनेटाइजर, मास्क एवं आर्सेलर 30 बाटें।

मैनपुरी महिला मंडल द्वारा 15 अगस्त को दो

बेटियों ने देशभक्ति पर नृत्य कर मध्य उत्तर प्रदेश में भेजा। बछ बारस के दिन गायों को गुड़ एवं रोटियां खिलाकर गायों की पूजा की।

राफेल विमान को लाने वाले मैनपुरी के देवपुरा निवासी विंग कमांडर दीपक चौहान का अभिनंदन समाज द्वारा किया गया।

स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति–1 अगस्त को हुए कार्यक्रम तीजो रो रंग परिवार के संग में विशिष्ट अतिथि श्रीमती विमला साबू ने परिवार का महत्व बताते हु रिश्तों की रीत अपनों से प्रीत के द्वारा परिवार में रहने की सलाह दी।

महिला अधिकार सुरक्षा एवं सशक्तिकरण – अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत 3 प्रदेशों द्वारा मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद प्रतियोगिता नजर, नजरिया, नजराना का आयोजन हुआ। जिसमें दिए हुए

विषय के दोनों पहलू पर 1.30 मिनट का वीडियो बनाकर भेजनी थी। प्रदेश से 12 वीडियो राह्रष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए भेजे गए। इसमें कानपुर जिले के माहेश्वरी महिला मंडल से 3, उरई महिला मंडल से 1 वीडियो चयनित हुई और कानपुर की श्रीमती अरुणा गांधी एवं श्रीमती एकता गांधी की जोड़ी ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर जिले का गौरव बढ़ाया। वक्ता श्रीमती प्रीति भट्टर ने महिलाओं के कानूनी अधिकारों पर विस्तृत जानकारी से अवगत कराया।

बाल एवं किशोरी समिति के अंतर्गत उरई एवं झांसी महिला मंडल के बच्चों ने कलावे से राखी बनाई। पेंसिल स्केच बनाकर बच्चों ने भी सभी का मन मोह लिया। बच्चों की ड्राइंग प्रतियोगिता के अंतर्गत उन्हें राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय फूल, राष्ट्रीय पक्षी रंगों का प्रयोग कर बनाना था। 19 अगस्त को स्वतंत्रता संग्राम के नायक एवं नायिका बन फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता भी स्वरचित प्रतियोगिता भी बच्चों द्वारा प्रस्तुत की गई।

विवाह संबंध सहयोग समिति पूर्वी एवं मध्य उत्तरप्रदेश द्वारा आयोजित परिचय सम्मेलन के अंतर्गत 23 अगस्त को ऑनलाइन परिचय सम्मेलन हुआ, जिसमें मध्य उत्तरप्रदेश से 35 और कानपुर जिला से 7, झांसी से 7 बायोडाटा प्रस्तुत हुए।

साहित्य समिति–26 अगस्त को प्रदेश द्वारा अंतर्मन मनन पाठशाला आयोजित की गई। समाज के मुख्य वक्ताओं श्रीमती अनुराधा जाजू द्वारा लेखन शैली में किस प्रकार सुधार लाएं और उसे किस प्रकार निखारा जा सकता है। श्रीमती निर्मला भुराड़िया द्वारा कथा साहित्य विमर्श बताया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे तीज क्वीन, लाड लडाओ रे, वतन मेरे वतन आयोजित की गई। बहनों ने अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का प्रदर्शन कर पुरस्कार प्राप्त किए।

उरई की बहनों द्वारा कई रंगारंग कार्यक्रम हुए। बिंदी सजाओ, नैपकिन होल्डर नान फायर डिश कडढ़ा सजाओ पंखा सजाओ प्रतियोगिता रखी गई। 12 अगस्त को जन्माष्टमी पर सबने अपने–अपने लाला की झांकी सजाकर एवं नृत्य प्रस्तुत कर सबका मनमोहलिया।

मैनपुरी महिला मंडल द्वारा तीज के उपलक्ष पर चार बहुओं ने पायल पर नृत्य कर मध्य उत्तरप्रदेश में भेजा। कजरी तीज पर नीमाड़ी सजाओ प्रतियोगिता के साथ 16 श्रृंगार करते हुए सिंदूर लगाते हुए का वीडियो बनाया। खूब धूमधाम से जन्माष्टमी पर घर–घर में झांकी सजाई गई और नंदोत्सव मनाया गया।

झांसी मंडल द्वारा को राम जन्म भूमि पूजन पर 151 दियो से दीपोत्सव मनाया गया। 22 अगस्त को इको फ्रेंडली गणपति की होममेड मोदक, मिठाई से पूजा व लगातार आठ दिन आरती की। कानपुर, उरई, झांसी, मैनपुरी, राठ, जलोन आदि सभी जिलों में कृष्ण जन्माष्टमी एवं गणेश चतुर्थी जूम एप द्वारा झांकी सजाकर धूमधाम से मनाया गया।

प्रीति तोषनीवाल–अध्यक्ष ❊ सीमा झंवर–सचिव

दिल्ली प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

'इंद्रधनुषी सतरंगी' कार्यक्रम सम्पन्न

सावन भादो के बरसते मास में अध्यक्ष श्यामा भांगड़िया एवं सचिव प्रभा जाजू की सहभागिता से दिल्ली प्रदेश के सभी क्षेत्र सावन का सिंजारा, कृष्ण भक्ति, स्वाधीन भारत की शक्ति, ''रैंप का आत्मविश्वास'', परिधानों के सौंदर्य, शहनाई की गूंज से भरे तरंगित रहे। 61 दिन की लगातार जूम कार्यशालाओं को गोल्डन बुक ऑफ रिकार्ड्स से सम्मानित किया गया।

सोलह श्रृंगार से सजी–धजी बहनों के साथ तीज का सिंजारा युगल नृत्यों की फुहारों के साथ मनाया गया। आर्थिक समृद्धि ही विकास का दर्पण है विषय पर बड़ी ही

सशक्त वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित थी। माननीय निर्णायक मंडल में निवृत्तमान अध्यक्ष कल्पना गगरानी एवं शोभा सादानी उपस्थित थे।

आयोजन का शुभारंभ सौ. मंजू बांगड़, पूर्वाध्यक्ष विमला साबू के कर कमलों से हुआ। राष्ट्रीय पर्व समिति प्रभारी पुष्पा सोमानी, उत्तरांचल प्रभारी प्रमिला चौला, उपाध्यक्ष किरण लड्ढा ने शब्द बूंदों से सभा को भावों से भिगोया। विमला साबू ने युगल जोड़ी के रिश्तों के निर्वाह पर बड़ी ही सुंदर प्रेरणा दी। रिश्तों को सींचने के गुरु मंत्र सिखाएं।

जन्माष्टमी का आयोजन लाला के लिए फलाहारी भोजन की प्रतियोगिता से हुआ। हमें एक से बढ़कर एक नन्द-नन्दन का जाप करते प्रेम के रस से पगे फलाहारी भोजन तैयार करते हुए वीडियोस मिले हैं। फलाहारी वीडियोज ने ये दर्शा दिया है कि कृष्ण हमारे जीवन की श्वास-श्वास में बसते हैं। यही महाप्रसाद इस प्रतियोगिता के रूप में दिल्ली प्रदेश को मिला है, जिसके कण-कण में लाला के जन्मोत्सव का अद्वितीय स्वाद, सुगन्ध और रंग था।

22 जुलाई को फैशन शो ने माहेश्वरी परिवारों के होनहार, मेधावी, कला प्रिय प्रतिभाओं को रैम्प प्रदान किया। पूरा शो 3 श्रेणियों में विभाजित था। प्रथम श्रेणी 4-8 वर्ष के आयुवर्ग में नाइट वेयर में बच्चों की लोरिया, गीत, 'मीठा अंगड़ाईयां', श्लोक टिमटिमाते हुए तारों क तरह चमक उठे। द्वितीय श्रेणी 8-14 वर्ष के आयु वर्ग की फ्लोरल पेंट की प्रतियोगिता वेली फ्लावर्स बन गई थी, जिसमें नाना विध फूल खिल उठे और पूरे वातावरण को महका गए।

इस शो को अपनी उपस्थिति से चमकाया बाल एवं किशोरी विकास समिति की राष्ट्रीय समिति प्रभारी निर्मला मारू, उत्तरांचल की उपाध्यक्ष किरण लड्ढा, राष्ट्रीय संगठन मंत्री शैला कलंत्री ने। सभी की ओजस वाणी ने बच्चों को खूब प्रेरित किया। आयोजन का संचालन सचिव प्रभा जाजू, समिति संयोजिका सपना कोठारी, सह संयोजिकाएं श्रीप्रिया थिरानी, इंदु माहेश्वरी ने बड़ी मस्ती से किया।

24 जुलाई के दिन विवाह योग्य युवक-युवतियों के आपसी परिचय के लिए ऑनलाइन परिचय सम्मेलन आयोजित था जिसमें 61 कैंडिडेट्स ने स्वयं का परिचय दिया। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री मधु बाहेती, विशिष्ट अतिथि उपाध्यक्ष, सौ. किरण लड्ढा, शर्मिला राठी, शशि नेवर, मंजू सोमानी ने बड़े ही सुलझे हुए विचारों से रिश्तों की डोरियां बांधने की शुभकामनाएं दी। आयोजन का संचालन सचिव प्रभा जाजू, समिति संयोजिका छाया मूंधड़ा, उषा कालानी, प्रीति कल्याणी, बबिता समदानी, मीना बजाज, मनोज सोनी, अलका बियानी, पूनम तोषनीवाल ने किया। इस आयोजन में 170 परिवार जुड़े और सभी अभिभावकों ने कार्यक्रम की अत्यंत सराहना की। प्रदेश ने जरूरतमंद माहेश्वरी छात्र के विद्यार्जन के लिए 80 हजार की राशि जुटाई।

श्यामा भांगड़िया-प्र. अध्यक्ष ❊ प्रभा जाजू-प्र. सचिव

तेलंगाना आंध्र प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

12500 हनुमान चालीसा के पाठ

ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति– इस समिति के अंतर्गत प्रत्येक घर में सावन की रिमझिम बूंदों एवं प्रकृति की हरियाली छवि के साथ मंचिर्याल जिले के प्रत्येक घर में तुलसी के पौधे लगाए गए। वरंगल जिले में हरियाली अमावस पर अनाथ आश्रम में दूध के पाउडर एवं सेरेलेक के डब्बे वितरित किए गए। मान कोटा जिले में 400 पैकेट खाने का वितरण हुआ।

बाल विकास एवं किशोरी विकास समिति–इस समिति के अंतर्गत रमेशजी परतानी का वेबीनार आयोजित किया गया। अपने व्याख्यान में परतानीजी ने आध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से माता–पिता की भूमिका का समझाया। इस कार्यक्रम में हमारी संगठन मंत्री शैला कलंत्री, उपाध्यक्ष कलावती जाजू, दक्षिणांचल संयुक्त मंत्री पुष्पा तोषनीवाल एवं 500 लोग जुड़े। विजय नगर जिले में बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ने के लिए शिव पंचाक्षर स्तोत्र गायन की प्रतियोगिता रखी गई।

स्वाध्याय एवं आध्यात्मिक समिति – इस समिति के अन्तर्गत विजयनगरम जिले में सावन में शिवलिंग बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई, सद्गुरु रमेशजी जैन का वेबीनार हैदराबाद में आयोजित हुआ। वरंगल जिले में 9 परायण का पाठ जूम पर हुआ। मान कोटा जिले में 12500 हनुमान चालीसा का पाठ एवं 50 किताबें ओम नमःशिवाय की लिखी गई।

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति – मंचिर्याल जिले की सभी बहनों ने सावन की तीज पर एक बहुत सुंदर वीडियो बनाया। मान कोटा जिले में सावन क्विन, राजस्थानी वेशबूषा, क्विज जीनियस इत्यादि भगवान् शिव के प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं रखी गई। विशाखापट्टनम जिले में तीज के अवसर पर बहुत सुंदर वीडियो बनाया, जहीराबाद महिला मंडल ने बड़ी तीज का सिंजारा जूम पर आयोजित किया।

साहित्य चिंतन मनन समिति–इस समिति के अंतर्गत 23 जुलाई को राष्ट्रीय प्रतियोगिता हर सीट हाट सीट प्रश्नावली कार्यक्रम में प्रदेश की रश्मि बागड़ी को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 24 एवं 25 अगस्त को ज्ञान गंगा कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर कलावतीजी एवं पुष्पावतीजी के अथक प्रयास से सम्पन्न हुआ। निवृत्तमान अध्यक्ष कल्पना गगरानी ने नेतृत्व कौशल विकास, सौ. लता लाहोटी ने संविधान, कलावती जाजू ने संगठन में एकता एवं श्रृंखलाबद्ध संगठन का परिचय, पुष्पा ने समय अनुकूल कार्यक्रम की महत्ता, शोभाजी ने रिपोर्टिंग की जानकारी सभी बहनों को दी, बहुत ही ज्ञानवर्धक यह शिविर रहा।

साहित्य एवं सामाजिक चिंतन मनन समिति–इस समिति के अन्तर्गत आंध्रप्रदेश एवं मुंबई प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में साहित्य का इंद्रधनुष कार्यक्रम सात रंगों की छटा बिखेरते हुआ सम्पन्न हुआ। 7 तरह के कार्यक्रम जैसे जीवन में साहित्य का नाट्य मंचन, साहित्य की रंगोली, राष्ट्रीय कवियों द्वारा काव्य पाठ, कविता रचने में सभी बहनों को भाग लेने का अवसर साहित्य प्रश्नावली

का आयोजन, बच्चों को पुरस्कार वितरण, इस तरह के कर्यक्रम सह प्रभारी अनुराधाजी जाजू द्वारा संचालित किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्तिति अध्यक्षा आशा माहेश्वरी, मंत्री मंजू बांगड़, मां रत्नीदेवी काबरा, कल्पना गगरानी, लता लाहोटी, शैला कलंत्री, मंजू मानधना, कलावती जाजू, पुष्पा तोषनीवाल आदि सभी ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सौ. उर्मिला साबू, प्र.अ. ❊ सौ. रजनी राठी, प्र.स.

महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

कार्यक्रमों की 'बौछार' जूम पर

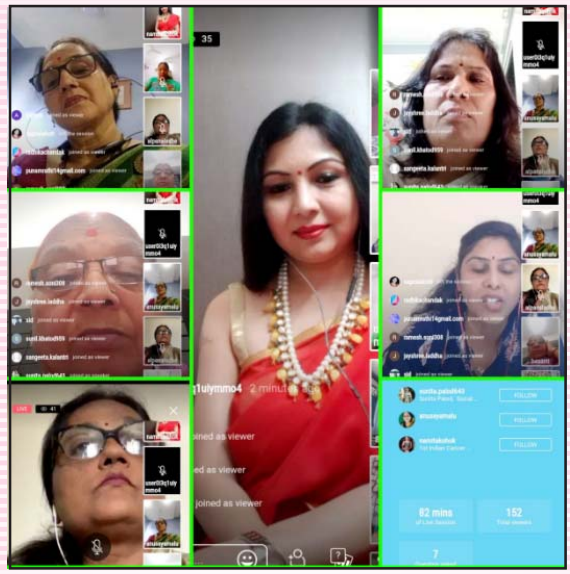

व्यक्तित्व विकास समिति के अंतर्गत 22 जुलाई छोटी तीज के सिंझारे के अवसर पर स्वाद माधुरी यह वेबनार लिया गया।

कांताज किचन फैम, प्रसिद्ध शेफ आ. कांताजी मालपानी, जयपुर निवासी इन्होंने बहुत ही सरल अंदाज में आज स्वादिष्ट मिठाईयां बनाना सिखाया। छैना, काजू, नारियल की अलग-अलग प्रकार की काफी मिठाइयां, सहज अंदाज में सिखाई और सिंझारे की मिठास ओर बढ़ा दी।

प्रमुख अतिथि के रूप में संरक्षक मां रत्नीदेवी काबरा, अपने आशीर्वचन देने उपस्थित थी। व्यक्तित्व विकास समिति सहप्रभारी सौ. शोभा भूतड़ा और निवृत्तमान अध्यक्ष सौ. ज्योत्सना लाहोटी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थी। 6 अगस्त ऑनलाइन तीज मानस पूजा, देखो हमने देखा था ऑनलाइन तीज पूजा का सपना। हमारी सहेली सौ. मीनू झंवर का तहेदिल से धन्यवाद करती हूं। उनके सहयोग से इतने सुंदर तरीके से पूरे विधि के साथ घर बैठे पूजा कर सके। ऐसा प्रतीत हो रहा था, हम सब साथ बैठे पूजा कर रहे हैं। हमारे इस ऑनलाइन पूजा में पारंपरिंग रंग भरन के लिए हमारी आध्यात्मिक समिति संयोजिका सौ. लीलाजी करवा एवं उनकी पूरी टीम, हमारी कम्प्यूटर संयोजिका सौ. सपना लाहोटी एवं उनकी पूरी टीम। सबका पूरा सहयोग रहा।

भारत वर्ष से जूम एवं फेसबुक लाइव पे ऑनलाइन करीब 375 बहनें जुड़ी थी। पू. राष्ट्रीय अध्यक्ष लता लाहोटी, संयुक्त मंत्री पुष्पा तोषनीवाल, कार्यालय मंत्री मधु बाहेती जिन्हंने अंत में महाराष्ट्र प्रदेश के इस प्रयास को सराहा। 7 अगस्त शुक्रवार महिला अधिकार, उत्थान, सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति के अंतर्गत आयोजित जागृति इस झूम कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आ. गिरिराजजी सारड़ा, उषाजी मेहता, स्वातिजी काबरा। इनके अनमोलन मार्गदर्शन ने महिलाओं को प्रेरित किया। प्रमुख वक्ता एवं मार्गदर्शक एंड कोमलजी करवा। इनका प्रसार माध्यम और महिलाएं इस विषय पर अभ्यासपूर्ण भाषण हुआ। जिसने महिलाओं को आत्मचिंतन करने पर मजबूर कर दिया। राष्ट्रीय संगठन मंत्री शैला कलंत्री ने कार्यक्रम को बहुत उपयोगी बताया। दीपाजी बियाणी ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी।

सौ. अनुसूया मालू ❊ सौ. सुनीता पलोड़, प्रदेश सचिव

मुंबई प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

ज्ञान गंगा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

मुंबई प्रदेश द्वारा स्वाध्याय एवं अध्यात्म समिति के अंतर्गत 7 जुलाई 2020 को श्री श्री रविशंकरजी की शिष्या श्री कविता एवं श्रीमती सुनीति दम्मानी द्वारा सीक्रेट ऑफ हेल्थ एंड हैप्पीनेस विषय पर चर्चा रखी गई। राष्ट्रीय प्रभारी श्री अरुणा लड्ढा, आंचलिक सह प्रभारी सुनीता तापड़िया ने विचार व्यक्त किए। 12 से 14 जुलाई को दक्षिणांचल आंचलिक कार्यशाला भी स्मार्ट विथ स्मार्ट फोन समिति द्वारा सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम प्रमुख गिरिजा सारड़ा, राष्ट्रीय प्रभारी उषा मेहता, दक्षिणांचल सहप्रभारी स्वाति काबरा, मुख्य वक्ता एडवोकेट प्रीति भट्टड़ सभी ने अपने विचारों से अवगत कर कई नई जानकारियां दी।

25 जुलाई स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति के अन्तर्गत समाधान कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि समिति प्रमुख कलावती जाजू, दक्षिणांचल सहप्रभारी डॉ. पूर्णिमा सारड़ा, मुख्य वक्ता डॉ. मृदुला सारड़ा, डॉ. आकांक्षा राठी ने वक्तव्य रखे। दोनों डॉक्टरों ने महिलाओं की समस्याओं पर सचेत रहना व उपचार कैसे हो, पर अच्छे से सभी को बताया। 13 अगस्त को साहित्य समिति के अन्तर्गत मुंबई प्रदेश व आंध्र तेलंगाना प्रदेश ने इंद्रधनुष कार्यक्रम संयुक्त रूप से मिलकर किया। सात रंग के इंधधनुष की तरह सात कार्यक्रम रखे गए। समिति प्रमुख पुष्पा तोषनीवाल, राष्ट्रीय प्रभारी मंजू मानधना, आंचलिक सहप्रभारी डॉ. अनुराधा जाजू की उपस्तिति के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी, महामंत्री मंजू बांगड़, मधु बाहेती, ज्योति राठी, शैला कलंत्री, मां रत्नीदेवी काबरा, लता लाहोटी, कल्पना गगरानी, कलावती जाजू की गरिमामय उपस्थिति रही। परिवार के स्तंभ निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं का शाब्दिक सम्मान किया गया। चित्र पहेली के विजेता बच्चों का भी शाब्दिक सम्मान किया गया। 24–25 अगस्त को व्यक्तित्व विकास व कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति द्वारा दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर ज्ञान गंगा मुंबई प्रदेश एवं आंध्र तेलंगाना प्रदेश के साथ सम्पन्न हुआ। सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने विस्तृत रूप में संगठन के बारे में एवं संगठन में कार्यों के बारे में बताया। आंचलिक सहप्रभारी शोभा भूतड़ा ने विचार रखे। 29 अगस्त को मुंबई, कर्नाटक व तमिलनाडु प्रदेसों ने साथ में ऑनलाइन परिचय सम्मेलन विवाह समिति गठबंधन द्वारा सम्पन्न हुआ। समिति प्रमुख शशि नेवर, राष्ट्रीय प्रभारी शर्मिला मंत्री, आंचलिक प्रभारी सुनीता लाहोटी, साथ ही शोभा सादानी, आशा माहेश्वरी, कल्पना गगरानी ने विचार रखे। सम्मेलन में 65 युवक–युवतियों के वीडियो प्रसारित किए गए।

सुलोचना प्रदेश अध्यक्ष
अनिता माहेश्वरी सचिव

तमिलनाडु, केरल, पुदुचेरी प्रदेश

'काल की कुचाल हार जाएगी, निश्चित हम जीत जाएंगे' काव्य निशा का आयोजन

काव्य कौशल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

ग्राम विकास के तत्वावधान में 'जल संरक्षण' कार्यशाला रखी गई, जिसमें श्री अविनाश गुप्ता ने बहुत ही सुन्दर जानकारी दी। एक नाटिका पानी से संबंधित एवं एक गेम भी रखा। पर्यावरण पर पेड लगाओ, जीवन बचाओ के अंतर्गत कम जगह में साधना मेलानो ने बहुत ही सटिक जानकारी दी। सावन की धमोली का रंगारंग

कार्यक्रम मंजुश्री कोठारी एंव चंदा काबरा के साथ मनाया गया। झूला सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। श्री सद्गुरु रमेशजी एवं गुरु मंत्र का जीवन धर्म का मर्म पर प्रवचन एवं चर्चा हुई।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर, मां रत्नी देवी, लता लाहोटी, पुष्पा तोषनीवाल, कल्पना गगरानी के सहयोग से सम्पन्न हुआ। व्यक्तित्व विकास के अंतर्गत द्वारकादास जालान का व्याख्यान 'चलती रहे जिंदगी' रखा गया था। इसमें मां रत्नी देवी, मंजू बांगड़, शैला कलंत्री, पुष्पा तोषनीवाल, नम्रता बियानी एवं शोभा भूतड़ा ने आशीर्वचन दिए जिसमें 210 बहनें लाभान्वित हुईं।

काव्य कौशल कार्यशाला रखी गई जिसमें अनुराधा जाजू ने आशीर्वचन दिया। श्री आदित्य कौशल ने यह कार्यशाला ली, इसमें गोविंद मूंदड़ा ने सक्रिय सहयोग दिया।

काव्य निशा 'काल की कुचाल हार जाएगी, निश्चित हम जीत जाएंगे' इस सुंदर भावों के साथ महिलाओं का एक ऑनलाइन कवि सम्मेलन प्रख्यात कवियित्री डॉ. कीर्ति काले के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। प्र.अध्यक्ष प्रभा चांडक द्वारा स्वागत भाषण एवं सौ. शकुंतला करनानी द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। कवि प्रतीक पलोड़ ने जीवन साथी के प्रति संग संग में डग भरो डॉ. अनुराधा जाजू ने क्या क्या उडेलूं, संतोषी बिसानी ने कोरोना का समय चक्र, कुसुम मालपानी ने बचपन के दिन, प्रिया मंत्री ने संयुक्त परिवार का महत्व, प्रिया करनानी ने मौन की शक्ति, पूजा काबरा ने मां बनने का एहसास, स्नेहलता मालपानी ने भ्रूण हत्या पर अस्तित्व की पुकार, वर्षा मूंदड़ा ने पर्यावरण, वीणा साबू ने गांव, गाय और गंगा विषय पर कविता सुनाई और भी कई बहनों सौ. पूजा खटोड़, प्रेमलता टावरी, शकुंतला करनानी, विमला जाजू एवं गीता मूंदड़ा ने कविता सुनाकर समाज की कवियित्री होने का गौरव पाया।

कर्नाटक-गोवा प्रांतीय माहेश्वरी महिला संगठन

स्वदेशी अपनाओ-विदेशी हटाओ पर हुए कार्यक्रम

व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण
आशा और विश्वास से मजबूत बना संगठन
ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण
समस्या समाधान मिलेगा जरूर जब होगा जन जागरण
स्वाध्याय एवं पारिवारिक समरसता
लॉकडाउन में नजर आई परिवार की एकता
महिला उत्थान अधिकार सुरक्षा एवं सशक्तिकरण
महिला का सर्वश्रेष्ठ है यही वाजीकरण
बाल विकास और किशोरी विकास प्रतिभाओं से भरा है आकाश
कम्प्यूटर नेटवर्किंग एवं एडवांस तकनीकी
अपडेट खबरें रहती है विश्व की साहित्य समिति व सामाजिक चिंतन मनन इसी से होता है हम सब का समीकरण
पर्व वह सांस्कृतिक जीवन में आध्यात्मिक
स्वाध्याय एवं अद्यात्म कण कण में श्रीराम।

इन सब समिति के अन्तर्गत घर-घर गणगौर, महेश नवमी के पूजन-भजन सामूहिक आरती पूरे कर्नाटक प्रदेश में, अनेकानेक प्रतियोगिता के अन्तर्गत आरती की थाली सजावट, दादी-पोता, स्टैंड अप कॉमेडी, कविता, बाल लीला, फोक डांस, सत्तू डेकोरेशन, भक्त और भगवान, सब्जी से गहने बनाना, झूला डेकोरेशन, हरियाली क्विन, सोलह श्रृंगार, गायन नृत्य, राखी बनाना, झाला वारणा, राजस्थानी डांस, राष्ट्रीय स्तर से आई हुई सभी प्रतियोगिता

का जिला स्तर व स्थानीय स्तर बहुत से नाटक संदेश के साथ। डॉक्टर के वक्तव्य में गर्भाधान, हेल्दी लिविंग ड्यूरिंग कोरोना वायरस इन आयुर्वेदा। महिला स्वास्थ्य के बारे में, इंटरनेट एटिकेट, व्हाट्सएप फीचर्स की जानकारी, सावन मास सोमवार की उपयोगिता, ऐसे अनेक वक्तव्य। योग दिवस पर योगाभ्यास, पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण, उद्योग मेला सभा व युवा संगठन के साथ किया गया। पीएम फंड के लिए धनराशि का सहयोग। स्वदेशी अपनाओ विदेशी हटाओ इत्यादि के अनेक वीडियो द्वारा प्रचार-प्रसार डॉक्टर्स डे के निमित्त डॉक्टर्स का अभिवादन। कर्नाटक द्वारा 10 समितियों का कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय स्तर से जिला स्तर व जिला से स्थानीय स्तर तक पूरे 6 महीने में अनेक रंगारंग उद्देश्यात्मक कार्यक्रम का आयोजन। हनुमान चालीसा, सुंदर कांड, विष्णु सहस्रनाम श्रीमद् भागवत गीता, राम रक्षा स्तोत्र का पठन। गोवा प्रदेश का पुनर्गठन।

पुष्पा गिलड़ा, अध्यक्ष ❊ सरिता सारड़ा-सचिव

बैंगलोर माहेश्वरी महिला संगठन

ग्रीन क्वीन का आयोजन

कोरोना विश्व व्यापी त्रासदी के चलते पीएम केयर फंड के निमित्त बैंगलोर माहेश्वरी महिला मंडल ने 51 हजार की राशि दी। सचिव श्रीमती विजय लक्ष्मी सारड़ा ने बताया कि कोविड-19 महामारी में भोजन पैकेट का वितरण किया। स्वास्थ्य एवं इम्युनिटी को बढ़ाने के उपयोगी सुझावों से वेबिनार द्वारा मिसेज इंडिया, डायटीशियन डॉक्टर श्रीमती पूजा माहेश्वरी ने समाज के सदस्यों को अनेकों घरेलू उपायों की जानकारी दी तथा स्वास्थ्य समस्याओं के निदान के उपायों की जानकारी के लिए डॉ. श्रीमती प्रेरणा भट्टड़ के साथ वेबिनार आयोजित की गई। सावन का सिंजारा कार्यक्रम में ग्रीन क्वीन प्रतियोगिता प्रदेश स्तर पर भी आयोजित की गई थी। इस प्रतियोगिता में बैंगलोर की विजेता श्रीमती हेमा रांदड़ ने कर्नाटक, गोवा प्रान्तीय माहेश्वरी महिला संगठन यानी प्रदेश में भी प्रथम पुरस्कार विजेता रही। कई धार्मिक कार्यक्रम भी किए गए जैसे सुंदर कांड पाठ, हनुमान चालीसा आदि। हनुमान चालीसा के पाठ का सहयोग कर्नाटक को दिया गया। कई कार्यशालाएँ की गई जिनमें आओ सीखे लड्डू गोपाल का साज-सिंगार, विख्यात कुकिंग कला में निपुण श्रीमती शोभा इंदानी के वेबिनार में देशभर से 1 हजार महिलाओं ने फ्यूजन फूड का प्रशिक्षण लिया।

अध्यक्षा श्रीमती कांताजी काबरा के मार्गदर्शन में विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन सुनीता लाहोटी, सुनीता मून्दड़ा, निर्मला काकाणी, नीरा लड्ढा, श्वेता बियाणी ने किया। तो धन्यवाद ज्ञापन कल्पना बाहेती, शोभा भूतड़ा, सुलोचना जाजू ने किया।

-विजया लक्ष्मी सारड़ा, सचिव

पश्चिमी मध्यप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

सृजन कार्यशाला एवं वैदिक गणित का प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ

अच्छे स्वास्थ्य के लिए 8 दिवसीय फिटनेस योग क्लास-शैली अजमेरा द्वारा। आनलाइन कोचिंग क्लासेस, वैदिक गणित क्लास निरन्तर। 'सखी' प्रोजेक्ट में प्रदेश की काफी उद्यमी बहनें जुड़ीं।

बाल एवं किशोरी विकास समिति की राष्ट्रीय सृजन कार्यशाला में विजेता रहीं। आशि बियाणी, अश्मि मंत्री, आशिका लड्ढा, सृष्टि राठी, परिधि लड्ढा, दीपिका जाखेटिया विभिन्न विधाओं में अग्रणी रही।

परिवार के स्तंभ प्रतियोगिता में डॉ. रचना बजाज, राष्ट्र में प्रशंसनीय स्थान पर रही। प्रदेश की विजेता डॉ.

रचना बजाज, अयोध्या चौधरी, संगीता झंवर रहीं।

वर्चुअल भ्रमण किया उज्जैन जिले का तथा प्रदेश अध्यक्ष वीणा सोमानी ने समिति के कार्यों की एवं सचिव उषा सोडानी व निवृत्त अध्यक्ष सौ. अरुणा बाहेती ने कार्यकर्ता के गुण एवं रिपोर्टिंग की जानकारी दी।

राष्ट्रीय कम्प्यूटर नेटवर्किंग एवं एडवांस तकनीकी समिति की तीन दिवसीय कार्यशाला के आयोजन पर राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष विमला साबू, सुशीला काबरा, मध्यांचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मंगल मर्दा, राष्ट्रीय समिति प्रभारी उर्मिला कलंत्री ने आज की आवश्यकता पर उद्बोधन दिये।

प्रदेश की व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण की कार्यशाला का आयोजन– प्रदेश अध्यक्ष द्वारा स्वागत उद्बोधन, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष गीता मूंदड़ा, सुशीला काबरा द्वारा शुभकामनाएं पश्चात पूर्व प्रदेशाध्यक्ष निर्मला बाहेती ने प्रदेश का इतिहास। रा. कोषाध्यक्ष ज्योति राठी ने ऐसे आयोजन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उपाध्यक्ष मंगल मर्दा ने प्रोटोकाल एवं रिपोर्टिंग की तथा सह प्रभारी मधु राठी ने कार्यकर्ता के गुणों पर प्रकाश डाला।

राष्ट्रीय साहित्य समिति के हर सीट हॉट सीट में प्रदेश की सीमा झंवर द्वितीय रही। रिचा बियाणी, प्रमिला गट्टानी ने प्रोत्साहन स्थान पाया।

प्रदेश की पर्व एवं सांस्कृतिक समिति ने हरियाली क्विन प्रतियोगिता का आयोजन किया। विजेता प्रिया मालपानी, नूपुर नोगजा, प्रीति बांगड़िया।

आध्यात्म एवं स्वाध्याय समिति द्वारा कृष्ण संग यशोदा की तस्वीर पर सजावट की प्रतियोगिता में। विजेता राजश्री मंत्री, अर्चना के. माहेश्वरी, सीमा न्याती रही।

बाल विकास एवं किशोरी विकास समिति ने पर्यावरण पर काव्य पाठ की प्रतियोगिता आयोजित की। विजेता 3–5 हर्ष ध्वज माहेश्वरी, रिषिता डोडिया, सानवी माहेश्वरी, विजेता 6–8 वर्ष में पहल बंग, अंबिका तोषनीवाल, मयश्री माहेश्वरी

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति की तीन दिवसीय सृजन कार्यशाला। मौली की राखी, व्यंजन, काफी एवं मण्डला पेंटिंग का प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष गीता मूंदड़ा, सुशीला काबरा, आंचलिक संयुक्त मंत्री उषा करवा, राष्ट्रीय समिति प्रभारी पुष्पा सोमानी, समिति की आंचलिक सहप्रभारी मनीषा लड्ढा ने शुभकामनाएं प्रेषित की। 300 महिलाओं ने लाभ उठाया। कार्यसमिति एवं कार्यकारिणी की बैठक की गई।

इकोफ्रेंडली गणेशजी बनाने की कार्यशाला का आयोजन

प्रदेश में राष्ट्रीय विवाह संबंध सहयोग समिति के साथ आनलाइन परिचय सम्मेलन का आयोजन किया। आयोजन का श्रीगणेश महेश भगवान को दीप प्रज्वलित कर महेश वंदना एवं स्वागत गीत के साथ हुआ। प्रदेश अध्यक्ष वीणाजी सोमानी ने स्वागत उद्गार में आयोजन की आवश्यकता पर विचार रखे। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी, विशेष अतिथि शशि नेवर, समिति प्रभारी शर्मिला राठी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सुशीला काबरा, सहप्रभारी निर्मला बाहेती, सहप्रभारी रेखा लड्ढा एवं पश्चिमी मप्र सभा के अध्यक्ष ओमप्रकाश भराणी की विशेष उपस्थिति थी। कुल 97 प्रत्याशियों ने अपना परिचय दिया। अभिभावकों के प्रश्नों के समुचित उत्तर शर्मिला राठी ने दिये। कार्यक्रम का संचालन संयोजक शांता मंत्री ने किया।

अध्यक्ष वीणा सोमानी ⁂ सचिव उषा सोडानी

पूर्वी मध्यप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

'दिव्य रत्नम्' पुरस्कार वितरण

मध्यप्रदेश पूर्व क्षेत्रीय महिला संगठन की अध्यक्ष अनीताजी, सचिव रंजनाजी, मार्गदर्शिका प्रतिभाजी के नेतृत्व में आयोजन की सफलताएँ 5 जून 2020 पर्यावरण दिवस पर 8 हजार पौधे लगाए गए। 3 जून मेदिनी केला द्वारा सेट डेजर्ट की ऑनलाइन क्लास ली गई, जिसमें 450 बच्चों ने भाग लिया। चारों ही संभाग द्वारा 21 जून योग दिवस पर योगा एवं अन्य आयोजन किए गए। कोरोना वॉरियर्स का सम्मान किया गया।

1 जुलाई को प्रदेश की जूम मीटिंग में प्रादेशिक कार्यों को कृष्ण थीम के द्वारा बहुत सुंदर तरीके से दर्शाया गया। 3,4,5 जुलाई को अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला मंडल की कम्प्यूटर एवं नेटवर्किंग समिति के अन्तर्गत प्रादेशिक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें 2000 बहनें लाभान्वित हुई। जुलाई माह में चारों संभागों ने अपने अपने क्षेत्र में बहुत सुंदर तरीके से सांस्कृतिक कार्यक्रमों, रंग–बिरंगी प्रतियोगिता का आयोजन और बहुत से सतरंगी कार्यक्रमों, कोविड 19 से बने के लिए सभी धार्मिक अनुष्ठान भी किए, सभी तीज त्योहारों को सुंदर एवं कलात्मक तरीके से आयोजित किए।

राष्ट्रीय साहित्य समिति द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता परिवार के स्तंभ में हंसा केला भोपाल ने छठा स्थान प्राप्त किया और प्रदेश का नाम गौरवान्वित किया। हर सीट, हॉट सीट में मध्यांचल की शिल्पी जी कटनी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन एवं युवा संगठन द्वारा आयोजित ऑनलाइन प्रतियोगिता में दीपा कपिलजी काबरा को पांचवा स्थान प्राप्त हुआ। सेल्फी विद रंगोली में पूजा मूंदड़ा भोपाल को छठवां स्थान प्राप्त हुआ और प्रदेश भी गौरवान्वित हुआ।

महिला जिला संगठन भोपाल द्वारा 'दिव्यरत्नम्' पुरस्कार वितरण, श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम् 27 बहनों को 'दिव्यरत्नम्' पुरस्कार दिया गया, यह आयोजन अपने आप में एक अनूठा और अवरणीय था।

श्रीमती अनीताजी एवं रंजनाजी और उनकी टीम के नेतृत्व में चारों संभाग की मीटिंग बहुत सुंदर एवं अनोखे संकल्पों के साथ सफलतापूर्वक पूरी हुई।

जबलपुर संभाग–थीम शिव महिमा संकल्प–बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, बहू को बेटी सा अपनाओ एक अनोखे संकल्प की शुरुआत।

ग्वालियर संभाग थीम–देशभक्ति संकल्प – रक्षा बंधन के दिन बनाया वृक्षों से रक्षा का रिश्ता। राखी बांध कर लिया पर्यावरण बचाओ का संकल्प।

नर्मदा संभाग–थीम – तीज त्योहार के रंग अंचल के संग। संकल्प – घर आंगन के साथ सड़क को करो साफ, रखो मोहल्ला साफ, करो नई शुरुआत। इस संकल्प के साथ करीबन हर कालोनी में डस्टबिन रखकर स्वच्छता का संकल्प नई शुरुआत।

भोपाल संभाग – संभाग के रंग मारवाड़ के संग संकल्प – आत्म निर्भर भारत है इसलिए महिला संगठन की पहल, नहीं अपनाएंगे विदेशी वस्तुएं अपनाएं।

4 संभाग, 20 जिले, 70 स्थानीय इकाइयों के हर पदाधिकारी, हर सदस्य के लिए संकल्प।

1. सेल्फी विथ रंगोली एवं महेश पूजन में प्रादेशिक संगठन द्वारा टाप 10 विजेताओं को पुरस्कृत किया।

2. प्रादेशिक संगठन, महिला संगठन, युवा संगठन के संयुक्त तत्वावधान में सभापति श्यामजी सोनी, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती आशा माहेश्वरी के मुख्य आतिथ्य में प्रादेशिक स्तर पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

अनिता जांवदिया, प्र. अध्यक्ष ❊ रंजना बाहेती–प्र.सचिव

विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

बालक एवं पालक कार्यशाला का आयोजन

विदर्भ प्रदेश द्वारा 2 से 28 जुलाई तक लगभग हर दिन सभी समितियों द्वारा प्रोजेक्ट प्लैनिंग एंड रिपोर्टिंग, बहुउपयोगी वक्तव्य, कार्यकर्ता प्रशिक्षण, सभी जिलों में सम्पन्न हुए।

राष्ट्रीय अध्यक्षा आशा माहेश्वरी द्वारा 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' विषय पर सुंदर मार्गदर्शन दिया गया। सभापति श्यामजी सोनी, लगभग सभी राष्ट्रीय पूर्वाध्यक्षाएं, महामंत्री मंजू बांगड़, कोषाध्यक्ष ज्योति राठी, सभी राष्ट्रीय समिति प्रभारी, आंचलिक उपाध्यक्ष मंगला मर्दा, संयुक्त मंत्राणी उषा करवा, आंचलिक संयोजिकाएं, सहसंयोजिकाएं शामिल होकर अपने मार्मिक विचारों से बहनों को मार्गदर्शन दिया।

'जिंदगी ऑफ्टर अनलॉक' विषय पर डॉ. अर्चना कोठारी, जिंदगी सिंपलीफाइड विषय पर राधिकाजी मोदी द्वारा बहुउपयोगी मार्गदर्शन क लाभ बहनों को मिला। अपने लिए जिए तो क्या जिए विषय पर गीताजी मूंदड़ा, 'परंपरा परिवर्तन परिवार' विषय पर शोभा सादानी, ब्रांड मी पर श्रुति भूतड़ा, आओ करें कदमताल न्यू नार्मल लाइफ के साथ विषय पर गिरजा सारड़ा द्वारा 'धर्म अध्यात्म और मानव जीवन विषय पर कल्पनाजी गगरानी द्वारा साथ ही विमला साबू तथा सुशीला काबरा के मार्गदर्शन में बहनें लाभान्वित हुई। नए जमाने की जंग जीतेंगे टेक्नोलाजी के संग के गुर पूजा राठी से जाने, जीवन एक आनंद यात्रा से अंजलि तापड़िया ने अवगत कराया. दि ज्योश टॉक्स बाय अवर नेक्स्ट डोअर वुमन में अलग–अलग क्षेत्र की महिलाओं की प्रतिभा के हुनर को देखकर बहनों को नई

दिशा में कार्य करने की चालना मिली। हर रोज विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन के लाभ के साथ अपनी प्रतिभा को दिखाने का अवसर बहनों को प्राप्त हुआ। सुंदर महेश वंदना, स्वागत गीत, विभिन्न समितियों के कार्यों के वीडियो बनाने की कला में निखार आया। प्रदेश के सभी समिति संयोजिकाओं ने हर जिला संयोजिका से संपर्क कर सुंदर कार्य किया। हररोज 250 से 425 बहनों ने 25 दिनों तक कार्क्रम का लाभ लिया।

17,18,19, अगस्त को कार्यकर्ता प्रशिक्षण का ऑनलाइन आयोजन रखा गया, जिसमें हर रोज तीन अलग–अलग जिला की बहनों के लिए मधुजी राठी तथा शशि बागड़ी द्वारा प्रशिक्षण रखा गया। 250 बहनों ने लाभ लिया।

मध्यांचल में प्रदेशों ने मिलकर कम्प्यूटर प्रशिक्षण, इफेक्टिव टीनएज पेरेंटिंग विषय पर मार्गदर्शन तथा ऑनलाइन परिचय सम्मेलन रखा, जिसमें 105 बच्चों के बायोडाटा एवं वीडियो प्रस्तुत किये। साथ में चिंतन, मनन हेतु एकम मेडिटेशन संस्था के साथ 7 दिनों का मेडिटेशन शिविर लिया। आने वाली पीढ़ी को वैज्ञानिक तथ्यों से अवगत कराते हुए बड़ी तीज, उबछट तथा बछबारस की कहानी मारवाड़ी भाषा में कहते हुए 7 से 9 मिनट का वीडियो बनाओ प्रतियोगिता रखी। पुरस्कृत कहानियों की नई कहानी संचय बनाई जाएगी। कोरोना कर्म योद्धा को सलामी संदेश स्वरचित कविता या स्लोगन 6 से 8 लाइन में बनाओ प्रतियोगिता रखी गई। कोरोना कर्म योद्धा युवा डॉक्टर को सम्मानित किया गया।

प्रदेश अध्यक्ष भारतीजी राठी के नेतृत्व में सभी कार्यक्रम, सभी जिलों में राष्ट्रीय पदाधिकारियों के साथ भ्रमण, ई संपर्क डायरेक्टरी तथा प्रदेश की मुख पत्रिका ई नारी संदेश नवआगाज का विमोचन सुचारू रूप से सम्पन्न हुआ। सभी जिलों में प्रादेशिक अध्यक्ष भारती ने श्रृंखलाबद्ध संगठन से किस तरह से कार्य करना चाहिए इसकी विस्तृत जानकारी देकर बहनों के प्रश्नों की पूरी समीक्षा की।

सेवाधारी ट्रस्ट का ई-बुलेटिन निकाला गया। लगभग 10 जरूरतमंद बहनों को राष्ट्रीय ट्रस्ट के माध्यम से मदद की तथा कोरोना ग्रसित परिवारों को सेवाएं उपलब्ध करा रहे हैं। पूर्वाध्यक्षा डॉ. सुधा राठी, डॉ. तारा माहेश्वरी, आशा लड्ढा, मीना सांवल, ज्योति बाहेती समय-समय पर अपना योगदान दे रहे हैं।

प्रदेश अध्यक्ष भारती राठी ❊ प्रदेश सचिव-सुषमा बंग

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक महिला संगठन

सभी समितियों के कार्य जिलावार सम्पन्न

1. व्यक्तित्व विकास कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति- समिति संयोजिका शशि बागड़ी व उनकी टीम द्वारा जिला स्तर पर कल आज और कल एक रोचक व सुंदर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें संगठन के बारे में 1 मिनट बोलने का समय देकर प्रतियोगी को अपनी वाणी कौशल का परिचय देना था। सभी के विचारों का सुंदर आदान-प्रदान व उनके व्यक्तित्व को निखारने का कार्य किया जा रहा है। धमतरी, रायपुर व बिलासपुर जिले में यह कार्यशाला सम्पन्न हो चुकी है।

2. ग्राम विकास समिति - प्रदेश स्तर पर गौ संवर्धन प्रोजेक्ट के तहत गोबर से निर्मित दिया, पाट लगाने की मशीन जिलों में लगवाने का काम अधिक मास में किया जाएगा उसी की तैयारी शुरू है।

3. स्वास्थ्य व पारिवारिक समरसता समिति - राजनांदगांव जिला द्वारा प्रदेश स्तर पर फ्री कूकिंग क्लास का आयोजन जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में इस समिति द्वारा कराया गया। जिसे बहनों ने बहुत सराहा। 150 बहनों की उपस्थिति रही। विमला लड्ढा द्वारा हाथ से बने मास्क वितरण, काढ़ा वितरण व धमतरी जिला द्वारा तीज के दिन अपने ही घरों में 1 ही समय में वृक्षारोपण (नीम तुलसी एलोवेरा हल्दी) आदि 250 पौधे लगाए गए।

महिला अधिकार सुरक्षा समिति - संयोजिका वर्षा सोमानी द्वारा आओ सीखे कार्यशाला का आयोजन व्हाट्सएप के द्वारा किया गया।

इसमें छोटे वीडियो के माध्यम से भोपाल की पलक जाजू द्वारा ईको फ्रेंडली गणेश बनाना, विभा झंवर पिपरिया द्वारा मोदक बनाना तथा कांची सोमानी पिपरिया द्वारा चेनरल कलर करना सिखाया गया। 375 महिलाओं ने भाग लिया।

5. विवाह संबंध सहयोग समिति–प्रदेश स्तर पर 30 अगस्त को ऑनलाइन परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रमुख अतिथि कोषाध्यक्ष ज्योति राठी व विशेष अतिथि उपाध्यक्ष मंगला मर्दा, संयुक्त मंत्री उषा करवा, प्रभारी शशि नेवर, प्रभारी शर्मिला राठी, सहप्रभारी रेखा लड्ढा उपस्थित रहे। 105 बायोडाटा के साथ ये परिचय सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

6. कम्प्यूटर नेटवर्क समिति – अगस्त माह में आने वाले सभी त्योहार के लिए बधाई पोस्टर, इंटरनेट क्राइम रोकने हेतु पोस्टर मैसेज, जूम मीटिंग का आयोजन व कुकिंग क्लास का आयोजन किया गया।

8. पर्व व सांस्कृतिक समिति के अन्तर्गत श्रावण में 'लहरिया क्विन' एवं हरी पत्तियों के गहने बनाओ, भादो में कजली तीज पर सत्तू सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विजेता इस प्रकार रहे–लहरिया क्विन –प्रथम दीपाली चांडक, नेहा कोठारी, माधवी राठी। सत्तू सजाओ–माधवी राठी, रायपुर, रितिका राठी, रायपुर, रोशनी बंग धमतरी।

9. स्वाध्याय व आध्यात्मिक समिति के तहत पूरे प्रदेश में सुंदर कांड, हनुमान चालीसा, महामृत्युंजय मंत्र का जाप निरंतर जारी है। समिति संयोजिका दिव्या राठी व सह संयोजिकाओं द्वारा जन्माष्टमी पर्व पर 'कृष्ण लीला' का सुंदर वीडियो प्रस्तुत किया गया। श्रावण में शिवलिंग का श्रृंगार व अभिषेक किया गया।

प्रदेश अध्यक्ष–अमिता मूंदड़ा ✻ सचिव–भावना राठी

गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी महिला संगठन

बड़े उत्साह से सभी आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न

व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण–सूरत मेन मंडल में श्रीमती अंजली तापड़िया का आरती थाली, गिफ्ट पैकिंग, बॉक्स, आकाश कंदील के डेमो उपस्थिति 200 श्रीमती कोमलजी राठी द्वारा ज्योतिष शास्त्र पर वेबिनार, उपस्थिति–150, जामनगर में रसोई की रानी प्रतियोगिता (32 इंट्री) संगिनी संगठन अहमदाबाद कपल वेबीनार 'एसेंस ऑफ मैरेज' उपस्थिति–50

ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण वूमन्स क्लब 100 पुलिसकर्मियों को रक्षा सूत्र बांधा एवं वृक्षारोपण किये। बलसाड़ जिला मंडल 50 अनाथ बच्चों को राखियां, मास्क वितरण किये। उमरगाम में पूरे महीने में हररोज अनाथालय के 50 बच्चों को दूध पिलाया। 10 बहनों ने गौशाला में चारा व तारपोलिन का दाना दिया। स्वतंत्रता दिवस पर विविध देशभक्ति के कार्यक्रमों के आयोजन राम जन्मभूमि पूजन के दिन साथी बहनों ने घरों में दीप, पूजापाठ कर उत्सव मनाया।

साहित्यिक एवं सामाजिक मनन चिंतन समिति– वूमन क्लब द्वारा स्वरचित कविता प्रतियोगिता (15 इंट्री)

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति पूरे प्रदेश से तीज पर 'झाला के आडियो' मंगवाकर पर्व समिति को भेजे।

सभी जगह तीज, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी पर विविध कार्यक्रम, तीज सिंजारा के उपलक्ष्य में टास्क के

साथ हाउजी, साथ में टिकट डोकेरेशन, सत्तू सजाओ प्रतियोगिताएं, सूरत में गणेश उत्सव में गणेश मंडप सजावट (30), अनाज की रंगोली (25) एवं मोदक सजाओ (20), झुला सजाओ, कृष्ण बाल लीला पर लघुनाटिका, देशभक्ति गीत पर नृत्य प्रतियोगिता (60) हाफ फेस मेकअप, पतिदेव की मीठी मनुहार के वीडियो, फोटो क्लिक विथ स्लोगन, सत्तू सजाओ, निमड़ी सजाओ, पूजा-आरती थाली सजाओ आदि प्रतियोगिताएं।

स्वाध्याय एवं अध्यात्म समिति-विविध संगठनों द्वारा कान्हा-यशोदा, एवं कृष्ण बाललीला पर लघुनाटिका एवं झूला सजाओ झांकी सजाओ, मारवाड़ी गीत भजन प्रतियोगिता नन्द उत्सव का आयोजन।

विवाह संबंध गठबंधन-प्रदेश स्तर पर युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन जिसमें 75 बच्चों के परिचय के वीडियो संकलित कर प्रेषित किये।

सौ. उमा काबरा, अध्यक्ष

सौ. मंजूश्री काबरा सचिव

आसाम माहेश्वरी महिला संगठन

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला सफलतापूर्व सम्पन्न

1. व्यक्तित्व विकास व कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति के अन्तर्गत अखिल, प्रदेश व जिला स्तरीय सभी संयोजिकाओं की बैठक जिसमें पदाधिकारियों द्वारा प्रोटोकाल एवं समय व संगठन का महत्व बताया गया। पूर्वांचल की सभी संयोजिका व पदाधिकारियों के साथ भावी कार्यक्रम को लेकर बैठक एवं अर्चनाजी मूंदड़ा (बंबई) द्वारा वेबीनार।

2. ग्राम विकास समिति के अंतर्गत-रु. 11100 की आर्थिक सहायता व पीड़ित महिलाओं को सेनेटरी नैपकिन। गोशाला में 18300 नकद व गुड़, चना, मूंग दिए गए। बाढ़ पीड़ितों को रु. 5100 की सहायता पुलिस स्टेशन, सिविल हास्पिटल व कोरोना पेशेंट के बीच 150 अल्पाहार के पैकेट दिए। 51 वृक्ष लगाए व आग पीड़ितों को जरूरत की सामग्री प्रदान की गई। श्री अविनाशजी गुप्ता द्वारा जल संरक्षण कार्यशाला एवं साधनाजी द्वारा रसोई की बगिया कार्यशाला का सफलतम आयोजन।

3. स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति के अंतर्गत वुमन ऑफ विजडम समीराजी गुप्ता द्वारा सेमिनार। घरेलू संबंधों को बेहतर कैसे बनाएं विषय पर साइक्लोजेस्ट डॉक्टर काजल डागा एवं मनोवैज्ञानिक देवेंद्र सिंह द्वारा सेमिनार और मायाजी झंवर द्वारा वेबीनार।

4. महिला अधिकार उत्थान सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय स्पीकर डॉ. अमित माहेश्वरी द्वारा बोलने की कला एवं संचार कौशल पर सेमिनार जिसमें पूर्वोत्तर आसाम, पश्चिम बंगाल व झारखंड की बहनों ने हिस्सा लिया। सखी ग्रुप आसाम में आठवें स्थान पर। माहेश्वरी महिला को रु. 3000 की आर्थिक सहायता।

5. साहित्य चिंतन मनन समिति के अंतर्गत पूर्वांचल की हर सीट हाट सीट प्रतियोगिता में पूर्वोत्तर ने प्रथम व सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। प्रदेश संयोजिका सुमित्रा चाडक द्वारा उत्तरांचल की सहप्रभारी पुष्पा एवं पूर्वांचल की प्रभारी सरोज के साथ

हिंदी की बारीकियों व हास्य लेखन को सरल तरीके से समझाया।

6. कम्प्यूटर नेटवर्किंग एवं एडवांस तकनीकी शिक्षा समिति के अंतर्गत पूर्वांचल के पदाधिकारियों द्वारा आसाम भ्रमण, गेट टू गेदर, रसोई कार्यशाला, जन्माष्टमी व राखी त्यौहार मनाया।

7. विवाह संबंध सहयोग समिति के अंतर्गत बायोडाटा एप डाउनलोड करके उनकी आईडी नंबर सभी को बेजे गए व बच्चों से वीडियो मंगवाए गए।

8. बाल विकास किशोरी विकास समिति के अंतर्गत श्री योगेश सारजा (कोलकाता) द्वारा वैदिक मैथ पर बच्चों का ज्ञानवर्धक कार्यक्रम। गणेश चतुर्थी पर बच्चों द्वारा बप्पा की मूर्तियां बनवाई गई।

9. पर्व एवं सांस्कृतिक समिति के अंतर्गत चंचल राठी (गुवाहाटी) द्वारा गोपाला का श्रृंगार कार्यशाला ायोजित जिसमें गोपाला की पोशाक मुकुट, बांसुरी व हार सिखाया गया। कजरी तीज पर सत्तू सजाओ, सोलह सिंगार, छुपा रुस्तम, बनूं मैं तेरी दुल्हन, मेहंदी लगाओ, मेरा पति मोटिवेटर, नीमाड़ी सजाओ प्रतियोगिता रखी गई। जन्माष्टमी पर भजन-कीर्तन, खेल, झांकियों के साथ क्राफ्ट व श्लोक प्रतियोगिताएं रखी गई। पंद्रह अगस्त पर झंडा बनाओ, क्विज, रैंप वाक, फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट, फैंसी ड्रेस, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता।

10. स्वाध्याय एवं आध्यात्म समिति के अंतर्गत सावन में 1,36,00,000 शिव जाप। श्रीमती अनुश्री मालू बैंगलोर द्वारा वेबीनार पर।

वंदना सोमानी, प्र.अ. * पूनम मालपानी, प्र.स.

झारखंड बिहार प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

बच्ची के इलाज हेतु सहायता दी गई

एक बच्ची काफी जल गई थी उसके इलाज के लिए देवघर माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा 15 हजार रुपए सहयोग दिया गया। व्यक्तित्व विकास व कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति-अगस्त माह में पूर्वांचल के सभी पदाधिकारियों की व प्रदेशों की संयोजिकाओं की एक

जूम मीटिंग हुई। देवघर के रवि जैन को लोक सेवा आयोग में नौवां स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया।

ग्राम विकास व राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति- गुमला की शकुन्तलाजी मंत्री व शैलजाजी साबू ने थैलेसीमिया से पीड़ित दो बच्चों को ब्लड डोनेट किया। स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में पटना में देशभक्ति गायन व देशभक्ति नृत्य नाटिका देवघर में बच्चों की झंडोत्तलन फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता 25 अगस्त को रसोई की बगिया कार्यशाला तीन प्रदेशों के सामंजस्य में ली गई, जिसमें साधना मेलाना ने घर में कम जगह में सब्जियां कैसे उगाये।

स्वास्थ्य व पारिवारिक समरसता समिति - प्रादेशिक स्तर पर संयुक्त परिवार वट वृक्ष की छांव या बोझ की गठरी इस पर चर्चा परिचर्चा की एक कार्यशाला आयोजित की गई।

महिला अधिकार उत्थान सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति - 9 अगस्त को तीन प्रदेश के सामंजस्य में

बोलने की कला व संचार कौशल पर एक कार्यशाला आयोजित की गई, जिसके मुख्य वक्ता अमित माहेश्वरी थे। मानसिक अवसाद से गिरी नारी कैसे बनेगी सशक्तनारी इस पर चर्चा परिचर्चा में मनोवैज्ञानिक डॉ. बिंदा सिंह ने बहुत अच्छी तरह से समझाया।

विवाह संबंध सहयोग समिति–29 अगस्त को तीन प्रदेश के सामंजस्य में गठबंधन का परिचय सम्मेलन हुआ उसके लिए 11 लड़कों व 9 लड़कियों के वीडियो भेजे गए। आप में अभी तक 45 बायोडीाटा डाले गये तथा एक संबंध पक्का हुआ।

बाल विकास व किशोरी विकास समिति– वर्तमान समय में अभिभावकों का बच्चों के साथ सामंजस्य इस विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें डॉ. बिंदा सिंहजी स्मिताजी पचीसिया व सुमितजी मजूमदार ने सभी अभिभावकों व बच्चों की जिज्ञासा का समाधान किया।

पर्व व सांस्कृतिक समिति–राष्ट्रीय स्तर पर तीज श्रृंगार झूला निमड़ी के झाला के आडिटो भेजे गये। सिने तारिका प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी शाखाओं ने स्थानीय स्तर पर सत्तू सजाओ सोलह श्रृंगार बालीवुड फैशन शो मेहन्दी सब्जियों से सोलह श्रृंगार तीज क्वीन आदि प्रतियोगिता का आयोजन किया।

कान्हा के जन्मोत्सव की झांकी सजाई, मैं यशोदा तू मेरा कान्हा नृत्य नाटिका व फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता रखी गई। पटना में गणेश चतुर्थी पर मिट्टी के गणेशजी बनाओ प्रतियोगिता रखी गई।

प्रमिला आगीवाल–अध्यक्ष, उषा बागड़ी–प्रदेश सचिव

पश्चिम बंगाल माहेश्वरी महिला संगठन

गौशाला में गायों को गुड़ खिलाया

व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण–स्वयं से रूबरू ग्रुप ने आत्मचिंतन पर प्रश्नोत्तरी 113 बहनों की सहभागिता, सोनाली राठी द्वारा नम्बरोलाजी कार्यशाला 144 बहनों की सहभागिता।

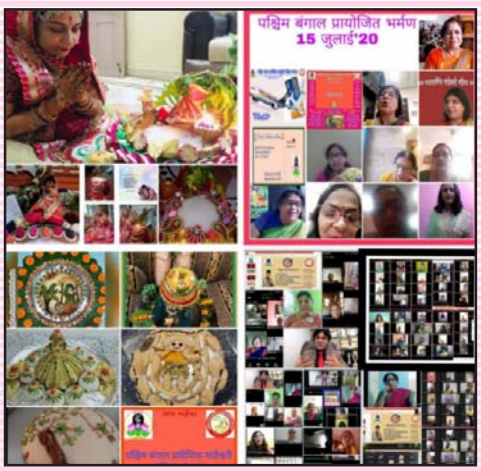

ग्राम विकास व राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति–ग्रामीण महिलाओं में सेनेटरी नेपकिन, बच्चो को कापी, पेंसिल बांटे गए। 15 अगस्त के पूर्व संध्या पर देशभक्ति गीत और 15 अगस्त को तिरंगा फहराकर, होजी रखा गया, रसोई की बगिया कार्यशाला।

स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति–जूम में समीरा चंद्र गुप्ता ने 3 ए के संबंध में प्रकाश डाला। अवचेतन मन का परिचय माधुरी सारड़ा द्वारा समझाया गया। संस्कार या समाज यही है परिवार पर चर्चा परिचर्चा।

महिला अधिकार, उत्थान, सुरक्षा व सशक्तिकरण–शर्बत कार्यशाला द्वारा लघु उद्योग की आइडिया दी। अमित माहेश्वरी द्वारा बोलने की कला एवं संचार शैली पर कार्यशाला 230 बहनों की सहभागिता।

साहित्य एवं सामाजिक चिंतन मनन समिति–हर सीट हाट सीट में पूर्वांचल की निशा बिहानी का तीसरा स्थान।

कम्प्यूटर नेटवर्किंग एवं एडवांस तकनीकी शिक्षा समिति–जूम में प्रायोजित भ्रमण में पूर्वांचल से पदाधिकारी पधारे। हर समिति के द्वारा महेश वंदना व स्वागत गीत पर वीडियो बनाया।

विवाह संबंध सहयोग समिति–आनलाइन परिचय

सम्मेलन में 10 बायोडाटा के वीडियो गए।

बाल विकास एवं किशोरी विकास समिति–वैदिक मैथ्स कार्यशाला में भारतीय 181 और 10 बच्चे दूसरे देशो से थे। रक्षा बंधन में बच्चों को राखी बनाने का प्रशिक्षण दिया। 10वीं व 12वीं के परीक्षा फल में 90 प्रतिशत नंबर लाने पर बच्चों से बात कर प्रोत्साहित किया व सम्मान–पत्र दिया।

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति–गोपाला का श्रृंगार कार्यशाला, छोटी तीज पर गेम हाउजी, गुरु पूर्णिमा पर गुरु पूजा, सत्तू सजाओ, खुद सजो और कजली मां को सजाओ, जन्माष्टमी, प्रभु की बाल लीला का नाट्य रूप और उसका उद्देश्य दर्शाना, 12 महीने के त्योहारों के थीम में लड्डू गोपाल का श्रृंगार व वीडियो एवं बाल गोपाल में दूध, दही, मक्खन का वितरण किया। बछबारस पर सवा मन गुड़ गौ माताओं को खिलाया। गणेश चतुर्थी पर पूजा–अर्चना एवं पुरुषों के सिंधारा पर वीडियो, राधा अष्टमी के सुरीले भजन, त्योहारों में समय समय पर भजन कीर्तन।

स्वाध्याय एवं आध्यात्मिक समिति–शिव परिवार कशा आधार लेकर प्रश्नोत्तरी, नृत्य प्रतियोगिता, सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ, हरियाली अमावस्या पर गौशाला में 21 सवामणी और 90 किलो गुड, 13 लाख 25 हजार ओम नमः शिवाय का जाप, श्रीकृष्ण बाल लीला प्रसंग प्रतियोगिता। राम मंदिर खूंटी पूजन पर दीप जलाए और राम रक्षा स्तोत्र पाठ किया।

नीरा मल्ल–अध्यक्ष ❊ कृष्ण पेडिवाल–सचिव

वृहतर कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन (पूर्वांचल)

सुकुमारी गृहिणी वर्कशॉप आयोजित

प्रदेश दो दिवसीय स्प्रिचुअल वर्कशॉप, मार्केटिंग वर्कशॉप, सुकुमारी ग्रहणी वर्कशॉप, शिवशंकर प्रतियोगिता का आयोजन कान्हा नंद उत्सव, मुलाकात देश के रक्षक एवं सुपर वुमन प्रोग्राम, हंसी के गुब्बारे कवि सम्मेलन, प्रदेश अध्यक्ष द्वारा बच्चों की फीस प्रतिमाह विद्यालय में जमा, प्रदेश अध्यक्ष के द्वारा 1000 प्रति माह थैलेसीमिया ग्रस्त बच्चे को इलाज के लिए प्रदेश पदाधिकारी द्वारा एक विधवा महिला को प्रतिमाह 2000 की आर्थिक सहायता।

1. व्यक्तित्व विकास और कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति के माध्यम से जीवन जीने की कला, मोटिवेशनल, वाणी कैसी हो पर वेबीनार सुकुमारी ग्रहणी वर्कशॉप, भगवान की पोसाक और श्रृंगार वीडियो के माध्यम से सिखाया।

2. ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति के अन्तर्गत मूक पक्षियों के लिए पीने की पानी की व्यवस्था, पर्यावरण की रक्षा के लिए पौधे लगाए गए, जरूरतमंद परिवार को 3100 की नकद राशि, गौशाला में गायों के लिए स्वामणी, चारा, लड्डू, रोटी, 350 बच्चे एवं बुजुर्ग महिलाओं को भोजन, गरीबों को फल एवं सब्जी, खाने का सामान, महादेव को भोग लगाकर दूध जरूरतमंदों में वितरित किया गया।

3. स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति द्वारा ताजा टीवी की कूकिंग शो में भाग, मास्क वितरण, कोरोना पर अभिनय प्रस्तुत किया गया।

4. महिला अधिकार, उत्थान, सुरक्षा व सशक्तिकरण, सिलाई प्रशिक्षण केंद्र की शिक्षिका को 2000 वेतन, हर माह की तरह एक माहेश्वरी महिला को 1000 से सहयोग, मेकअप वर्कशॉप, देश की रक्षा के एवं सुपर वुमन प्रोग्राम किये गये।

5. बाल विकास एवं किशोरी विकास समिति 10वीं और 12वीं कक्षा में अनुकरणीय नंबरों से पास माहेश्वरी समाज के 32 विद्यार्थियों को ई–सर्टिफिकेट, एक बच्चे की सालभर की फीस, वैदिक गणित में 3 बच्चों ने भाग लिया। प्रतिमाह समाज के एक बच्चे की स्कूल फीस,

टैलेंट हंट 2020 प्रतियोगिता में 180 बच्चों ने भाग लिया। वैदिक मैथ्स की क्लास, करियर काउंसलिंग सेक्शन फॉर कॉमर्स स्टूडेंट में 88 बच्चों का गूगल फार्म के द्वारा रजिस्ट्रेशन किया गया।

दक्षिण कोलकाता माहेश्वरी महिला संगठन के द्वारा शिक्षा राहत कोष का शुभारंभ जिसमें 1,11,000 की राशि जमा हो चुकी है।

6. विवाह योग्य बच्चों के 53 बायोडाटा का आदान-प्रदान, 2 रिश्ते।

7. कम्प्यूटर नेटवर्किंग एवं उडवांस तकनीकी शिक्षा समिति जन्मदिन शुभकामना संदेश एवं व्यक्तिगत विकास शिविर के प्रतिभागी संगठन की बहनों को ई-सर्टिफिकेट, फोटोशूट प्रतियोगिता के लिए फोटोग्राफी की सीखी एवं सिखाई, फेसबुक एवं यू-ट्यूब पर कार्यक्रम को लाइव दिखाया गया।

8. नाट्य प्रतियोगिता, हंसी के गुब्बारे कवि सम्मेलन प्रोग्राम।

9. स्वाध्याय एवं आध्यात्मिक समिति ओम नमः शिवाय मंत्रों का माला जाप, सामूहिक रुद्राभिषेक हर शनिवार 108 हनुमान चालीसा का पाठ, 501 माला ओम नमः शिवाय की, सावन मास में ओम नमः सिवाय के 31, 42, 152 मंत्रों की पूर्णाहुति।

10 पर्व एवं सांस्कृतिक समिति - सावन में फोटोशूट कांपिटेशन, झूला सजाओ, सातु सजाओ प्रतियोगिता, तीज क्वीन का कार्यक्रम, मेहंदी प्रतियोगिता, आजादी के पर्व पर कविता एवं गायन प्रतियोगिता, तीज का सिंजारा, अनुपमा एक रत्ती नृत्य और गेम्स की फुहार तथा उपहार की बौछार के साथ मनाया। शिवांगी सज्जन का सांस्कृतिक कार्यक्रम संगठन की सदस्यों को उपाधि देकर नवाजा गया।

-निर्मला मल्ल

नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन

जल संरक्षण कार्यशाला का सफल आयोजन

1. ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति-श्री अविनाश गुप्ता द्वारा जल संरक्षण कार्यशाला का 24 अगस्त को जूम पर सफल आयोजन किया गया।

2. स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति- 13 अगस्त को होम्योपैथी आपका सच्चा साथी कार्यशाला का डॉ. मोनिका मुंधरा द्वारा करवाया गया।

3. महिला अधिकार, उत्थान, सुरक्षा व सशक्तिकरण-विदुषी डागा ने फेसबुक और इंस्ट्राग्राम पर मार्केटिंग के गुर सिखाए। 20 अगस्त को आज की नारी सुंदर भी और सशक्त भी वर्कशाप करवाई, जिसमें ऋषिकाजी पटवारी ने समझाया कि रसोई और घर में उपलब्ध सामग्री का सुंदरता बढ़ाने के साथ-साथ एक व्यापार का रूप देकर आय का स्रोत बनाया जा सकता है।

4. साहित्य समिति, सामाजिक चिंतन समिति- हर सीट हाट सीट प्रतियोगिता में नेपाल की सेजल लाहोटी ने तृतीय सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

कौन बनेगा महाकवि प्रतियोगिता त्रिदिवसीय हिंदी भाषा और साहित्य ज्ञान कार्यशाला आओ फिर से पढ़े साथ-साथ का आयोजन किया गया।

5. विवाह संबंध सहयोग समिति–नेपाल चैप्टर एवं उत्कल तथा कोलकाता प्रदेश का गठबंधन के अंतर्गत 26 अगस्त को ऑनलाइन परिचय सम्मेलन हुआ, जिसमें नेपाल की तरफ से 7 बायोडाटा की सहभागिता रही।

6. पर्व एवं सांस्कृतिक समिति–पूर्वांचल भ्रमण पर आए पदाधिकारियों के साथ तीज उत्सव मनाया गया। सामाजिक सजाल के माध्यम से राजस्थानी नृत्य, सोलह श्रृंगार, एकल अभिनय, सत्तु निमाड़ी आदि प्रतियोगिताएं करवाई गई।

7. स्वाध्याय एवं आध्यात्म समिति – सावन मास में 6,51,000 ऊं नमः शिवाय मंत्र का जाप व्हाट्सएप पर किया गया। जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर 60 वर्ष आयु से ऊपर वाले वरिष्ठ जनों के लिए कृष्ण भजन प्रतियोगिता रखी गई। गणेश चौथ पर भजन एवं प्रश्न मंच का कार्यक्रम।

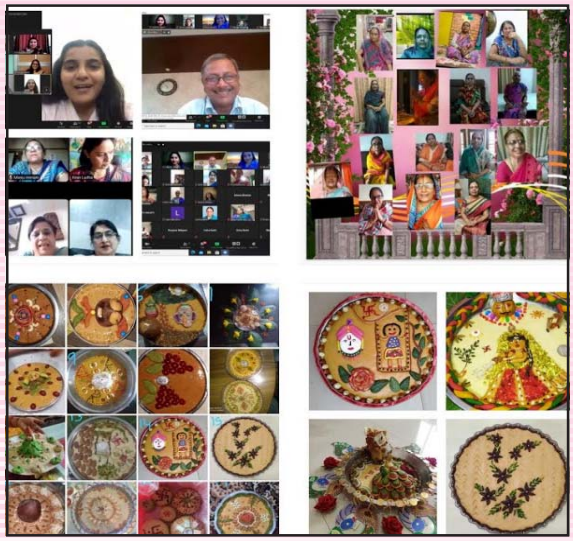

8. बाल विकास एवं किशोरी विकास में वैदिक गणित कार्यशाला में बच्चों ने गणित को समझाया।

–अनिता अटल, अध्यक्ष

उत्कल प्रादेशिक(उड़ीसा) माहेश्वरी महिला संगठन

वर्कशाप में घरेलू सामग्री से बाल, चेहरा त्वचा के लिऐ नुस्खे

महिला अधिकार,उत्थान,सुरक्षा समिति–सखी ग्रुप में 30 से अधिक महिलाएं जुड़ी, ब्युटी वर्कशॉप का आयोजन किया , ऋषिकाजी पटवारी ने घरेलू सामग्री से बाल, चेहरा त्वचा के लिऐ नुस्खे बताए वर्कशॉप में 150 से भी अधिक महिलाओं की उपस्थिति रही।

स्वास्थ्य एवं परिवारिक समरसता समिति–जुलाई 21 को मीनू अग्रवाल ने एसिडिटी पर कार्यशाला की। डा.मोनिका मूंदड़ा ने होम्योपैथी आवर बेस्ट फ्रेंड पर कार्यशाला ली गई, उड़ीसा, नेपाल प्रदेश से कार्यक्रम हुआ।

साहित्य चिंतन मनन समिति–लेख प्रतियोगिता परिवार के स्तंभ–परिणाम मे

प्रथम – राजू राठी कटक, द्वितीय – सीमा मूंद्रा झाडसुगडा, तृतीय– हिमानी भुतडा बालेश्वर

लेख प्रतियोगिता, ऑनलाइन स्कूलिंग–आवश्यकता एवं दुष्प्रभाव उड़ीसा से विजैता रहे।

1–नेहा बांगड़ झाड़सुगडा, 2– स्वाति काबरा बालेश्वर, 3– निशा मुंद्रा झारसुगड़ा।

स्वाध्याय एवम अध्यात्म समिति–सभी जिलों में रुद्राभिषेक, रामायण पाठ, शिव महिम्न, 1,25,000 विल्व पत्र शिव को चढ़ाएं। बालेश्र्वर में आरती थाली पूजन ,बच्चों के लिए फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता रखी गई, योग प्राण विद्या का फेसबुक पर लाइव सेशन करवाया।

बाल विकास विकास–जुलाई 19 से 23 तक शिव लीला जोगेशजी सारंडा द्वारा ली गई।

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति–जिलों मे सावन के गीतों पर नृत्य, सोमवती अमावस्या पर गौशाला मे 5100 की राशि,तीज के अवसर पर सत्तु सजाने, सब्जियों से गहने बनाने की प्रतियोगिता रखी।

कम्प्यूटर नेटवर्किंग एडवांस तकनीक–प्रशिक्षण Be Smart With - Smart Phone की कार्यशाला में बहनों ने भाग लिया।

विवाह संबंध सहयोग समिति– संयोजिका द्वारा पूर्वांचल के गठबंधन ऐप का प्रशिक्षण वीडियो, स्क्रीनशॉट एवम लाइव सुमित्रा जी काबरा के सानिध्य में zoom पर करवाया गया। उड़ीसा से कुल 23 बायोडाटा गठबंधन एप्प पर अपलोड हुए। जाजपुर की सुशीला जी काबरा के प्रयास द्वारा एक संबंध तय हुआ,26अगस्त को परिचय सम्मेलन मे,89 बायोडाटा अपलोड हुए, विडीयो भी चलाए । मंजुजी कोठारी,गिरजाजी सारडा ने संदेश दिया शशिजी नेवर,शर्मिलाजी राठी सुमित्राजी काबरा की उपस्थिति रही।

ग्रामीण विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति–उड़ीसा, नेपाल, कलकत्ता मिलकर जल संरक्षण कार्यशाला की। अविनाशजी गुप्ता कानपुर द्वारा जल संरक्षण कैसे करें बताया।

पूर्वी राजस्थान प्रादेशिक महिला संगठन कोटा

सावन बीता भादौ आया, त्यौहारों की फुहार लाया

व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति के तहत द्वितीय मीटिंग जूम पर रखी गई। महेश वंदना बूंदी जिले द्वारा प्रस्तुत की गई।

प्रदेश अध्यक्ष कुंतीजी मूंदड़ा द्वारा स्वागत उद्बोधन दिया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी द्वारा आशीर्वचन सौ. मधु बाहेती द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ममता मोदानी द्वारा श्रृंखलाबद्ध संगठन की जानकारी दी गई। संयुक्त सचिव सविता पटवारी द्वारा ट्रस्ट की जानकारी, हमारी निवृत्त प्रदेश अध्यक्ष संतोष तोषनीवाल द्वारा उद्बोधन, प्रदेश मंत्री मंजू भराड़िया द्वारा रिपोर्ट पेश की गई। चारों जिलों द्वारा वीडियो बनाकर संगठन की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। प्रेरणा गीत कोटा माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा प्रस्तुत किया गया। संचालन प्रदेश संगठन मंत्री निहारिका गगरानी द्वारा किया गया। कोषाध्यक्ष किरण लखोटिया द्वारा आभार ज्ञापित किया गया।

ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति के तहत पेड़ है तो जीवन है पंद्रह अगस्त पर हमारी राष्ट्रीय अध्यक्षा आशा माहेश्वरी द्वारा कोटा में वृक्षारोपण किया गया। संगठन की बहनों द्वारा अपने अपनेघरों में पौधे लगाकर उत्साह दर्शाया।

बाल विकास एवं किशोर विकास समिति के तहत बच्चों द्वारा भजन एवं राधा कृष्ण बनो कार्यक्रम रखा एवं 2 तारीख से 8 तारीख तक कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर किया गया।

विवाह संबंध सहयोग समिति के तहत ऑनलाइन परिचय सम्मेलन रखा गया। कुंती मूंदड़ा द्वारा स्वागत

उद्बोधन तथा अध्यक्ष द्वारा परिचय सम्मेलन की जानकारी दी गई। मुख्य अतिथि आशा माहेश्वरी द्वारा आशीर्वचन, प्रमुख अतिथि पश्चिमांचल उपाध्यक्ष राजेश बिरला द्वारा आशीर्वचन, मधु बाहेती द्वारा विवाह संबंध के बारे में सुंदर सार्थक एवं सारगर्भित शब्दों द्वारा जानकारी दी गई। प्रदेस मंत्री मंजू भुराड़िया द्वारा वीडियो शेयर किए गए। विवाह समिति संयोजिका अरुणा मूंदड़ा द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया। इसमें 65 वीडियो दिखाए गए।

पर्व एवं संस्कृति समिति के तहत राष्ट्री प्रभारी पुष्पा सोमानी द्वारा तीज का झाला गीत रखा गया। जन्माष्टमी पर सावन बीता भादो आया हरियाली ने मन भाया सभी और त्योहारों का बोलबाला। स्वरचित गीत या भजन प्रस्तुत करते हुए वीडियो बनाया था एंव कोई भी त्योहार की जानकारी देते हुए स्वयं की फोटो का सुंदर सा कोलाज बनाकर डालना था।

कुंती मूंदड़ा, प्रदेश अध्यक्ष

पश्चिमी राजस्थान प्रादेशिक महिला संगठन (जोधपुर संभाग)

कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति के अंतर्गत पश्चिमांचल रा. उपाध्यक्ष ममता मोदानी तथा सौ. सविता पटवारी द्वारा 7 अगस्त को सह प्रभारी मनीषा मूंदड़ा के मार्गदर्शन में समय प्रबंधन एवं नेतृत्व के गुण तथा श्रृंखलाबद्ध संगठन की जानकारी दी गई। कार्यक्रम का संचालन उर्मिला तापड़िया द्वारा किया गया। रीटा बाहेती द्वारा स्वागत गीत तथा अध्यक्ष रामेश्वरी भूतड़ा द्वारा स्वागत उद्बोधन दिया गया। मंत्री कमला मूंदड़ा ने प्रदेश के कार्यों की रिपोर्ट से अवगत कराया।

ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति द्वारा आयोजित रसोई की बगीया में बहनों ने सहभागिता निभाई तथा प्रदेश में संगठन मंत्री रीता बाहेती द्वारा बाडमेर जिले में पर्यावरण हेतु 300 पौधे लगाये गये।

3. स्वास्थ्य पारिवारिक समरसता समिति अंतर्गत श्वेता छंगानी द्वारा योगा व प्राणायाम शिविर का निःशुल्क आयोजन किया गया।

5. बाल विकास एवं किशोरी विकास समिति के अंतर्गत गीता मूंदड़ा एवं मीना साबू द्वारा 2 तारीख से 8 तारीख तक आनलाइन कार्यक्रम प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

विवाह संबंध सहयोग समिति के अंतर्गत समिति द्वारा आयोजित गठबंधन कार्यक्रम के अंतर्गत संयोजिका राधाजी लाहोटी द्वारा 30 विवाह योग्य युवक-युवतियों के वीडियो जूम के माध्यम से दिखाये गये।

कम्प्यूटर नेटवर्किंग व तकनीकी शिक्षा समिति द्वारा 9, 10, 11 जुलाई को कम्प्यूटर व मोबाइल के विभिन्न एप की जानकारी सह प्रभारियों द्वारा दी गई।

साहित्य समिति द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर निबंध लेखन परिवार के स्तम्भ प्रतियोगिता करवाई जिसमें प्रदेश की विमला जाजू को तृतीय तथा संयुक्तमंत्री स्वाति मानधना (बालोतरा) को पंचम स्थान प्राप्त हुआ। आंचलिक सह प्रभारी अरुण मोदी द्वारा हर सीट हाट सीट प्रतियोगिता व्हाट्सएप पर करवाई।

रामेश्वरी भूतड़ा, प्र.अ. ❊ कमला मूंदड़ा, प्र.स.

उत्तरी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन (बीकानेर)

त्यौहारों संग दिल हर्षाया

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति के अंतर्गत सावन–भादो मास में कजली तीज के उपलक्ष्य में हरियाली तीज की थीम पर कोलाज बनाओ व स्वरचित भजन एवं गीत, तंबोला, डांस, सेल्फी विद सत्तु सजाओ कांपिटिशन आनलाइन प्रतियोगिता की गई। इसमें बच्चों और महिलाओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सेदारी निभाई। सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। लड्डू गोपाल के छप्पन भोग लगाए व कीर्तन किए गए। स्वाध्याय एवं आध्यात्म समिति के अंतर्गत 5 अगस्त को राम जन्मभूमि अयोध्या में राम मंदिर स्थापना के उपलक्ष्य में दीपक जलाए एवं प्रसाद का भोग लगाया।

विवाह संबंध सहयोग समिति के अंतर्गत 10 अगस्त को प्रदेश में आयोजित परिचय सम्मेलन में 35 वीडियो लाइव दिखाए गए एक संबंध भी तय हुआ।

13 अगस्त को पश्चिमांचल पदाधिकारीगण, पश्चिम उपाध्यक्ष ममता मोदानी व संयुक्त मंत्री सविता पटवारी के साथ आयोजित प्रादेशिक बैठक में निवृत्तमान अध्यक्ष लता मूंदड़ा तथा जिला एवं स्थानीय सदस्यों ने संगठन की एवं ट्रस्टों की जानकारी प्राप्त की। ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति के अंतर्गत 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में पेड़–पौधे लगाये गये एवं ऑनलाइन राष्ट्रीय गान किया गया। 22 अगस्त को गणेश चतुर्थी के उपलक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण हेतु मिट्टी के गणेशजी की कार्यशाला करवाई गई, जिससे प्रेरित होकर बहनों ने घर में ही मिट्टी के गणशजी बनाकर पूजा–अर्चना की। 25 अगस्त को ऋषि पंचमी के त्यौहार का महत्व समझाया गया।

सरिता बिहानी, प्र.अ. ❊ सरोज लखोटिया, प्र.स.

पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक महिला संगठन (जयपुर संभाग)

पेड़ बचाओ व गाय बचाओ अभियान सफल

विवाह संबंध समिति – 10 अगस्त को गठबंधन समिति ने ऑनलाइन परिचय सम्मेलन में 36 वीडियो पूर्वोत्तर राजस्थान से चलाए गए। 270 प्रत्याशियों ने इसका लाभ लिया। मध्य व उत्तरी राजस्थान भी शामिल हुए तथा 99 वीडियो चलाए गए। एप के जरिए बायोडाटा का आदान–प्रदान जारी है। साहित्य समिति–सामाजिक चिंतन मनन – इसके अन्तर्गत 15 अगस्त 74वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर सभी बहनों को अपने भावों को प्रस्तुत करने हेतु 'खुला मंच' का आयोजन किया गया। हमारे देश के कर्मवीरों को श्रद्धांजलि देने बहनों ने कविता, गीत या प्रेरणा दायक शब्द के रूप में अपने भावों को प्रकट किए।

स्वाध्याय एवं आध्यात्म समिति–इसके अंतर्गत आयोजित जूम सभागार में 24 अगस्त को ब्रह्मकुमारी चंद्रकला दीदी ने पधार कर सरल शब्दों से हमें जीवन जीने के तरीके व सकारात्मक सोच के साथ जीने की कला सिखाई, बहुत–बहुत सराहनीय रहा।

ग्रामीण विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति–इसके अन्तर्गत 30 अगस्त को आयोजित की गई। उपयोगी कार्यशाला 'पेड बचाओ एवं गाय बचाओ' के अन्तर्गत गो काष्ठ की जानकारी एवं प्रोत्साहन दिया श्री सीतारामजी गुप्ता, श्री नारायणधाम गोशाला, बगरु ने।

श्रीमती विजयश्री तापड़िया, प्र. अध्यक्ष

दक्षिणी राजस्थान माहेश्वरी महिला संगठन

हरित प्रदेश प्रोजेक्ट सम्पन्न

तृतीय कार्यसमिति व कार्यकारिणी बैठक में उपाध्यक्ष ममता मोदानी द्वारा कार्यकर्ता प्रशिक्षण दिया गया। संयुक्त मंत्री सविता पाटीदार विशिष्ट अतिथि थी। प्रदेश की निवृत्तमान अध्यक्ष शिखा भदादा ने एकता में शक्ति के बारे में बताया। संगठन एवं ट्रस्ट व प्रोटोकाल की महत्वपूर्ण जानकारी ममता ने दी। दसों समिति संयोजिकाओं द्वारा समिति की कार्ययोजना व रिपोर्ट प्रस्तुत हुई। ज्ञान मंथन कार्यशाला में प्रदेश उपाध्यक्षा द्वारा ''बने पाकसिद्धा'' गृहणी को समर्पित कार्यक्रम बहुत सराहा।

ग्राम विकास के तहत सोना मंदबुद्धि विद्यालय में 21000 लागत की स्टील अलमारी भेंट की। हरित प्रदेश प्रोजेक्ट के तहत उदयपुर, राजसमंद, प्रतापगढ़, भीलवाड़ा एवं चित्तौड़ जिले में वृहद स्तर पर वृक्षारोपण किया। जीव दया कार्यक्रम के अंतर्गत पशु-पक्षियों के भोजन की व्यवस्था, मास्क, सैनिटाइजर वितरण व चार सैनिटाइजर मशीन लगाई। जल संरक्षण व रसोई की बगिया कार्यशाला राष्ट्रीय प्रभारी प्रेमाजी झंवर के सानिध्य में सम्पन्न हुई। ट्री गार्ड लगाए व मास्क बनाना सिखाया।

स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति के तहत प्रदेश अध्यक्ष द्वारा फूड एवं न्यूट्रिशन कार्यशाला में संतुलित आहार के बारे में बताया गया। टैपिंग थैरेपी, हास्य थैरेपी, प्राणायाम व सूर्य नमस्कार सिखाया। 2500 लोगों को होम्योपैथिक दवा, चूर्ण और काढ़ा वितरण। परिवारों के लिए मेडिकल कार्ड बनवाए। महिला अधिकार सुरक्षा व सशक्तिकरण समिति में महिला आत्म सुरक्षा की कानूनी जानकारी दी।

कम्प्यूटर नेटवर्किंग समिति के अन्तर्गत ममता मोदानी, उर्मिला कलंत्री के आतिथ्य में तीन दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न हुई। साइबर सिक्योरिटी और इंटरनेट पर स्वयं को सुरक्षित रखने के गुर सिखाए गए।

बाल एवं किशोरी विकास समिति में राखी बनाओ प्रतियोगिता हुई। हरित प्रदेश प्रोजेक्ट में 151 पौधे किशोरियों को वितरित कर पौधारोपण का महत्व समझाया।

विवाह संबंध सहयोग के तहत दो दिवसीय परिचय सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें 100 से अधिक परिवारों, युवाओं ने सहभागिता निभाई।

साहित्य समिति के अंतर्गत निबंध प्रतियोगिता परिवार के स्तम्भ में प्रदेश से राष्ट्रीय स्तर पर डॉ. कृतिका अजमेरा लड्डा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। हर सीट हाट से प्रतियोगिता में प्रदेश की 5 महिलाओं ने पुरस्कार प्राप्त किये।

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति के तहत सतरंगी लहरिया तीज महोत्सव फेसबुक पर लाइव आयोजित किया। मिसेज लहरिया सत्तू सजाओ, झांकी सजाओ, गमला सजाओ, गणेशजी का पोस्टर बनाओ आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की। तीज, ऋषि पंचमी, बछ बारस, चौथ पूजा की कहानियां, यू-ट्यूब पर प्रसारित की। लड्डू गोपाल की पिकनिक व नंदोत्सव ममता मोदानी के आतिथ्य में सम्पन्न। इको फ्रेंडली मिट्टी के गणेशजी बनाना सिखाया।

कुंतल तोषनीवाल, प्र.अ. * अनिला अजमेरा, प्र.स.

वह माता के समान हमारी रक्षा करती है, मित्र और माता के समान हमें शुभ कार्यों के लिए प्रेरित करती है, बाल्यावस्था से लेकर मृत्युपर्यंत वह हमारी संरक्षिका बनी रहती है। नारी सृष्टि के आरम्भ से अनन्त गुणों की आगार रही है।

मध्य राजस्थान प्रादेशिक महिला संगठन

जरूरतमंद परिवारों को सूखी राशन सामग्री व भोजन के पैकेट का वितरण

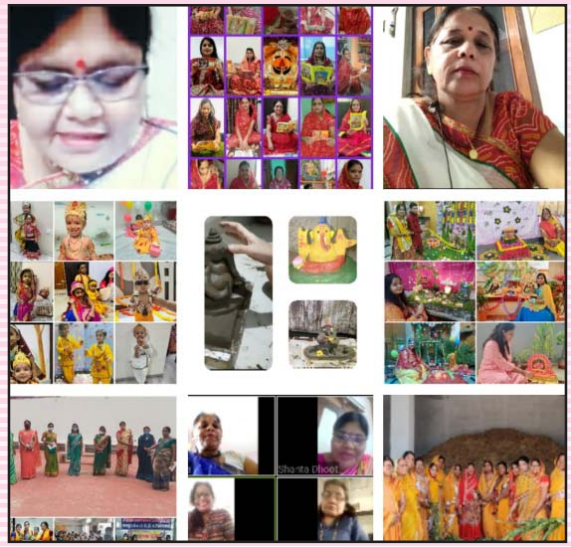

व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति – जुलाई माह में मालपुरा मंडल द्वारा रजत जयंती समारोह के लिए जूम पर मीटिंग। 14 अगस्त को पश्चिमांचल उपाध्यक्ष ममता मोदानी व संयुक्त मंत्री सविता पटवारी के द्वारा संगठन आपके द्वार के बारे में पूर्ण जानकारी प्रदान की गई।

ग्रामीण विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति – सफाई कर्मचारियों का सम्मान, अस्पतालों में पीपीई किट, बेडशीट, मास्क आदि का वितरण, जरूरतमंद परिवारों को सूखी राशन सामग्री व भोजन के पैकेट का वितरण। वर्षा के पानी का संरक्षण ओर रसोई की बगिया तथा सभी जगह पौधारोपण कार्यक्रम किए गए। कुचामन महिला मंडल द्वारा अस्पतालों में बच्चों की धड़कन नापने वाला डॉप्लर तथा ब्लड प्रेशर नापने का यंत्र प्रदान किया गया।

बाल विकास एवं किशोरी विकास समिति– बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरुकता के लिए सेव अर्थ पर ड्राइंग प्रतियोगिता तथा गीत पाठशाला का आयोजन किया गया। देशभक्ति की अलख जगाने के लिए हम हिंदुस्तानी कार्यक्रम जिसमें तिरंगे के साथ फोटो और स्लोगन प्रतियोगिता शामिल थी।

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति– सावन व भादवा का महीना हमारे त्योहारों का महीना है। इन दोनों महीनों में ही संभी मंडलों के द्वारा त्योहारों को जूम पर प्रतियोगिता के साथ जिनमें मुख्य रूप से हरी सब्जियों से सिंगार, न राधा कृष्ण बनकर नृत्य, लड्डू गोपाल के झूले का डेकोरेशन माखन की मटकी का डेकोरेशन, मंदिर में झूला उत्सव, भगवान शिवजी का अभिषेक, पार्थिव शवलिंग बनाना, चतुर्थी गणेश पर मिट्टी से गणेशजी बनाना, उनका विसर्जन करना सभी प्रतियोगिताएँ ऑनलाइन सम्पन्न हुई।

5. विवाह संबंध एवं सहयोग समिति–प्रदेश समिति संयोजिका श्रीमती पुष्पालता ईनानी द्वारा ऐप में 280 बायोडाटा तथा परिचय सम्मेलन में 40 बायोडाटा का वीडियो चलाया गया तथा तीन विवाह संबंध हुए।

6. कम्प्यूटर नेटवर्क एवं तकनीकी शिक्षा समिति –बी स्मार्ट विथ ए स्मार्ट फोन की तीन दिवसीय कार्यशाला समिति प्रमुख ममता मोदानी व राष्ट्रीय समिति प्रभारी उर्मिला के सान्निध्य में हुई। मोबाइल के विभिन्न एप के बारे में जानकारी सभी बहनों को प्रदान की गई।

7. साहित्य समिति व सामाजिक चिंतन मनन समिति – निबंध लेखन प्रतियोगिता पर्यावरण के प्रति हमारा दायित्व तथा जल समस्या और समाज का योगदान सम्पन्न करवाई गई।

8. स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति – एक्युप्रेशर शिविर का आयोजन जिसमें खुद के डॉक्टर खुद बनो। संचालन अध्यक्ष शान्ता धूत व आभार सचिव शशि लड्ढा ने किया। पुष्कर महिला संगठन ने रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

शांता धूत, प्र.अ. ❊ शशि लड्ढा, प्र.स.

पश्चिमी मध्यप्रदेश प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

वर्षभर के त्योहारों का महत्व पर परिचर्चा का आयोजन

साहित्य समिति, सामाजिक चिंतन मनन समिति के अंतर्गत परिचर्चा–चिंतन, मनन भारतीय त्यौहार पर आयोजित की गई। स्वागत उद्बोधन अध्यक्ष वीणा सोमानी ने दिया। आपने साहित्य को समाज का दर्पण व जीवन का अमृत बताते हुए कहा कि हमारे त्योहार हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। राष्ट्रीय प्रभारी मंजू मानधन्या ने कहा कि अब जागृति आ रही है समाज एवं महिलाओं में साहित्य को जनमानस से जोड़ना जरूरी है। जागृति एवं परिवर्तन लाने में त्योहार योगदान है। सहप्रभारी अर्चना लाहोटी ने इस अवसर पर अपने मन की बात रखते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति के 3 मूल आधार हैं धर्म, प्रकृति एवं सुदृढ़ पारिवारिक परम्परा। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष गीता मूंदड़ा ने कहा कि समृद्ध साहित्य आत्मविश्वास का प्रतीक होता है सकारात्मक विचार बढ़ते हैं। सौ. अरुणा बाहेती ने आयोजन के लिए शुभकामनाएं दी। महिला सेवा ट्रस्ट की सचिव ललिता मालपानी ने बताया कि अनेकता में एकता हमारे देश की विशेषता है, त्योहारों से आनंद की अनुभूति होती है।

लेखिका संघ इन्दौर की नि. अध्यक्ष ने कहा कि त्योहारों के पीछे मनोविज्ञान एवं आयुर्विज्ञान है, त्योहारों के द्वारा प्रकृति एवं ईश्वर के प्रति कृतज्ञ होना है। 16 जिलों से बहनो ने अलग–अलग त्योहारों पर अपने विचारों को रखा। शुरुआत हुई नववर्ष गुड़ी पड़वां को नववर्ष विक्रम संवत् के महत्व पर बताया नीमच की संगीता दरक ने। गणगौर पर्व ईशर पार्वती के युगल सी प्रसन्नता जीवन में प्रसन्नता लाती है जो प्रकृति से मिलता है, ये बताया राजगढ़ से सुधा दूदानी ने। उज्जैन की फाल्गुनी बियाणी ने वट सावित्री पूजन पर पर्यावरण के महत्व के साथ पति–पत्नी के रिश्तों की मजबूत डोर को जोड़ा। महेश नवमी को समाज की एकता की भावना से जोड़कर सामाजिक उत्सव मनाने पर विचार रखे। शाजापुर की भारती माहेश्वरी ने नागपंचमी पर बताया कि पर्यावरण ही नहीं इसके रक्षित जानवरों का भी आभार मानने का पर्व है। हरियाली तीज पर झाबुआ की भूमिका माहेश्वरी ने कहा कि सावन में वसुंधरा के साथ मन को हरित करती है। हरियाली तीज। मेहंदी लगाई जाना सौंदर्य के साथ खुशी लाता है। सातुड़ी तीज पर मंदसौर की सुरेखा झंवर ने ककड़ी, नींबू से दिन भर के उपवास में लाभ और पिंडों के महत्व पर चर्चा की। बछबारस पर धार की मंजू लखोटिया बोली कि हमारे पूर्वजों ने हमें पशु प्रेम के साथ ही देनंदिन जीवन में गोबर का उपयोगी होना बताया। गणेश चतुर्थी पर अलीराजपुर की निर्मला माहेश्वरी ने बताया कि बुद्धि के दाता गणेशजी के शरीर के हर अंग से हमें सीख मिलती है। ऋषि पंचमी पर खरगोन की अर्चना परवाल ने ऋषि–मुनियों का भारत में स्थान व माहेश्वरी परिवारों के रक्षाबंधन की चर्चा की। नवरात्रि पर खंडवा की उषा परवाल ने चारो नवरात्रि का महत्व बताते हुए कहा कि नारी शक्ति की आराधना का पर्व है। बड़वानी की हर्षिता सोमानी ने शरद पूर्णिमा पर चंद्रमा की किरणों की विशेषता मानव जीवन में अनेक बीमारियों को दूर करने में सहायक है, बताया। इन्दौर की नेहा माहेश्वरी ने दीपावली को त्याहोरं की जान बताते हुए कहा कि ये 5 दिवसीय मौसम के साथ जुड़ा हुआ है। रतलाम से ललिता सोमानी ने मकर संक्रांति पर कहा कि तिल गुड़ के मिलने जैसी मिठास हमारे रिश्तों में हो, पुरवाई के साथ पतंग का आनंद एवं सूर्य से ऊर्जा का मिलना होता है। देवास की ऋचा बियाणी ने होली का संबंध गर्मी की दाह से बचने, रंगों का त्योहार है। अंत में शीतला सप्तमी पर इन्दौर ग्रामीण से लता मूंदड़ा ने कहा कि मौसम के परिवर्तन का समय हाई, खानपान का विशेष ध्यान रखना शुरू होता है। अंत में दक्षिण अंचल से साहित्य सहप्रभारी अनुराधा

जाजू ने परिचर्चा की समीक्षा करते हुए कहा कि त्योहारों के पीछे वैज्ञानिक तथ्य की जगह सिर्फ तर्कसंगत बात करें, त्योहारों को आज अपनी सहूलियत से मनाये जाते हैं। बच्चों को बचपन से ही तैयारी में छोटे काम कराएं तो वो उत्सुकता से आनंदित होंगे। आवश्यकता है त्योहार पर्यावरण, पशु-पक्षी, सूरज मानवीय आधारित हो। कृष्ण भगवान ने भी इंद्र की पूजा के बजाय प्रकृति पूजन का महत्व बताया। वन रहेंगे तो होगी बारिश, सूर्य नमस्कार से सकारात्मक सोच बढ़ती है।

कार्यक्रम संचालन-सचिव उषा सोडानी एवं समिति संयोजिका पद्मा सोडानी ने किया। आभार ज्ञापन मीनाक्षी नवाल ने किया।

अध्यक्ष वीणा सोमानी

मंत्री उषा सोडानी

इन्दौर जिला माहेश्वरी महिला संगठन

त्रिदिवसीय लाइफ स्टाइल मास्टर क्लास सम्पन्न

See good, Eat good, Listen good

इन्दौर जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय लाइफ स्टाइल मास्टर क्लास के प्रथम दिवस पर श्रीमती विनी राठी गुप्ता द्वारा हेल्थ व अच्छे खाने को कैसे प्रजेन्ट करें जिसमें देखने वालों को खुशी मिले। उन्होंने अलग-अलग तरीके से भोजन को परोसने व स्टाइलिश प्लेटिंग करना सिखाया। उन्होंने

अपनी कार्यशाला में बताया कि कैसे भारतीय पारम्परिक भोजन को अपनी सोच व समझ से नये रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

सुप्रसिद्ध डॉ. मानसी पाटिल ने ईटवेल फिलवेल हेल्दी वे टू वेजिटेरियन विषय पर अपने सारगर्भित व्यक्तव्य में बच्चे, युवा पीढ़ी, माताएं व वरिष्ठजन सभी के लिए अनेक उपयोगी बाते बताई। विशेषकर वेजिटेरियन व वीगन्स जिसमें दूध, शहद, डेरी प्रोडेक्ट भी शामिल है। उन्होंने यह भ्रांति दूर की, वेजिटेरियन में न्यूट्रीशियन की कमी रहती है। अतः प्रोटिन, विटामिन, बी-12, विटामिन डी की कमी की पूर्ति कैसे कर सकते हैं।

तीसरे दिवस सुप्रसिद्ध चार्टर्ड अकाउंटेंट व सुप्रसिद्ध कोर्ट अधिवक्ता श्री संजय झंवर रायपुर ने सकारात्मक पारिवारिक माहौल बनाने में महिलाओं के संवाद की भूमिका पर विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा महिलाएं यदि पॉजिटिव हैं, तो पूरे घर का माहौल सुखद होगा। नारी की ड्यूटी के बीच कभी इमोशन नहीं आते। अतः वे पुरुषों से ज्यादा स्ट्रांग होती है। कोरोना कालमें सभी चीजें टेक्निकल फार्म पर आ गई व इसे महिलाओं ने बहुत जल्दी अपना भी लिया। महिलाएं वातावरण के अनुसार पुरुषों से जल्दी बदलती है, महिला बजट में चलने में भी पुरुषों से अधिक सफल रही है। महिला की उपयोगिता आज से 15 वर्षों बाद समझ आएगी जब इसकी संख्या कम होगी। बस अब महिलाओं को अपनी क्षमता को जानने का समय है, न की अधिकारों को जानने का। शिक्षा नीति ऐसी हो जो सीखे हुए को प्रेक्टिकल में बदलना, शारीरिक क्षमता व भावनात्मक क्षमता बढ़ाए जो नई शिक्षा नीति में शामिल है। साथ ही सुझाव दिया कि महिलाओं की संवाद निपुणता पर कार्यशाला अवश्य आयोजित करे। हमें यह सिखाना होगा कि समझौते की टेबल चौकोर नहीं गोल हो जहां दोनों पक्ष आमने-सामने नहीं बराबरी में हो तो सकारात्मक बात होगी।

अध्यक्ष श्रीमती सुमन सारडा ने स्वागत उद्‌बोधन दिया व बताया कि संगठन निरन्तर समाज व संगठन के हितार्थ सांस्कृतिक, सामाजिक, प्रेरक, रोचक कार्यक्रम नवीन टेक्नोलाजी का उपयोग करते हुए करती रही है। कार्यक्रम का संचालन सचिव श्रीमती नम्रता राठी ने किया। संयोजक श्रीमती उर्मिला सारड़ा ने आभार माना। समन्वयक श्रीमती माधुरी किरण लखोटिया, श्रीमती पलक मंत्री ने सभी अतिथियों का परिचय दिया।

मुख्य अतिथि अ.भा. माहेश्वरी महासभा के सभापति श्याम सोनी ने सभी को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जिला संगठन निरन्तर उपयोगी कार्य कर रहा है। आगे भी महासभा द्वारा बनाई गई मोबाइल एप व सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण के डाटा का उपयोग करते हुए कार्य करे। रा.पू.अ. सौ. गीता मून्दड़ा ने सकारात्मक सोच की प्रेरक बातें बताईं। चोखी रसोई रो स्वाद, बेकिंग के साथ पाक कार्यशाला का आयोजन भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षिका सौ. तरुणा बिड़ला ने बर्फी, जलेबी के साथ रसमलाई, केक व मफिन्स बनाना सिखाये।

लॉकडाउन विवाह

देवशयनी एकादशी के साथ ही देव शयन हो गया और फिलहाल शादियों का वैकल्पिक मौसम भी चला गया है। विवाह मौसम वो वैकल्पिक कह सकते हैं, क्योंकि कोरोना काल में हुई शादियां अत्यंत ही असमंजस की स्थिति में हुई। विवाह के लिए परिस्थितियां अत्यंत भिन्न रहीं, जैसे ही देश में लॉकडाउन की घोषणा की गई, शादी वाले परिवार चिंताग्रस्त हो गए। सारी तैयारियां धरी रह गई। ना बैंड, बाजे ना घोड़ी, ना बारात। न्यूनतम सदस्यों के बीच दूल्हा-दुल्हन की वैवाहिक रस्में निभाई गई। अत्यंत ही सादगीपूर्ण माहौल में विवाह सम्पन्न हुए। ना कोई दिखावा न सजावट। चमकीले झूमर, रंग-बिरंगी रोशनी, आतिशबाजी आदि पर धन प्रदर्शन के लिए कोई जगहनहीं। ऑफलाइन शादी व ऑनलाइन शुभकामनाएं। एक नई प्रथा, नई परम्परा का जन्म। मेहमान भी वही और मेजबान भी, ऐसे में स्वागत, सत्कार के लिए ज्यादा मान-मनुहार व औपचारिकताओं की आवश्यकता भी नहीं पड़ी। न खाने की बर्बादी न पैसे की और दुनिया दिखावे की चिंता से दूर दो परिवार एक नवबंधन में बंध गए।

कभी-कभी परम्पराओं की आड़ में कुछ ऐसे काम हो जाते हैं, जो परिवार व समुदाय के लिए हितकर नहीं है। कहीं-कहीं तो वर-वधु ने तेज बुखार में भी फेरे ले लिए, किसी को उसका पता भी नहीं चला और एक की मौत से उसको कोरोना पॉजिटिव होने की पुष्टि हुई। ऐसी मूर्खता स्वजनों के लिए जानलेवा हो सकती है। यह हमारे समाज का एक नकारात्मक पहलू है, जो सोचनीय व विचारणीय है। यहां पर प्राथमिकता विवाह था या उपचार? कहीं-कहीं अधिकतम से भी अधिकतम लोगों को आमंत्रण देकर संक्रमण को भी आमंत्रित किया गया और इसके परिणाम भी दुखद ही रहे।

मगर लॉकडाउन खुलने के बाद कई परिवारों ने बहुत ही धैर्य और शांति से शादियां सम्पन्न करवाईं, वह अनुकरणीय है। दिखावे की दौड़ से परे ये शादियां समाज के लिए एक मिसाल बन गई है। कोरोना काल की शादियां हमें सिखाती हैं सादगी व मितव्ययिता, जो कि हमारी भारतीय परंपरा के लिए एक सुखद शुरुआत हो सकती है। बची धनराशि का उपयोग जनकल्याण के लिए करके हजारों लोगों का आशीष व दुआएं ली जा सकती हैं। चातुर्मास के पश्चात् देवउठनी एकादशी से वैवाहिक कार्यक्रम पुनः शुरू होंगे, तब कदाचित परिस्थितियां अनुकूल होने की आशा है। ऐसी परम्परा को हम सभी निभाते रहें, क्योंकि यह परम्परा समाज में एक नया आयाम प्रस्तुत करेगी, जो भिन्न-भिन्न वर्गों के लोगों को समतलीकरण प्रदान करेगी और धन के व्यर्थ प्रदर्शन की प्रतिस्पर्धा से भी मुक्त करेगी।

पल्लवी दरक न्याती, कोटा

अ.भा. महिला सेवा ट्रस्ट की साधारण सभा सम्पन्न

अ.भा. महिला सेवा ट्रस्ट की 13वीं साधारण सभा 5 अक्टूबर 2020 सोमवार को जूम प्रांगण में हुई। सभा में 202 सदस्यों की उपस्थिति रही।

महेश वन्दना व दीप प्रज्वलन के पश्चात अध्यक्ष श्रीमती रत्नीदेवी काबरा ने बताया कि इस बार प्रत्येक प्रदेश में ट्रस्ट प्रतिनिधियों की नियुक्ति की गई है, इससे कार्य विस्तार होगा। प्रत्येक प्रदेश में महिलाओं को कुटीर उद्योग खोलने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। मुख्य अतिथि आदित्य बिड़ला व्यापार सहयोग केन्द्र के महासचिव एवं अ.भा. माहेश्वरी महासभा के राष्ट्रीय पूर्व महामंत्री श्री कस्तूरचंदजी बाहेती ने ट्रस्ट की कार्य विधि की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज महिलाएं उद्योग व्यवसाय में भी कुशलता पूर्वक आगे बढ़ रही है। व्यवसाय के नये क्षेत्र भी विकसित हो रहे हैं। आदित्य बिड़ला व्यापार सहयोग केन्द्र द्वारा अब तक 6300 परिवारों को लगभग 60 करोड़ रु. का अनुदान दिया गया, जिसमें 1500 महिलाएं हैं।

विशेष रूप से पधारी चीफ पेट्रन ऑफ इंडियन एसोसिएशन मस्क्युलर ड्रायटॉफी श्रीमती उर्मिला बाल्दी ने भी अपने सेवा कार्यों की जानकारी दी। इस बार चार लाभार्थियों के अनुभव साझा किये गये, जिससे सभी बहुत प्रभावित हुए।

ट्रस्ट की मंत्री श्रीमती ललिता मालपानी ने दिल्ली मीटिंग की कार्यवाही की पुष्टि कराई, जिसे पढ़कर सुनाई उपाध्यक्ष सौ. राजजी झंवर ने। प्रगति विवरण बताते हुए ललिता ने बताया कि इस वित्तीय वर्ष में सर्वाधिक वृद्धि कॉरपस फण्ड में हुई, जिसका श्रेय अध्यक्ष श्रीमती रत्नीदेवी काबरा को जाता है। यही कारण है कि प्रदेशों में मुम्बई का स्थान प्रथम है तथा अंचलों में दक्षिणांचल प्रथम रहा।

कोषाध्यक्ष श्रीमती सरस्वती रांदड़ ने ऑडिट रिपोर्ट की पुष्टि कराई तथा सन् 2019-2020 का आय-व्यय का ब्योरा दिया। आपने बताया कि इस वर्ष 54 नए सदस्य जुड़े तथा 13 सदस्यों ने श्रेणी परिवर्तन किया। 65 सदस्यों को 10,73,570 सहयोग राशि दी गई। कॉरपस फण्ड में 49,66,000 वृद्धि होकर कुल

2,20,47,178 रुपए हो गया है।

संस्थापक अध्यक्ष श्रीमती गीता मून्दड़ा ने नये बने 67 सदस्यों का सदन से परिचय कराया तथा समन्वय भाग-3 के प्रकाशन की जानकारी दी, जिसमें अब तक बने सभी सदस्यों का फोटो व मोबाइल नंबर दिए जाएंगे। कॉरपस फण्ड का लक्ष्य 2.50 करोड़ रुपए रखा गया है।

आगामी सत्र के लिए नई टीम की घोषणा संस्थापक न्यासी श्रीमती लताजी लाहोटी ने की जो इस प्रकार है-

अध्यक्ष-श्रीमती रत्नीदेवी काबरा, मुम्बई
कार्याध्यक्ष-श्रीमती गीता मून्दड़ा, इन्दौर
उपाध्यक्ष-श्रीमती राज झंवर, कोलकाता
मंत्री-श्रीमती ललिता मालपानी, इन्दौर
कोषाध्यक्ष-श्रीमती प्रकाश मून्दड़ा, बैंगलोर
संयुक्त मंत्री-श्रीमती आशा माहेश्वरी, नागपुर
पदेन-श्रीमती आशा माहेश्वरी कोटा
पदेन-श्रीमती मंजू बांगड़, इन्दौर

प्रबन्ध समिति के सदस्य-श्रीमती बिमला साबू, सूरत, श्रीमती सरस्वती रांदड़, चित्तौड़गढ़, मंगल मानधनी, जालना, सूरज बाहेती, चेन्नई, आशा लढ़ा, फरीदाबाद, विनीता बियाणी दिल्ली, अरुणा लाहोटी, पुणे, प्रेमा टावरी, रायपुर, सुमन कोठारी, मुम्बई, सुनीता लढ़ा, दिल्ली, आभाबेली, केकड़ी, संध्या गांधी, सतना, प्रीति काबरा, इन्दौर, आशा फोफलिया, जोधपुर, आभार माना संयुक्त सचिव श्रीमती मंगला मानधनी ने। राष्ट्र गान के साथ सभा समाप्त हुई।

-ललिता मालपानी, मंत्री

कार्यसमिति मीटिंग के अंतर्गत आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की रिपोर्ट

2 सितंबर से 16 सितंबर 2020 को ूा पर संपन्न हुई कार्यसमिति मीटिंग में 15 सितंबर को पर्व एवं सांस्कृतिक समिति द्वारा टैलेंट उत्सव–2 सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत

1–मेरे देश की धरती

2–अनेकता में एकता

3–गुनगुना रही है सखियां

4–कृष्ण तेरे रूप अनेक

5–रिश्तो की खट्टी मीठी बात

6–ऊर्जावान नारी

7–एक दूजे के लिए टॉपिक पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष शोभा जी सादानी थी राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा जी माहेश्वरी, महामंत्री मंजू जी बांगड़, कोषाध्यक्ष ज्योति जी राठी, संगठन मंत्री शेला जी क लंत्री, कार्यालय मंत्री मधु जी बाहेती एवं मां रत्नीदेवी और निवर्तमान तथा पूर्व अध्यक्षों सहित हमारे संगठन के सभी अनमोल रत्न का राष्ट्रीय प्रभारी एवं सभी आंचलिक सह प्रभारी द्वारा एक अनूठे अंदाज में स्वागत किया गया जिसके अंतर्गत उन्हीं का उन्हीं से परिचय करवाया गया एवं सभी पदाधिकारियों का गाड़ी के पार्ट्स के आधार पर उनके कार्यों का तुलनात्मक वर्णन तथा कार्यक्रम की थीम एवं इसके अंतर्गत समावेश कविताओं को राष्ट्रीय प्रभारी पुष्पा सोमानी ने स्वयं अपनी सोच के आधार पर तैयार किया।

सभी अंचल से अपने–अपने प्रदेशों द्वारा दिए गए टॉपिक्स पर कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण वीडियो के माध्यम से मंगवाया गया।

इस तरह कुल 27 प्रदेशों द्वारा प्रस्तुति आई और कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। सभी प्रदेश संयोजिका ओ ने कार्यक्रम के लिए एक कड़ी के रूप में कार्य किया।

क्योंकि कार्यक्रम का माध्यम डिजिटल टेक्नोलॉजी थी अतः इस कार्यक्रम को अपनी सूज भुज ंिशलहपेश्रेसू से सजाया सजाया पूर्वांचल की सह प्रभारी निशा जी लड्ढा ने। निशा जी द्वारा स्तेमाल की गई टेक्नोलॉजी द्वारा कार्यक्रम में चार चांद लग गए।

कार्यक्रम के समापन में धन्यवाद भी एक नए अंदाज में राष्ट्रीय प्रभारी पुष्पा जी, सभी आंचलिक से प्रभारी–निशा जी, चंदा जी, सुनीता जी, प्रमिला जी एवं मनीषा जी द्वारा poem के माध्यम से दिया गया। उसके पश्चात समिति प्रभारी प्रमुख श्रीमती मंजू जी कोठारी/ पूर्वांचल उपाध्यक्ष द्वारा सभी का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया गया।

(इस कार्यक्रम की सराहना सहित 1800 messages chat box द्वारा प्राप्त हुए। सारे वीडियो यूट्यूब के माध्यम से प्रसारित भी किए गए हैं

पुष्पा सोमानी
राष्ट्रीय प्रभारी (पर्व एवं सांस्कृतिक समिति)

वह दया, करुणा, ममता और प्रेम की पवित्र मूर्ति है और समय पड़ने पर प्रचण्डचण्डी भी। नारी मनुष्य के जीवन की जन्मदात्री है।

हमारे गौरव

स्वाति जाजू रावतसर राजकीय सेवा में चयनित

रावतसर (हनुमानगढ़) निवासी श्रीमती कृष्णा देवी जाजू-स्व. श्री तेजमाल जाजू की सुपौत्री व श्री रमेश कुमार जाजू व श्रीमती उषा जाजू की पुत्री स्वाति जाजू ने राजकीय सेवा में चयनित होकर परिवार व समाज के गौरव में श्रीवृद्धि की। उन्हें सीकर जिले के फतेहपुर ब्लॉक के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गोडिया में कनिष्ठ सहायक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। कपिल करवा ने बताया कि उनकी नियुक्ति पर बुआ-फूफाजी, श्रीमती सोना व श्री सतीश पेडीवाल, चाचा श्री विनोद जाजू, भाई-बहन शुभम व निकिता व परिवारजनों ने खुशी जताई।

रजत करवा पीलीबंगा बैंक सेवा में चयनित

पीलीबंगा (हनुमानगढ़) निवासी स्व. श्री द्वारकाप्रसाद करवा के सुपौत्र व श्री राजकुमार करवा के पुत्र रजत करवा का आईबीपीएस द्वारा आयोजित परीक्षा में कार्पोरेशन बैंक ऑफ इंडिया में क्लर्क पद पर चयनित होकर परिवार व समाज के गौरव में श्रीवृद्धि की।

रवि होलानी पीलीबंगां बने चार्टेड इंजीनियर

पीलीबंगा (हनुमानगढ़) निवासी जिला माहेश्वरी सभा के पूर्व उपाध्यक्ष दीवानचंद माहेश्वरी व रत्नीदेवी काबरा के सुपुत्र रवि माहेश्वरी को विश्व के सबसे पुराने प्रोफेशनल संस्तान इंस्ट्रिट्यूशन ऑफ इंजीनियर इंडिया द्वारा चार्टेड इंजीनियर की उपाधि प्रदान की गई। वे वर्तमान में एसोसिएट मेंबर इंस्टीट्यूशंस ऑफ वेल्यूअर के सदस्य है व भूमि मूल्यांकन, संपत्ति मूल्यांकन का कार्य कर रहे हैं। रवि को यह उपाधि सिविल अभियांत्रिकी क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए शोध एवं अनुभव के आधार पर प्रदान की गई है।

बिना बैंड-बाजा व बारात के गौरव की हमसफर बनी डॉली

संगरिया (हनुमानगढ़) लॉकडाउन के चलते विवाह के रीति-रिवाज व रस्में बदल रही है। ऐसा ही कुछ यहां के वार्ड 14 निवासी माहेश्वरी सभा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य व राजस्थान पत्रिका संवाददाता श्री कृष्ण करवा व श्रीमती राजकुमारी करवा के छोटे बेटे साफ्टवेयर इंजीनियर गौरव करवा की शादी में देखने को मिला। जिसमें माता-पिता व बहन सहित परिवार के सदस्य शामिल नहीं हो सके व प्रशासन की अनुमति से केवल उनके भाई व भाभी ही विवाह के साक्षी बने। संगरिया से विवाह के लिए गौरव श्रीगंगानगर जिले के रायसिंह नगर कस्बे में स्थित पेड़ीवाल परिवार के निवास पर पहुंचे। वहां विवाह की सभी रस्मे सोशल डिस्टेंसिंग को ध्यान में रखते हुए पूर्ण की गई। रायसिंहनगर निवासी श्री द्वारकाप्रसाद पेड़ीवाल की पौत्री व प्रदीप पेड़ीवाल की पुत्री डॉली से उनकी शादी के सभी कार्यक्रम मैरिज पैलेस के स्थान पर घर पर ही पूर्ण किए गए। इस अवसर पर ना बैंड-बाजा की धुन थी ना ही घोड़ी पर नाचते रिश्तेदार बस चंद परिजनों की उपस्थिति में यह विवाह सम्पन्न हुआ। लॉकडाउन के चलते दोनों परिवारों ने कार्यक्रम को सादगी पूर्ण करने का निर्णय किया।

गर्वित झंवर बरेली का सुयश

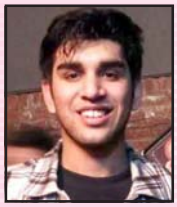

बरेली (उत्तरप्रदेश) निवासी श्रीमती दुर्गादेवी झंवर–स्व. श्री नंदलाल जंवर के सुपौत्र व फरीदाबाद निवासी श्रीमती चांद सोमानी–स्व. श्री आनंद प्रसाद के दोहिते गर्वित झंवर (पुत्र श्री संजय झंवर–श्रीमती मीना झंवर) ने सीबीएसई द्वारा आयोजित 12वीं बोर्ड परीक्षा में 96 प्रतिशत अंक प्राप्त कर परिवार व समाज के गौरव में श्रीवृद्धि की। श्रीगंगानगर माहेश्वरी सेवा सदन के पूर्व अध्यक्ष श्री किशनदास करवा ने गर्वित के परिणाम पर खुसी जताई।

चिराग भट्टड़ जयपुर का सुयश

हनुमानगढ़ टाउन निवासी श्री दीनदयाल व श्रीमती सुनीतादेवी भट्टड़ के सुपौत्र व जयपुर के झोटवाड़ा क्षेत्र निवासी श्री पंकज भट्टड़ व श्रीमती ज्योति भट्टड़ के सुपुत्र चिराग भट्टर ने सीबीएसई द्वारा आयोजित सैकण्डरी बोर्ड परीक्षा में 97.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर परिवार व समाज के गौरव में श्रीवृद्धि की। कपिल करवा ने बताया कि इस उपलब्धि पर श्री प्रभुदयाल भट्टड़ व श्रीमती पुष्पा भट्टड़ सहित परिजनों ने खुशी जताई।

सीए निर्मल कुमार सारड़ा बने अध्यक्ष

देशनोक (जिला बीकानेर) निवासी श्रीमती काशीदेवी सारड़ा–स्व. श्री प्रयागदास सारड़ा के सुपौत्र श्री किशनगोपाल सारड़ा व श्रीमती बिमलादेवी के सुपुत्र सीए निर्मल कुमार सारड़ा को इंडियन इंस्ट्रिटूयट ऑफ चार्टेड अकाउंटेंट की बीकानेर ब्रांच का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। सीए निर्मल कुमार सारड़ा इससे पूर्व ब्रांच के उपाध्यक्ष रह चुके हैं। कपिल करवा ने बताया कि बीकानेर के गंगाशहर रोड स्थित एन सारा एंड एसोसिएट के संचालक निर्मल सारथी फाउंडेशन सहित अनेक माध्यमों से सेवा कार्यों में भी जुटे हुए हैं। वे संगरिया निवासी महावीर प्रसाद करवा व उत्तरी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के कार्यकारिणी सदस्य कृष्ण कुमार करवा के भानजे हैं। उनके अध्यक्ष बनने पर भाई सीए अनिल कुमार सारड़ा व परिजनों ने खुशी जताई।

हिंदी है शान हमारी

हिंदी ही तो शान हमारी है हिंदी ही पहचान हमारी है
जन्मभूमि जिसकी ये प्यार हिन्दुस्तान है,
जिसकी माटी ने दिया इसको अभयदान है,
हिंदी से ही सम्मान हमारा है, विश्व में ऊंचा स्थान हमारा है
सूर थे एक प्रेम कवि इक मीरा विरहणी आयी,
कबीर के दर्शन ने जीवन की अलख जगाई,
रसखान जायसी सन्त कवि आये,
तुलसी के राम जन जन में छाये,
भारत के इंदु ने था इसको ही अपनाया
लोक को उपदेश देकर, विदेशियों को धमकाया,
द्विवेदी ने विस्तार इसका किया खड़ी बोली नाम इसे दे दिया,
महादेवी, पन्त प्रसाद ने इसे सुकोमल बनाया
निराला के काव्य इसे शीर्ष पर पहुंचाया
अज्ञेय, दिनकर, धूमिल ने की चढ़ाई है हिंदी की पताका
विश्व में फहराई है
प्रेमचन्द ने बहाई इसकी एक नवधारा
घर–घरतक पहुँचाया इसे बनाकर युगधारा,
माधुरी हंस ने लड़ी इक लड़ाई है विदेशी सत्ता देश से भगाई है,
दुनिया के देशों ने भी जिसको अपनाया
अपने ही देश में उसका अस्तित्व न रह पाया,
क्योंकि ऐसी दशा, आज हिंदी की आई है
अपने ही देश में हुई ये पराई है,
हम सबको मिलकर ही इसको उठाना है
भाषा की लड़ाई में हिंदी को जितना है,
क्योंकि हिंदी स ही पहचान हमारी है
हिंदी ही तो जान हमारी है।

–कुंती मूंदड़ा, अध्यक्ष पूर्वी राजस्थान

पड पौत्र एवं पड पौत्री के आगमन पर अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के समस्त पदाधिकारियों की ओर से समस्त साबू परिवार को बहुत–बहुत बधाई

अ.भा.माहेशवरी महिला संगठन की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती बिमला देवी साबू व श्री रामअवतार जी साबू – सुरत, अपनी चौथी पीढ़ी अपने पड़ पौत्र अद्वैत साबू व पड़ पौत्री कृष्णवी साबू के साथ ।

माहेश्वरी महिला संगठन

पत्रिका पंजीयन क्र./2001/6505 दिनांक 29/04/2002

पोस्ट पंजीयन क्र. 536

पोस्ट दिनांक 15 अक्टूबर 2020
प्रेषक :
माहेश्वरी महिला
22/15, यशवंत निवास रोड
इन्दौर (म.प्र.)

प्रति,

माहेश्वरी महिला समिति की ओर से चन्द्रा स्टेशनरी एण्ड प्रिंटिंग वर्क्स से मुद्रित, श्रीमती मनोरमा लड्ढा द्वारा इन्दौर से प्रकाशित एवं संपादित